पयस्विनी

पयस्विनी

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

PAYASVINEE

A collection of papers-essays and criticism in Maithili by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-05-6
दाम: 300/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2021)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

अनुक्रम

अवतारवाद

जीव आ ईश्वर- जे कियो शरीर धारण करैत आ छोड़ैत, जन्म लैत आ मरैत, ओ संसारी जीव होइत अछि। मुदा जे सर्वत्र व्याप्त, सर्वशक्तिमान, सर्वरक्षक गुणसँ मण्डित होइत ओ ईश्वर होइत। शास्त्रमे जे लक्षण ईश्वरक देल गेल अछि ओइ अनुसार ओ सबहक प्रतिपालक सेहो होइत छैथ। हुनक सोभाव क्रुर भाइए ने सकैत छैन। किएक तँ ओ महादयालु होइत छैथ। संगे ओ सर्वत्र प्याप्त छैथ तँए केतौ अबै-जाइक जरूरते केना हेतैन।

प्रश्न उठैत अछि जे ओ माछ आ काछुक रूप किए धारण केलैन? ऐ रूपमे एबाक की प्रयोजन भेलैन। मत्स्यावतार लऽ कऽ किए शंखासुरक हत्या केलैन? जे स्वयं सर्वपालक सर्वव्यापी आ महादयालु छैथ। हुनका किए केकरोसँ द्वेष भेलैन? किए ओ सुअर बनि हिरण्याक्षसँ पृथ्वी छीन अपना मुँहमे रखि लेलैन। की पृथ्वी धिया-पुता खेलैक गेन्द सदृश अछि जे ओ मुँहमे रखि इतर पृथ्वीपर ठाढ़ भऽ हुनकासँ लड़ैत रहला आ अन्तमे हत्या कऽ देलखिन। एतबे नहि, नरसिंह अवतार लऽ लोहाक खम्भा फाड़ि हिरण्यकश्यपुकेँ पेट फाड़ि हत्या केलैन। की ईश्वर सभसँ पैघ हत्यारा छैथ? वामन रूप धारण कऽ राजा बलिसँ तीन डेग जमीन मांगि सौंसे राज्य हड़ैप लेलैन, की दुनियाँमे सभसँ पैघ धोखावाज वएह छला? एहेन धोखावाजक आराधना केलासँ कहेन फल भेटत अपनो विचारि सकै छी। भीख मांगब मायावी, असमर्थ जीबक (मनुक्खक) काज छी नहि कि

कर्मठ, ऐश्वर्यवान पुरुषक। ऐ रूपे देखलापर बुझि पड़ैत जे मनक माया, कल्पना आओर अज्ञानता सभकेँ भरमा देने अछि। तेतबे नहि, परशुराम बनि हैहय-वंशीय क्षत्रिएकेँ एक्कैस बेर सामूहिक हत्या केलैन। जहन एकबेर वंश नाश कऽ देलखिन तहन दोहरा कऽ कतए-सँ फेर क्षत्रिए आबि गेला जे दोहरबैत, तेहरबैत एक्कैस बेर पहुँच गेला? अनन्त विश्व- ब्रह्माण्डक रचैता ईश्वर दशरथक बेटा राम बनि सीतासँ बिआहो कऽ लेलैन आ हरण भेलापर गाछो-वृक्षसँ कानि-कानि पता पुछलखिन। बिना ओर-छोड़क समुद्रमे पाथरक पुलो बनबा देलखिन। इत्यादि-इत्यादि, अनेको प्रश्न विचारणीय अछि। हम सभ एक्कैसम शताब्दीक समर्थ चेतना छी नहि कि सोलहम शताब्दीक बाल चेतना।

जड़-चेतनात्मक विश्वसन्ताक वास्तविक बोध नहि रहने पहिने किछु गोटे जगतकर्त्ता ईश्वरक जाल ठाढ़ केलैन आ पछाइत अपन स्वार्थ सिद्ध करए लेल नाना अवतारक कल्पना केलैन। छल करब, जोर-जबरदस्ती करब, यती-सतीक चरित्र भ्रष्ट करब, की ईश्वरक काज छी? ई सभ जाल-फरेबी मनुक्खक छी। एतबे नहि ईश्वरक नाओंपर मनुक्खक खून सेहो बहौल गेल अछि। सेहो खून सिरिफ मानवेत्तर जीवेक नहि बल्कि मूक, मासूम मनुक्खक सेहो। धनबल, शरीरबल, विद्याबलादिसँ सेहो सदैव गरीब आदमी अत्याचारीक शिकार बनैत रहल अछि। जे अखनो आँखिक सोझमे दिन राति भऽ रहल अछि।

श्रीमद्भागवतक स्कन्ध-1, अध्याय-3, श्लोक-5 सँ लऽ कऽ 25म श्लोक धरि अवतारवादक व्याख्या अछि। जइमे निम्न प्रकारक चर्चा अछि- (1) सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार-ब्रह्मचर्य पालनक लेल, (2) सुअर-पृथ्वीकेँ रसातलसँ आनवाक लेल, (3) नारद-उपदेशकक लेल, (4) नर-नारायण-तपक लेल, (5) कपिल-सांख्य शास्त्रक उपदेश देबा लेल, (6) दत्तात्रेय-उपदेश देबा लेल, (7) यज्ञ रूचिप्रजापतिक पत्नी आकूतिसँ उत्पन्न भेल स्वायम्भुक मन्वन्तरक रक्षाक लेल, (8) ऋृषभदेव-

परमहंसक आदर्श देखेबा लेल, (9) पृथु-पृथ्वीसँ औषधि दोहनक लेल, (10) मत्स्य-डुमल पृथ्वीकेँ निकालबाक लेल जे शंखासुर वेदकेँ चोरा नेने रहए। जेकरा मारि कऽ मत्स्य वेदक उद्धार केलक, (11) कच्छप-समुद्र मथैमे सहयोगक लेल, (12) धन्वन्तरि-समुद्रसँ अमृतक घैल लऽ प्रकट भेला, (13) मोहिनी-देवता-दानवक झगड़ा फड़िछबैक लेल, (14) नृसिंह-हिरण्यकश्यपुकेँ मारए लेल, (15) वामन-बलिकेँ ठकैक लेल, (16) परशुराम-क्षत्रिएकेँ सामूहिक हत्याक लेल, (17) व्यास-वेदक विभाजन करए लेल, (18) श्रीराम-रावणकेँ मारए लेल, (19-20) बलराम-कृष्ण-पृथ्वीक भार उतारए लेल, (21-22) कल्कि-पृथ्वीक भार उतारए लेल। ऊपर वर्णित बाइस अवतार संग-संग आन-आन शास्त्रमे हंस आ हयग्रीवक चर्चा सेहो अछि। सनकादिकेँ उत्तर देबा लेल हंस आ मधुकैटभक हत्याक लेल हयग्रीवक चर्च अछि।

सभसँ पहिने अवतारवादक भावना 'शतपथ ब्राह्मण'मे भेटैत अछि। जेना कि एच.याकोवी- 'इनकारनेशन, इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड इथिक्स' भाग 71मे लिखने छैथ। संग-संग एम. मोनिएर विलियम्स- 'द. विजडम पृष्ट 381मे सेहो लिखने छैथ। एच.राय चौधरी- अर्लि हिस्ट्री ऑफ बैष्णव सेक्ट'मे पृष्ट 96मे सेहो लिखने छैथ।

शुरूमे विष्णुक अपेक्षा प्रजापतिकेँ विशेष महत्व छेलैन। 'शतपथ ब्राह्मणक अनुसार प्रजापतिए मत्स्य (1/8/1/1) कूर्म (कौछु) (7/5/1/5) आओर वराहक (14/1/2/11) अवतार लेलैन। प्रजापतिकेँ बराह रूपक कथाक चर्च 'तैत्तीरीय संहिता' (7/1/5/1) तैत्तरीय ब्राह्मण (1/1/3/6) तैत्तरीय आरण्यक (10/1/8) आओर काठक संहिता (8/1)मे प्रारम्भिक रूपमे विद्यमान अछि। जेकर चर्च डॉ. कामिल बुल्के 'रामकथा' अनुच्छेद 140मे केने छैथ।

ऐ रूपे देखै छी जे मत्स्य, कूर्म वराहक अवतार शुरूमे प्रजापतिसँ छेलैन। किन्तु पछाइत आबि विष्णुक महत्व बढ़लापर तीनूक सम्बन्ध

विष्णुसँ भऽ गेलैन। महाभारतक नारायणी उपाख्यान (12/326/72) आ (12/337) आ हरिवंश पुराण (4/41)मे बराह आ विष्णुक सम्बन्ध मानि लेल गेल। आगू आबि तीनूक नाओंसँ एक एकटा महापुराण सेहो लिखल गेल। जइमे तीनूक सम्बन्ध विष्णुसँ कए देल गेल अछि।

वामनावतार आ नृसिंह अवतार शुरूहेसँ विष्णुसँ सम्बन्धित अछि। वामनावतारक चर्चा 'तैत्तीरीय संहिता' (2/2/3/1) शतपथ व्राह्मण (1/2/5/5) तैत्तीरीय व्राह्मण (1/7/17) आओर 'ऐतरेय व्राह्मण' (6/3/7)मे भेल अछि। नारायणी उपाख्यान (12/326/73) आओर हरिवंशपुराण (1/41)मे सेहो उल्लेख अछि। विष्णु पुराणमे (1/16) 'नृसिंहक कथाक वर्णन सेहो अछि।

शुरूमे परशुरामक अवतार विषयक कथाक चर्च नहि भेटल अछि। मुदा नारायणी उपाख्यान (12/326/77) हरिवंश पुराण (1/41/112/120) आ विष्णु पुराण (1/9/143)मे विष्णुक अवतार मानल गेल अछि।

ऐ रूपे प्राचीन साहित्यमे अवतारवादक चर्चा होइतो विशेष पूजाक चलैन नहि भेल आ ने विष्णुक प्रधानते भेल रहए। कृष्णावतारक संग-अवतारवादक विकासमे महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रारम्भ भेल। ओइ समयसँ अवतारवाद भक्तिभावसँ जुड़ि फुलैत-फड़ैत आजुक रूप धेने अछि।

वासुदेव कृष्ण भागवतक इष्टदेव छला। शुरूमे विष्णुक संग हुनक सम्बन्ध नहि छेलैन। हेमचन्द राय चौधरीक अनुसार तेसर शताब्दी ई. पू. वासुदेव कृष्ण आ विष्णुक अभिन्नताक भावना उत्पन्न भेल।

अवतारवादक प्रक्रियामे बौद्धधर्म जुड़ि गेल। बौद्धधर्म आ भागवत सम्प्रदायक भक्तिमार्ग समान रूपसँ व्राह्मण साहित्यक कर्मकांड आ यज्ञ प्रधान धर्मक प्रतिक्रियाक रूपमे उत्पन्न भेल आ विकास केलक। जइ कारणेँ धर्मक क्षेत्रमे व्राह्मणक एकाधिकार ढील भेल। बौद्धधर्मक अधिकाधिक प्रचार-प्रसार देखि भागवत समर्थक अपना दिस आकर्षित

करए लेल भागवतक इष्टदेव वासुदेव कृष्णकेँ विष्णु-नारायणक अवतार मानि लेलैन। 'तैत्तीरीय आरण्यक' (10/1/6)मे वासुदेव आ विष्णुक अभिन्नताक चर्च सभसँ पहिने भेल अछि।

ऐसँ अवतारवादककेँ भरपुर बल भेटल। संग-संग विष्णुक महत्व सेहो बढ़ए लगल। जइसँ अवतारवादक पूर्ण भावना रसे-रसे विष्णु-नारायणमे केन्द्रित हुअए लगल। आ वैदिक साहित्यक आन-आन अवतारक क्रिया-कलाप विष्णुमे आरोपित भऽ गेल।

एक दिस अवतारवाद बढ़ि रहल छल तँ दोसर दिस रामक आदर्श चरित्र जनमानसक बीच प्रबल भऽ रहल छल। रामायणिक संग-संग रामक महत्व सेहो तेजीसँ बढ़ि रहल छल। रामक वीरताक वर्णनमे अलौकिकताक मात्रा सेहो बढ़ए लगल। एक दिस रावण पाप आ दुष्टताक प्रतीक बनि जनमानसक बीच आएल तँ दोसर दिस पुण्य आ सदाचारक प्रतीक राम बनला। जेकर फल भेल जे कृष्णे जकाँ रामो विष्णुक अवतारक श्रेणीमे आबि गेला। भरिसक पहिल शताब्दी ई. पूर्वेसँ राम विष्णुक अवतार मानए जाय लगला। महाभारतक संग-संग वायु, ब्रह्माण्ड, विष्णु, मत्स्य, हरिवंश इत्यादि पुराणमे अवतारक तालिकामे राम सेहो छैथ।

अवतारवादक पहिल कल्पना 'शतपथ ब्राह्मण'मे अछि। जे ईसासँ एक हजार बरख पूर्बक रचना मानल जाइत अछि। शतपथ ब्राह्मणमे कहल गेल अछि जे प्रजापतिए माछ, कछुआ आ सूअरक अवतार धारण केलैन। जे शुद्ध कल्पनाश्रित बुझि पड़ैत अछि।

वामन अवतारक कल्पना 'तैत्तीरीय संहित'मे अछि। हजार बरख पूर्ब एकरो रचना मानल जाइत अछि। ओना, वामन अवतारक कल्पना ऋृग्वेदक प्रथम मण्डलक बाइसम सूक्तक अन्तिम (16/21) छह मंत्रसँ सेहो उद्भुत मानल जाइत अछि।

इदं विष्णुविचिक्रमे त्रेधा निदधे पदम। समूलमस्य पांसुरे।

त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्य: अतो धर्माणि धारयन्। (ऋृग्वेद- 1/12/17-18) टीका रामगोविन्द त्रिवेदी। विष्णु सूर्यक प्रतीक छैथ। हुनक किरण पएर छिऐन। पृथ्वी, अन्तरिक्ष आ दयुलोकमे किरण माने रोशनी पड़ब तीन पएर पड़ब छिऐन। जे प्राय: सभ वैदिक जनै छैथ। मुदा पाछू आबि ऐ सूत्रकेँ कथा गढ़ि विष्णु वामनक कथा बनि गेल अछि। कथा अछि, विष्णु वामन बनि राजा बलिकेँ ठकि कऽ तीन डेग भूमि मांगि सौंसे राज्ये नापि लेलैन। प्रश्न उठैत जे एहेन-एहेन ठककेँ जनमानस केना ईश्वर मानि लेलक? पुराणक अनुसार विष्णु इन्द्रक छोट भाए कहल गेल छैथ। जे अपन जेठ भाय इन्द्रक गद्दी स्थापित करए लेल बलिकेँ धोखा देलैन।

मत्स्य, कच्छम, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम इत्यादि जे कियो अवतारक श्रेणीमे एला, कियो पूजनीय नहि भऽ सकला। अवतारक अन्तिम छोरपर उदित रामे आ कृष्णेटा पूजनीय भेला।

वस्तुत: श्रमणक (बौद्ध-जैन) उत्तारवादक प्रतिक्रियामे अवतारवादक कल्पना भेल। महावीर आ बुद्धदेव महापुरुष छला। (उत्तारक अर्थ-सामान्य जीवकेँ दोसरसँ ऊपर उठब होइत अछि जखन कि अवतारक अर्थ महान सत्ताकेँ ऊपरसँ निच्चाँ उतरब होइत अछि)। अवतारवादक परम्पराक अनुसार परमात्मा उतैर कऽ साधारण मनुक्ख बनि गेला। पहिने कृष्णकेँ अवतार मानल गेलैन। जिनकर पूर्ण विकास गीताक कृष्णवतारमे भेलैन। ताधैर राम अवतारक श्रेणीमे नहि आएल छला। केवल धनुर्धारी वीर मानल जाइत छला। गीताकार कृष्णक मुहसँ रामक सम्बन्धमे कहबौलैन- 'राम: शस्त्रभृतामहम।'

इसाक सौ बरख पूर्ब धरि चारू भाँइ रामकेँ विष्णुक अंशावतारे मानल जाइत छलैन। रामकेँ पूर्ण परब्रह्म ईसाक बाद अध्यात्म रामायणसँ

शुरू भेल। ऐ रूपे अवतारवादक गुंजाइस माने अँटावेश वेदमे नहि पछाइत भेल।

प्रश्न उठैत जे अवतारवाद की छी?

विश्व अनन्त देश आ काल-व्यापी अछि। विश्वक मुख्य दू घटक- जड़ आ चेतन अछि। ओइमे अपन-अपन गुण-धर्म निहित अछि। जइसँ जगतक बेवस्था अनादिकालसँ अवाध गतिए चलि रहल अछि। ऐसँ हटि दोसर ईश्वरक कल्पना तथ्यसँ अलग होएब अछि। कहल गेल अछि जे शंखासुर नामक राक्षस छला। ओ ब्रह्मा ओइठाम पहुँच वेद चोरा कऽ समुद्रमे नुका कऽ रखि लेलक। जेकरा पुन: प्राप्त करए लेल विष्णु मत्स्यावतार धारण कए समुद्रमे शंखासुरकेँ मारि वेद लऽ अनलैन। प्रश्न उठैत अछि- कि ईश्वरक काज हत्या करब छी? जे सर्वज्ञ, दयालु छैथ हुनकर एहने किरदानी हेतैन। ओ तँ अपना सत्प्रेरणासँ केकरो बदलैत छैथ। अहिना हिरण्याक्षक सम्बन्धमे सेहो अछि। हिरण्याक्ष पृथ्वीकेँ चोरा कऽ टट्टीमे नुका रखलक। जेकरा विष्णु सुअरक अवतार लऽ थुथुनसँ पृथ्वीकेँ टट्टीसँ निकालि, हिरण्याक्षकेँ मारि ऊपर अनलैन। जइसँ पृथ्वीक उद्धार भेल। प्रश्न उठैछ- जखन पृथवीयेक चोरी भऽ गेल तँ ओकरा राखल कतए गेल? अपन गुरुत्वाशक्तिसँ पृथ्वी स्वयं धारित अछि।

एहने कथा हिरण्यकश्यपु आ प्रह्लादक सेहो अछि। प्रह्लाद विष्णुक भक्त रहैथ जे हिरण्यकश्यपुकेँ पसिन नहि रहैन। जइसँ बान्हि देलखिन। प्रह्लादक दुख देखि ईश्वर (विष्णु) नर आ नारायणक मिश्रित रूप बना खुट्टा फाड़ि कऽ निकलि हिरण्यकश्यपुकेँ मारलैन। प्रश्न उठैत अछि- एक प्रह्लादक लेल ईश्वर खूँटा फाड़ि निकलला मुदा, चंगेज खाँ, नादिरशाह, मिलाबटखोर, जमाखोर, धूसखोर शोषकक लेल निन्न नहि टुटै छैन?

वामन रूप बनि बलिसँ भीख मंगलैन। भीख मांगब, छल करब मायावी मनुक्खक काज छी नहि कि ईश्वरक!!

जखन परशुराम हैहय क्षत्रिए वंशकेँ सामूहिक हत्या केलैन तँ फेर दोहरा-तेहरा, एते तक कि एक्कैस बेर कऽ केकर हत्या केलैन। जँ एहेन-एहेन हत्यारा ईश्वर होथि तँ अपराधी केकरा कहबै?

अनन्त विश्वव्यापी जगत स्रष्टा ईश्वर (राम) दशरथक बेटा बनि सीतासँ बिआह करए औता। तेतबे नहि हरण भेलापर कानि-कानि गाछ-वृक्ष सभकेँ पता पुछथिन। गाए-चरबए लेल कृष्ण वृन्दावन आबि नारी संग रास करए औता। की यएह लक्षण ईश्वरक वेद कहैत अछि?

विश्वमे मुख्य दू तत्त्व-जड़ आ चेतन अछि। जेकरा पुराकालसँ सांख्य दर्शन प्रकृति आ पुरुष कहैत आएल अछि। जड़ प्रकृतिमे अनेक तत्त्व अछि। जे सभ अनादि-अनन्त अछि। ओइमे अपन-अपन सोभाव सिद्ध गुण-धर्मक क्रिया, ओकर सम्पैत छिऐ। जइसँ सृष्टि निरंतर विद्यामान रहैत अछि। जँ से नहि तँ पूरबा आकि पछबा हवा जे बहैत अछि, ओकरा कियो पूब कि पछिम जा कऽ ठेलैत अछि आकि अपन दवाबक नियमक अनुसार हवा स्वयं चलैत अछि। तहिना बरखो होइत अछि। पानि बरिसैक जे प्राकृतिक नियम छै, अनुकूल भेलापर बरखा होइत अछि। प्रकृति जड़ छी। ओ ई नहि बुझैए जे रौदी, कम बरखा कि बेसी बरखा केकरो नोकसान करत आकि लाभ पहुँचाओत।

एक दिस 1987 इस्वीक पानि (बरखा) मिथिलांचलकेँ दहा देलक तँ दोसर दिस राजस्थान, गुजरात, उड़ीसा इत्यादि राज्यमे रौदी भऽ गेल। की एहने काज सर्वज्ञ, दयालु आ सर्वशक्तिमान ईश्वरक छिऐन?

झरनासँ पानि निकलब, धार बहब कि ईश्वरेक प्रेरणासँ होइत अछि। चान, सुरूज, तरेगन हुनके माने ईश्वरेक कृपासँ चमकैत अछि। फूल वएह फुलबैत छैथ। अजीव-अजीव अन्धविश्वासू कल्पना ठाढ़ कऽ अज्ञानी मनुक्खकेँ अदौसँ चालबाज सभ लुटैत आएल अछि!

जे मनुक्ख ज्ञान अर्जन कऽ पवित्र आचरण बना स्वरूप स्थिति प्राप्त

कऽ लैत, वएह ऐ जीवनकेँ सार्थक बना मुक्तिक अधिकारी बनैत। जनिका लेल अलगसँ केनो कल्पित ईश्वरक प्रयोजन नहि छैन।

बीजकमे कबीर कहै छैथ-

“ज्ञान हीन कर्ताकेँ भरमें, माये जग भरमाया।”

छल करब, बलपूर्वक केकरो धन-इज्जत लुटब, ई सभ संसारी मनुक्खक काज छी नहि कि ईश्वरक। यती, सती-पतिव्रता एवं सत्य बजनिहार आ सत्य बाटपर चलनिहारकेँ पथ-भ्रष्ट करब, पतित बनाएब, की ई सभ विवेकवान मनुक्खक काज छी?

अवतारक सम्बन्धमे कबीर कहने छैथ-

‘दश अवतार ईश्वरी माया, कर्ता कै जिन पूजा। कहै कबीर सुनो हो सन्तो, उपजै खपै सो दूजा।’

अर्थात् दस या चौबीस अवतारक कल्पना ईश्वरीए माया छी। ओइ कल्पित अवतारक पूजा करब, सत्यज्ञानसँ रहित मनुक्खक काज छी। जहिना अवतार तहिना अवतारी माने ईश्वर, दुनू लोकक मनक कल्पना छी। किएक तँ जन्म आ मृत्यु जगतक कर्ताकेँ केना भऽ सकैत अछि।

चौबीस अवतारमे श्रीराम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध इत्यादि ऐतिहासिक महापुरुष छैथ। बाँकी सभ काल्पनिक छी। ओना, अवतार तँ उतरब आ जन्म लेबकेँ कहल जाइत अछि, जे प्राय: कर्मी जीवकेँ होइत अछि।

अवतारवाद मनुक्खमे हीनभावनाक जन्म दैत अछि। जँ से नहि तँ देश आ धर्मपर संकट एलापर अवतारी किएक ने निवारण करैत अछि। जखन विधर्मी सोमनाथक मन्दिर लूटि लेलक तखन पुजेगरी सभ किएक मुँह तकैत रहि गेल। किएक ने ईश्वरकेँ पुकारि बचौलक।

ताधैर मनुक्ख उन्नैत नहि कऽ सकैत अछि जाधैर ओ ई नहि बुझत जे धरतीपर मनुक्ख सभसँ बलशाली अछि। ईश्वर, देवी-देवता, अवतारक कल्पना मनुक्खक ओइ अन्धकार मस्तिष्कमे जन्म लैत अछि जइमे ओ

अपन दुर्बलताकेँ संयोगि अवकाशक सांस लैत अछि।

वस्तुतः आत्मा जखन महात्माक रूपमे विकसित होइत तखन परमात्मा स्वयं बनि जाइत अछि। काम-क्रोध, राग-द्वेष इत्यादि दुर्गुणपर जखन मनुक्ख विजय पाबि जाइत अछि तखन अपने-आपमे ईश्वर, परमात्मा, दैव आ ब्रह्मक रूप देखए लगैत अछि।

श्रीमद्भागवत-

दरिद्रो यस्त्वसन्तुष्टः कृपणो योऽ जितेन्द्रियः।

गुणेष्वसक्तधीरीशो गुणसंगे विपर्ययः /11/19/44

जेकरा चित्तमे असन्तोष अछि वएह दरिद्र छी। जे जितेन्द्रिय नहि अछि वएह कृपण छी। समर्थ, स्वतंत्र आर ईश्वर वएह छैथ जिनकर चित्त-वृत्ति विषय-भोगमे आसक्त नहि छैन। अहीक विपरीत जे विषयमे आसक्त अछि वएह सोलहन्नी पापी छी। ❑

संस्कार आ संस्कार गीत

संस्कार कल्पना छी। हमरा सबहक बीच संस्कारक प्रयोग विभिन्न रूपमे विभिन्न जगहपर होइत अछि। ओना, जइ रूपमे संस्कारक प्रयोग हमरा सबहक बीच होइत अछि ओ मन्द आ कुशाग्र रूपमे सेहो होइत अछि। मुदा विचारणीय प्रश्न अछि जे मन्द तँ किएक? आ कुशाग्र तँ किएक? अखन हम ऐ प्रश्नक उत्तर दिस नहि जा शास्त्रीय प्रयोग दिस बढ़ै छी। गर्भजनित वातावरण जन्य कतिपय अपदार्थकेँ दूर करैले संस्कारक कल्पना कएल गेल अछि। कहल गेल अछि जे ऐसँ शरीर आ मन परिष्कृत होइ छै।

शालीनता आ शिष्टता मनुक्खताक परम सिद्धि अछि आ ओकर प्राप्तिक साधन छिऐ संस्कार-कर्म। दशर्न शास्त्रक अनुसार भोग्य पदार्थक अनुभूतिक छाप छी संस्कार-कर्म। मनुक्खक अव्यक्त मनपर अनुभवक जे छाप पड़ै छै जे समय एलापर ओ प्रकट भऽ जाइत अछि। यएह छाप छिऐ वासना आ यएह कहबैत अछि जन्मान्तक संस्कार। धर्मशास्त्री लोकैन संस्कारकेँ शारीरिक, मानसिक आ बौद्धिक गुण-दोषक प्रक्रियाक रूप ग्रहण केलैन अछि।

विशेआश्वलायन अपन गृहसूत्रमे एगारह तरहक संस्कारक वर्णन केने छैथ, जखन कि याज्ञवल्क्य बारह तरहक। गौतम भिन्न-भिन्न दैवयज्ञकेँ संस्कारमे परिगणित कऽ अड़तालिस संख्या धरि लऽ गेल छैथ। भारत सरकारक 1901 इस्वी जनगणना प्रतिवेदनक अनुसार ओइ समय

हिन्दूमे बारह संस्कार प्रचलित छल। मिथिलामे सोलह तरहक संस्कारक विधान मान्य अछि। यथा- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णबेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास आ अन्त्येष्टि। अखन सिर्फ पाँच तरहक- जन्म, मूड़न, उपनयन, विवाह आ मृत्यु संस्कारक चलैन अछि। मुदा ईहो सभ जातिमे समान नहि अछि। जेना उपनयन सिर्फ समाजक अगुआएल जातिक बीच अछि। मूड़नोक रूप-रेखा एक रंगक नहि अछि। तँए जँ सभकेँ नजैरमे राखि देखलापर मात्र तीनियेटा संस्कार- जन्म, विवाह आ मृत्यु देखाइत अछि।

संस्कारक कल्पना आ ओकर चयन वा नामकरणक पाछाँ सामाजिक कारण सेहो प्रमुख रहल। स्पष्ट अछि जे संस्कारक शासन जीवन पद्धतिकेँ खास ढंगसँ नियंत्रित आ आदर्शोन्मुखी बनेबाक लेल देल गेल। शुद्धताक अपेक्षा सुनियोजित जीवन-बेवस्थाक आवश्यकता अथवा स्थितिक उपस्थिति दिस संकेत करैत अछि। कहैक तात्पर्य जे आर्य-अनार्यक घालमेलसँ उपजल सामाजिक स्थितिमे संस्कारक माध्यमसँ अपन अस्मिताकेँ सुरक्षित रखबाक ब्राह्मणवादी चिन्तनक परिणाम छी संस्कार। मध्यकालमे संस्कारक पालनपर बेसी जोर देल गेल। ओना, दोषक निवारण आ गुणक अंगिकार करब अधलाह बात नहि। इतिहास साक्षी अछि जे भौतिक परिस्थितिक प्रभावक कारणेँ समाजमे कखनो बेटीक तँ कखनो बेटाक मोल बढ़ैत रहल अछि।

आइ जेकरा मैथिल संस्कृति कहल जा रहल अछि, से की वस्तुतः मिथिलाक संस्कृति छी? ऐ लेल मिथिलाक इतिहास दिस देखए पड़त। मिथिलाक धरती हिमालयक माटि-बालुसँ बनल अछि। नदी प्रदेशक ऐ भूभागपर किरात आ कौल्ह रहै छल। आर्यीकरणक अभियानमे जे किछु बहरबैया लोक सभ ऐठाम एला ओ द्विज बनि कऽ ऐ प्रदेशपर सत्ता स्थापित केलैन। क्षत्रिय राजसत्ता कब्जा केलैन आ ब्राह्मणक हाथमे

समाज सत्ता आएल। वैष्णवलोकैन अर्थसत्ताक स्वामी बनला। मूलवासी अर्थात आदिवासी अन्त्यज बनि गेला। बहरबैया लोक कम संख्यामे आएल रहैथ तँए कृषि कार्यक लेल वा आनो प्रयोजनसँ प्रतिलोम विवाह जोर पकड़लक। जकर चर्चा मनुस्मृति आ मिथिलाक इतिहासमे बिस्तारसँ अछि। द्विजक संख्या कम रहने, ऐठामक आदिवासी देवी-देवता, पाबैन-तिहार आ नेम-तेम अपनौलैन। जइसँ ब्राह्मणीकरण भऽ गेल। समाजक सत्ता ब्राह्मणक हाथमे छेलैन तँए हुनके जीवन-शैली संस्कृति बनल। बहुसंख्य मूलवासीपर एकटा नव-संस्कृति आरोपित कएल गेल। औझुका जकाँ प्रचार-प्रसारक माध्यम तँ नहि छल, मुदा जे किछु छल ओ हुनके सबहक बीच छेलैन। लिखैक-पढ़ैक सुविधा आ सामर्थ्य रहने हुनके (द्विजिक) संस्कृति सम्पूर्ण मिथिलाक संस्कृति रसे-रसे बनि गेल। मुदा मूलवासीक जीवन-शैली आ रीति-नीतिक पूर्ण विलयन ने तँ सम्भव छल आ ने से भेल। आइयो ओ (मूलवासी) दूबि बनि माटि पकड़ने छैथ। जकर संस्कृति लोक संस्कृत कहल जाइ छै।

मूड़न आ उपनयन, आब सेहो काम्य संस्कारक कोटिमे अबैत जा रहल अछि। अखनो मिथिलामे ढेरो जाति बसल छैथ। किछु जाति छोड़ि बहुसंख्य जातिक बीच उपनयन प्रथा नहि अछि तँए उपनयनकेँ मिथिलाक संस्कार कोना मानल जाए? हँ, खण्डित संस्कार कहल जा सकैत अछि। तहिना मूड़नोक अछि। एक रूपमे मूड़नोक चलैन नहि अछि। कियो देवस्थान जा मूड़न करबैत तँ कियो गंगाकात जा। कियो गामेमे कबुला-पाती दऽ करबैत तँ कियो बिना गीते-नाद, पूजे-पाठ केने, करैत। कियो समाजमे खीर-टिकड़ी बाँटि करैत तँ कियो भोज-भात कऽ। तँए सभ मिला कऽ देखलापर प्रश्न उठैए जे मुड़नक कोन रूप मानल जाए? तहिना विवाहोक सम्बन्धमे प्रश्न उठैत अछि? कुमार बर आ कुमारि कन्याक संग विवाह प्रचलित अछि। किछु जातिमे दोती बर आ कुमारि कन्याक संग विवाह नहि होइत अछि, जखन कि बहुसंख्य जातिमे दोती

बर-कन्याक विवाह होइत अछि। द्वितीय कन्याक संग कुमार बरकेँ बिआह सेहो होइत अछि। तहिना मृत्यु संस्कारमे सेहो एकरूपता नहि अछि। मृत्युकेँ शोक बुझि गीति-नाद नहि होइत अछि। मुदा प्रश्न उठैए जे मृत्यु शोकेक संस्कार किएक छी? हँ, असामयिक मृत्युकेँ शोकक श्रेणीमे राखल जा सकैए। मुदा उचित आयु बीतला परक मृत्युकेँ शोक किएक मानल जाए? जहिना प्रकृतिमे देखै छी जे अपन पूर्ण आयु पाबि स्वतः नष्ट भऽ जाइत अछि तहिना तँ मनुक्खो छी। मुदा ढेरो प्रश्न उठलाक उपरान्तो समाज, विवाह आ मृत्युकेँ व्यवहारिक संस्कार रूपमे अपनौने छैथ। छिट-फुट ढंगसँ जे किछु होइत हो मुदा समुद्र रुपी समाज, सभ कुछ अपना पेटमे समेट लैत अछि।

व्यक्तिगत जीवनक समस्यासँ ऊपर उठि कऽ सार्वजनिक जीवन जीबाक ऐ अभ्यास कालक महत्व आइयो अछि। सन्यास यएह छी। ब्रह्मचर्य जीवन ज्ञान अर्जनक होइत अछि। गृहस्थाश्रम व्यवहारिक जिनगी होइत अछि, जे उपार्जन कऽ जीवन-जीबाक माध्यम छी। ऐसँ नव परिवारक सृजन होइत अछि। जइसँ समाज आगूओ बढ़ैत आ समृद्धो होइत। तेसर अवस्था वा अन्तिम संन्यास अवस्था तक पहुँचैत-पहुँचैत ज्ञान आ कर्मसँ पूर्ण मनुक्खकेँ अज्ञान आ अबोध मनुक्खक सेवामे लागि जाएब, बेजाए नहि। वास्तवमे ओ जरूरियो अछि।

संस्कार गीतक अर्थ छी विभिन्न संस्कारक प्रसंगमे गौल जाइबला गीत। ई लोक प्रचलित गीत छी। तँए अइमे लोक-गीतक आत्मा बसैत अछि। लोक गीतक मनोहर फुलबाड़ीमे जँ संस्कार गीतकेँ हटा देल जाए तँ ओ निष्प्राण भऽ जाएत। यएह कारण अछि लोकगीतक, जे प्रायः समस्त विशेषता संस्कार गीतमे उपलब्ध अछि। मृत्यु संस्कारकेँ छोड़ि अन्य सभ संस्कार आनन्दोत्सवक माहौलमे मनाओल जाइत अछि। उमंगमय वातावरणमे नारी कण्ठसँ निकलैत स्वरलहरी देहमे थिरकन, हृदयमे झंकार आ मस्तिष्कमे चुलबुली उत्पन्न कऽ दैत अछि। गीत गाएब

मिथिलाक सभ नर-नारीक सहजात गुण रहल अछि। जेना देखै छी जे मूड़न, उपनयन, विवाह इत्यादिक समय, सभ नारी समबैत स्वरमे गीत गबै छैथ। जे मिथिलाक धरोहर छी। तहिना पुरुषो पाबैन आ धार्मिक कार्यमे सभ मिल गाबै छैथ।

संस्कार गीत लोकगीतक अंग छी। कहल जाइत अछि जे लोकगीतक रचनाकार नहि होइ छैथ, ओ सार्वजनिक रचना होइए। एकर वास लोक कण्ठमे अछि। एक कण्ठसँ दोसर कण्ठ धरि जाइत-जाइत गीतक स्वरूप बदैल जाइत। तेतबे नहि, गीतक भास सेहो बदलैत। एक्के गीतकेँ भास बदैल-बदैल केतेको रूपमे गौल जाइत अछि। तँए संस्कार गीतमे एकरूपताक अभाव भेटैत अछि। स्वभावगत ऐ स्थितिक दोसर परिणाम छी भनिताक बेलगाम प्रयोग। गीत गौनिहारि सभ अपने फुरने कोनो गीतमे कोनो रचनाकार नाम भनिताक रूपमे जोड़ि दइ छैथ। विद्यापतिक रचना उमापतिक भऽ जाइत तँ करवनो उमापतिक चंदा झाक वा मनबोधक। तेतबे नहि मैथिली क्षेत्रसँ बाहरोक रचनाकार जेना तुलसी, सूर दास, मीरा इत्यादि मिथिलाक माए-बहिनक कण्ठमे आबि मिथिलेक आ मैथिलियेक गीतकार बनि जाइ छैथ। जे उचित आ अनुचित दुनू छी। उचित ऐ लेल जे हुनकर लोकप्रियता विनय पत्रिका, रामायण, सुरसागर माध्यमसँ एतेक अधिक प्रचलित भऽ गेल अछि जे अपन बनि गेल अछि। जहाँ धरि शब्द टुटैक प्रश्न अछि ओ ज्ञान-अज्ञानक बीचक बात छी। भाषाक जन्म आमजनक बीच होइत अछि। किछु नव शब्दो जन्म लैत अछि आ शुद्ध शब्द टुटि कऽ नबो बनि जाइत अछि। तँए कोन गीत किनकर लिखल छिऐन, संस्कार गीतमे बुझब कठिन भऽ जाइत अछि। स्पष्ट अछि जे संस्कार गीत मैथिल-महिलाक परिष्कृत सांस्कृतिक चेतनाक परिचायक छी।

मिथिलामे संस्कार गीत अनौपचारिक शिक्षाक माध्यम अछि। मैथिल समाजमे नारीक लेल औपचारिक शिक्षा वर्जित छल। सिर्फ नारीए

नहि, माटि परक लोकक लेल सेहो वर्जित छल। कहल जाइत अछि जे वेद वा गीता पढ़लासँ ओ बताह भऽ जाएत। नारीमे विदुषी होइ छेली। संस्कार गीतक सम्बन्ध संस्कृति आ साहित्यसँ तँ अछिए, समाजसँ सेहो अछि। संस्कृति, साहित्य आ समाजक अन्तरावलम्वनकेँ जेते नीक जकाँ संस्कार गीत प्रकट करैत अछि तेते ऐ प्रकारक आन कोनो घटक नहि। संस्कार गीतक संकलन-प्रकाशनसँ मौखिक परम्परा साहित्य समेटल जाइत अछि आ ओ साहित्य अध्ययन-विश्लेषणक आधार प्रस्तुत करैत अछि।

मिथिलामे संस्कार गीतक श्रीगणेश होइत अछि गोसाउनिक गीतसँ। ऐसँ मैथिल समाजक धर्मभावनाक ज्ञान होइत अछि। किन्तु प्रश्न अछि जे संस्कारक अवसरपर ई धर्म-भावना मुख्यतः गोसाउनियेँक गीतमे किएक प्रकट होइत अछि? स्पष्ट अछि जे ऐठाम गोसाउनि गोसाँईसँ बेसी महत्वपूर्ण छैथ। भगवानोक गीत मिथिलामे गौल जाइत अछि मुदा संस्कार कर्मक अवसरपर जे प्रधानता भगवती गीतक अछि से भगवानोक गीतक नहि! आब प्रश्न उठैत जे मिथिलामे देवी-पूजाक प्रमुखता किएक अछि? सभ जनै छी जे देवी-पूजा तंत्रसाधनासँ सम्बद्ध अछि। किछु इतिहासकारक मत छैन जे तंत्रसाधना असंस्कृत जनजातिक समाजसँ आएल अछि। जेकरा कालान्तरमे ब्राह्मणवादी लोकैन अपना लेलैन। बहुत दिन धरि तंत्र-साधना अवैदिक कार्य बुझल जाइ छल। रसे-रसे अपनाबैत-अपनाबैत सनातन धर्ममे जोड़ा गेल। वैदिक धर्मावलम्बी सभ सेहो तंत्र-साधना अपना देवी पूजा दिस आकृष्ट भेला। ऐसँ अतिरिक्त मिथिलाक समाजमे शैव-धर्मक प्रमुखता छल अथवा शाक्त धर्मक। जे विवाद विद्वत मण्डलीमे बहुत दिन धरि चलल। पनचैतीसँ फरियाएल जे मिथिलाक लोक पंचदेवोपासक होइ छैथ। ई मान्यता पुरानकालक समन्वयवादी धार्मिक जीवनक देन छी। संस्कार गीतक मध्यकालीन चरित्रकेँ देखार करैत अछि।

गीत संस्कारमे मैथिली गीतक अपन इतिहास अछि। लोचनक 'रागतरंगिणी'मे मैथिल गीतक जे इतिहास लिखने छैथ तद्नुसार एकर जन्म तेरहम-चौदहम शताब्दीमे भेल। शिव सिंह आ विद्यापति समकालिन छला। हुनके पितामह सुमति मैथिली गीतक परम्पराक प्रारम्भकर्ता छला। ऐ प्रकारेँ मिथिलाक देशी गीत परम्पराक स्थापना भेल। ऐतिहासिक आाधारपर यएह मानल जाइत अछि मुदा गीत गेबाक प्रवृति मनुक्खक विकासक संग जुड़ल अछि। जइ आधारपर आरो पुरान कहल जा सकैत अछि।

गीत गेबाक ढंग, जेकरा राग कहल जाइत, मिथिलामे भास कहल जाइत छइ। मिथिला भासक अपन विशिष्टता छइ। संस्कार गीत ऐ भासक भण्डार छी। हँ, किछु त्रुटिपूर्ण बात सेहो अछि जे कम जनने एक्के गीत (समदाउन) खुशीक समयमे सेहो गाबै छैथ आ शोकक समय सेहो जखन कि दुनूक लेल अलग-अलग विषय-वस्तु होइछ। तहिना बेटाक विवाहमे कुमार गीत आ बेटीक लेल कुमारि गीतमे सेहो अन्तर होइत अछि। जन्मक समय खेलौना आ सोहरमे सेहो अन्तर अछि। ❑

वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष

खुशीक बात जे उपेक्षित समाजक कल्याणक दिशामे संघर्षक लेल 'अंतिका' लाइव विमर्श शुरू केलक अछि। ऐ लेल गौड़ीजीकेँ धन्यवाद..! शुभकामना..!

हाशियाक समाज वा उपेक्षित समाजपर दुनियाँ भरिक वर्चस्ववादी संस्कृति जोर-जबर्दस्ती कइयो रहल अछि आ युग-युगसँ करितो आबिये रहल अछि, जेकर प्रमाण इतिहास अछिए। अखन धरि चौदह हजारसँ ऊपर लड़ाइ धरतीपर भऽ चुकल अछि।

एगारहमी-बारहमी शताब्दीमे सामन्तवाद आकि ब्रह्मणवादक उदय भेल, तइसँ पहिने जंगली अवस्थाक शोषणक रूप जइ तरहक छल तइसँ भिन्न रूपमे सामन्तवादी व्यवस्था पनपल।

वैदिक संस्कृति, भाषा आ साहित्यक विकास जन-गणक जीवनसँ जुड़ल छल। वेदक रचनाक समयक निर्धारण तँ भिन्न-भिन्न विद्वान भिन्न-भिन्न आधारपर केलैन अछि, मुदा मोटा-मोटी पाँच हजार बर्ख पूर्वक समय सभ मानि रहला अछि। एक लाख सूत्र वेदमे अछि, जे कर्म, ज्ञान आ उपासनासँ सम्बन्धित अछि। से अखन नहि। एक तँ ओहुना कम समयमे अपन विचार रखैक अछि। मात्र दस मिनटमे केतेक विचारकेँ समेटल जा सकैए।

ओना, कार्यक्रमक शीर्षकमे 'पचपनिया'क संघर्षक चर्च भेल अछि मुदा नीक होइत जे अगुआएल-पछुआएलक बीच सीम-सीमांकन करैत

जँ संघर्षक चर्च होइत। मैथिली भाषामे मंचक संचालन भऽ रहल अछि, ई तँ आरो मैथिली भाषाक लेल एक कदम आगू बढ़ब भेबे कएल। सभसँ पहिने हमरा सभकेँ 'भाषा' आ 'साहित्य'क भेदपर धियान देबा चाही। केते गोरे भाषाकेँ साहित्य माने छैथ आ साहित्यकेँ भाषा। मुदा से नहि, साहित्य समाजक दर्पण छी आ भाषा एक-दोसराक बीच संवाद स्थापित करैक माध्यम। भाषाक दौड़मे जनभाषा वैदिक रूपमे आएल। वएह भाषा परिमार्जित होइत लौकिक संस्कृत बनल। लौकिक संस्कृत समाजक अल्पसंख्यक लोकक बीच बढ़ल। मुदा बहुसंख्य जन-मानस ओइसँ दूर रहल, जीवनमे भाषाक खगता अछिए, तँए संस्कृत भाषाक बीच जन-मानसक विद्रोह भेल। लौकिक संस्कृत दबल आ जन-समुदायक बीच पाली भाषा स्थापित भेल। ऐठाम एकटा बात आरो कहि दइ छी, अखन जे भारत देखै छिऐ, से भारत पहिने नहि छल। तँए क्षेत्रक हिसाबसँ भाषो भिन्न-भिन्न रूपमे आबिये रहल अछि। 1947 इस्वीक भारत आ तइसँ पहिलुका भारतमे अन्तर छेलैहे, जइसँ भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न संस्कृतिक चलैन, क्षेत्रक हिसाबसँ छेलैहे।

पाली भाषा परिमार्जित होइत जखन आगू बढ़ल आ जनमानससँ दूर भेल, तखन पाली भाषाक बीच सेहो विद्रोह भेल आ अपभ्रंश स्थापित भेल। पछाइत आरो-आरो भाषा बढ़ैत-बदलैत गेल अछि मुदा अखन भाषाक चर्च एतबे करब। मध्ययुगमे, माने जेकरा 'भक्ति युग' वा 'भक्ति काल' कहै छिऐ, भाषाक जबर्दस्त आन्दोलन भेल। जइसँ तुलसीक माध्यमसँ अवधी, सूरक माध्यमसँ ब्रजभाषा, कबीरक माध्यमसँ मैथिलीक संग आरो पूर्वांचलक भाषाक आगमन भेल। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे साहित्य समाजकेँ आगू-आगूक रस्तो देखबैए, संगे चलबो करैए आ दुरकाल समयमे पाछूसँ धक्का दैत ठेलबो करिते अछि। तँए साहित्यक क्षेत्रमे एतबे कहब जे अखन जे अपन मिथिलाक समाज अछि ओकर साहित्य केहेन छै आ ओ समाजक संग चलि रहल अछि वा

समाजकेँ पाछू छोड़ि चलि रहल अछि।

मिथिले नहि, सौंसे देशो हजारो बर्खक गुलामीक सिक्कैड़मे बन्हाएल आबि रहल छल जे 1947 इस्वीमे आंशिक रूपमे टुटल।

ओना, सभ जनिते छी जे सतजुगेसँ देव-दानवक लड़ाइक चर्च होइत आबि रहल अछि। त्रेता युगमे राम-रावणक लड़ाइ भेल। समाजक बीच बलहीनक केहेन गति बलवान समाज बनौने छल, अनेको कथा-पिहानीसँ भेटिये रहल अछि। द्वापर युगक कौरब-पाण्डवक लड़ाइ सेहो बुझले अछि। जे समस्या अखन समाज बीच देखि पड़ैए, एहेन समस्याक चर्चे पुराण छी। ऐ सभकेँ अखन छोड़ू। अखन जँ एकलव्य आ द्रोणाचार्य करए लगब तइसँ काज नहि चलत। सभ जनिते छी जे हर मनुक्खकेँ एकटा जीवन होइ छै, ओ केहेन आ केना अछि तैपर नजैर दिअ पड़त।

वैदिक मनुक्ख आ मनुक्खक जीवन केना वैदिक बनल चलत, ई मूल प्रश्न अछि।

वैदिक संस्कृति जे साहित्यमे देखै छी ओ ओइ समयक समाजक जीवन छल। आइ हम सभ एकैसमी सदीमे छी, जे वैज्ञानिक सदी मानल जाइए। वैज्ञानिक सदीक अर्थ भेल बेवहारिक जीवन। सभ दिन किछु-ने-किछु समाजक बीच विग्रहक जड़ि रोपले जा रहल अछि, तैठाम बेवहारिक जीवन पएब बाल-बोधक खेल नहि। समाजमे एहेन वातावरण बनियेँ रहल अछि जे मैथिली भाषा मरि जाएत। एहेन विचारक जन्म केना भेल? जे मैथिली अन्तर्राष्ट्रीय भाषा छी ओ मरि केना जाएत? एहेन संस्कार ओहन परिवारसँ अबैए जे परिवार मिथिला आ मैथिलीकेँ चारागाह बना चरैए आ समाजक हवाकेँ दूषित करैए।

1912 इस्वीसँ पूर्व बिहार-बंगाल एक्के राज्य छल, माने सम्मिलित छल। विद्यापति छह-सात साए बर्ख पूर्व भेला, ओ सभक भेला आकि हमर भेला आ अहाँक नहि भेला? ..अपन कमजोरी मैथिली भाषी ई नहि

कहए चाहै छैथ जे बंगलाभाषीक भाषामे केहेन सामाजिकताक दर्शन अछि आ अहाँक मैथिलीमे केहेन अछि। बंगाली अपन भाषाकेँ निष्ठासँ निमाहि रहला अछि जे अपरिचितो-सँ-अपरिचित जगहपर मिसियो भरि जँ माटिक सुगन्ध लगै छैन, तँ तखने ओ अपन मातृभाषाकेँ सोझामे राखि बंगलामे गप-सप्प करए लगै छैथ, मुदा अपन मैथिल केते एहेन छैथ जे भाषा आ समाजकेँ निष्ठाक बेवहारसँ देखौ आ करौ चाहै छैथ..? खाएर जे अछि।

वैदिक संस्कृति जे मिथिलाक संस्कृति छी, जे भाषिक रूपमे तँ अखनो पसरले अछि मुदा बेवहारिक रूपमे ओकर की स्थिति छै, तेकरा तँ इमानक नजैरसँ देखए पड़त। शाब्दिक रूपमे भलेँ केतबो आगू बढ़ब मुदा जीवन आ समाज ओइसँ थोड़े आगू बढ़त। आजुक जे समाज बनि गेल अछि, ओ दिशाहीन बनि गेल अछि। ओकर दिशा देखबैले साहित्य-रचनाक जरूरत छइ। तैठाम अपन साहित्यक समीक्षा सेहो करबै ने जे हम केकर रचनाकार छिऐ। एकटा मैथिलीमे कहबी छै 'घुरि फिरि बभना, तोरे अंगना।' मुदा कहबी आ फकराक बात छोड़ू वास्तविक भूमिक चर्च करू। भाषा हुअ कि साहित्य हुअ आकि संस्कृति हुअ, वर्चस्ववादी आ हाशियापर ठाढ़ भेल समाजक बीच हजारो कोसक दूरी बनल अछि। भरल हाथक जीवन आ खगल हाथक जीवन केना एकधारामे चलि सकैए। तहूमे आजुक भौतिकवादी युगमे। भाषामे स्पष्ट भेद बनल अछि जे हाशिया परक समाजक अलग भाषा अछि आ वर्चस्ववादी समाजक भाषा अलग अछि। अखन भाषाक चर्च नहि करब जे केना भारोपीय भाषाक उदय भेल।

भाषाक संग साहित्य अछि। केते गोटे तँ अखनो भाषेकेँ साहित्य बुझै छैथ आ साहित्यकेँ भाषा। मुदा अखन से नहि, अखन एतबे जे मैथिली साहित्यमे जे रचना भऽ रहल अछि ओ समाजसँ केतेक जुड़ल चलि रहल अछि? की एहेन नहि अछि जे छी अमेरिकाक बीस महलाक

ऊपर आ कम्प्युटरमे देखि-सुनि रहल छी मिथिलाकेँ, जे साग-पात खोंटिकऽ खाएब आ मिथिलेमे रहब..! अखन साहित्यक विस्तारमे नहि जाएब। अखन एतबे कहब जे अपन भाषा, अपन साहित्य आ संस्कृतिकेँ अपने निरमित करए पड़त। अपने केलासँ हएत।

अखन आरक्षणक प्रश्न सौंसे देशमे उठल अछि मुदा आरक्षण छी की आ एकर जरूरत की छै? महिला आरक्षण वा हरिजन-पनिचल्लाक आरक्षण जे अछि तइमे की देखै छिऐ? पंचायत चुनावमे महिलाकेँ पचास प्रतिशत आरक्षण देल गेल अछि, ओकर अतिरिक्त हरिजन आ पनिचल्लाकेँ सेहो आरक्षण देल गेल छैन, मुदा पंचायतमे जे मुखिया पाँच चुनाव पहिने छल सएह अखनो अछि.! तहिना आनो-आन आरक्षणक गति अछि। अन्तर्जातीय विवाहक कानून नेहरूजी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू,क समयमे पास भेल मुदा समाजमे ओकर की गति अछि? अपहरण, हत्या, विषपानक घटना कोन रूपमे बढ़ि रहल अछि। बजैक क्रममे सभ बजै छी जे प्रकृतिक अनुकूल आचरण करी, नीक विचार, मुदा देखै की छिऐ? समाजमे लड़की-संख्याक अनुपात दिनो-दिन कमि किए रहल अछि? भ्रूण हत्याक रोग एते केना पसैर गेल अछि? जे सार्वजनिक संस्था सभ अछि ओ अखनो ओही ढर्रापर चलि रहल अछि जे स्वतंत्रता-पूर्वक छल। जरूरत अछि जे पछुआएल समाजक जे रचनाकार सभ छैथ, अपन जीवनानुकूल रचना करैथ। छुच्छे गीत-नादसँ समाजकेँ केते दूर तक लऽ जेबइ। आजुक जे पढ़ाइक सिलेवस अछि ओकरा आजुक समाजक परिवेशक अनुकूल बनौल जाए। खाएर जे भेल से भेल, एकरा स्वतंत्रतासँ पूर्वक विचार बुझू, माने 1947 इस्वीसँ पूर्वक। आइ अपना सभ स्वतंत्रताक पचहत्तरीम वर्षगांठक अमृत महोत्सव मना रहल छी। आइ जे दिशाहीन समाज भऽ गेल अछि, तइमे सार्वजनिक संस्था सभक हाथ सेहो अछिए। ओ केना समुचित दिशान्मुख हएत। आइसँ हजार बर्ख पूर्व कवि-नाटककार ज्योतिरीश्वर भेला, जे

'धूर्तसमागम' लिखलैन, ओ समाजकेँ देखि कऽ लिखने छला नहि कि सपनौती भेलैन। जहिना जन्मभूमिकेँ मातृभूमि बुझै छी तहिना मातृवत बेवहारो हेबा चाही। जँ हृदयसँ दबल-कुचललक समाजक भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक संघर्षकेँ सिनेहसँ अपनौल जाएत तँ निसचित हाशिया परक समाजक कल्याणो हेतैन आ भावी जीवनक आशा सेहो जगबे करतैन। तइले जरूरत अछि जे जे जेतइ छी, से तेतइ ठाढ़ भऽ अपन शक्तिकेँ जगाबी। असकरो बहुत किछु कएल जा सकैए। असकरे भाय राजनन्दन लाल दास, अपन बूत्तापर 'कर्णामृत' सन पत्रिकाक सम्पादन करीब पैंतीस-चालीस बर्ख धरि सम्हारि लेलैन। अखने चन्द्रमोहन बाबू जे आन्धप्रदेश- हैदरावादमे छैथ, केना मैथिल रचनाकारक एकटा मंच तैयार केलैन अछि। जे जेतए छी से तेतइसँ उठि कऽ ठाढ़ होउ आ अपन मातृभाषा आ मातृभूमिक लेल संस्कृतिक रक्षामे लागि जाउ।

पनरह अगस्त 1947 इस्वीमे अपन देश स्वतंत्र भेल। स्वतंत्रताकेँ ओहिना दोसतियारेक लेन-देन जकाँ नहि बुझियौ। अंगरेजी शासक संग मुकाबला भेल आ ओइ मुकाबलामे पछार खा अंगरेज ऐठामसँ भागल। मुकाबला गप-सप्प, विचार-विमर्शक नहि, शक्तिक बलपर भेल। लाखो देशभक्त अपन जान गमौलैन। हुनका सभक जानकेँ अकारथसँ बँचाएब, ई भार आजुक समयमे हमरे-अहाँक ऊपर ने अछि, तेकर रक्षा हमहीं-अहाँ ने करबै।

अपन भाषा, अपन साहित्य आ संस्कृतिकेँ परिमार्जित करैत हमहीं अहाँ ने ऐगला पीढ़ी तक पहुँचेबै। आइ हम सभ पचहत्तैर बर्ख पूर्वक आजाद देशमे ठाढ़ छी, आन भारतीय भाषाक साहित्यमे जे लोकतंत्रीकरण भेल, से मैथिली भाषा-साहित्यमे नहि भेल अछि, ओ अखन प्रतीक्षामे अछि। भाषाक हिसाबसँ जे क्षेत्रीकरण सभ देखि रहल छी, ओ भ्रमित जाल छी। मैथिली क्षेत्रक जे पूबरिया हिस्सा अछि, ओ धार-धूरक इलाका छी, ऐठामक लोककेँ आवागमणक संग जीविकोमे

असुविधा छैन, ऐसँ बहुत नीक क्षेत्र कोसी-कमलाक पूवरिया हिस्सा अछि, जैठाम रौदी तँ एक्के रंग होइए मुदा दाहीमे कमी-बेसी होइए। प्राकृतिक आफद बेसी अछि। आवागमणक असुविधा भेने बीचक हिस्सासँ पूवरिया हिस्सा कमबे केलैन अछि तँए ओ मैथिल नहि छैथ आकि मिथिलाक नहि भेला, ई अनुचित विचार अछि। जहिना पूवरिया हिस्साकेँ नीच देखौल गेल तहिना पछवरिया-दछिनवरिया हिस्साकेँ सेहो नीच देखौल गेल अछि। अपना सभ एक्केसम सदीमे छी, तँए अन्धविश्वासकेँ रोकए पड़त। ओ केना रोकाएत? भने अपना सभ अगुआएल वर्गक समाज आ पछुआएल वर्गक समाजक संघर्षक संकल्प लेलौं अछि। सोल्होअना संघर्ष ले ते सोल्होअना लोककेँ उठिकऽ ठाढ़ हुअ पड़तैन, मुदा जँ प्रवुद्ध समाज अपन सम्बन्धकेँ विस्तार करए चाहब, से तँ कइये सकै छी। जहिना उगा-डुमा-पूबा कहै छिऐ तहिना अपन पूर्वजक चूककेँ समाजक बीच राखि पाटैक अछि। सभ जिला, सभ क्षेत्रमे अभियान पहुँचाएल जाए।

हँ एकटा बात छुटि गेल। पूवरिया हिस्सा कि दच्छिनवरिया हिस्सा आकि पछवरिया हिस्सा जे कहल जाइए, आ तैसंग बिचला हिस्सा, वियोगीजीक विचारे (तारानन्द 'वियोगी'क) मधुबनी आ दरभंगा जिला, ओ भ्रमित विचार छी। वास्तविकता किछु आरो छइ। कहबी छै जे 'ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा, सब घर एक्के लेखा।' जैठाम सामाजिक राजनीतिक मुद्दा औत तैठाम सोतिबाबू व्राह्मणबाबूपर बिसवास नहि करता, तँए सोतिबाबूक दरबारमे कहियो खजानाक जिम्मा हुनका नहि देल गेलैन। मुदा ओहन पछुआएल पनिचल्लाकेँ भण्डारक चाभी हाथमे देबे केलैन। अखन एतबे..। आगू बढ़ू, राजपूत परिवार मैथिली साहित्यक हिसाबे पछुआएल छैथ। तहिना भूमिहार परिवार सेहो पछुआएल छैथ। पछुआइक कारण ढेरो अछि, मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे मैथिली क्षेत्रीय भाषा छी, माने किछु भौगोलिक क्षेत्रक, प्राय: ओइ दुनू

जाइतिक शादी-विवाह क्षेत्रसँ बाहर होइत रहल, जइसँ मिथिला अनेको भाषाक समागम स्थल बनल अछि। जेकर परिणाम स्वरूप एक-एक परिवारमे तीन-तीन, चारि-चारि भाषाक चलैन अछि। तैठाम मैथिलीक संग समास्या तँ अछिए।

आइ जे पूवारि हिस्सा वा पछवारि, दछिनवारि हिस्साक मैथिली भाषी छैथ, ओ बीचला हिस्साकेँ वा बीचमे जे छैथ, माने मधुबनी-दरभंगा जिलाक, जे परिनिष्ठित मैथिली रचनाकार बुझै छैथ वा क्षेत्रक (मधुबनी-दरभंगा जिलाक) जे अपनाकेँ परिनिष्ठित वा अगुआएल बुझै छैथ ओ भ्रमित छैथ। ओ ई नहि देखि रहला अछि जे एक गाम-समाजमे जँ दस-बीस, पच्चीस-पचास जाइतिक लोक छी, सभक बोली-वाणी आ सामाजिक जीवनमे की अन्तर अछि। जइसँ भिन्न-भिन्न जाइतिक जीवनक संग भाषा-साहित्यमे सेहो अन्तर हेबे करत आ अछियो।

सभ कियो विद्यापतिक रचनाकेँ परिनिष्ठित भाषाक रचना मानि रहल छी। ऐ सन्दर्भमे बेसी नइ कहब अछि, मुदा दूटा बात जरूर कहब। पहिल, आजुक जे बिस्फी गाम अछि ओइ गामक भाषा केहेन अछि से तँ जीवित मुद्दा छी, ओइठाम जा कऽ देखियौ जे गामक भाषा केहेन अछि। दोसर ई जे विद्यापतिक जे पहिलुका रचनाक संस्करण अछि ओकरा औझुका रचनासँ मिलाकऽ देखियौ। दोसर बात, एक्के जातिमे जँ तीनटा रचनाकार छैथ, माने एकटा अंग्रेजी पढ़ि आएल छैथ, दोसर संस्कृत पढ़ि आएल छैथ आ तेसर विज्ञान वा सामान्य विषय पढ़ि कऽ आएल छैथ, तीनूक रचनामे भाषाक अन्तर स्पष्ट देखि पड़त। अखन बेसी नहि, अखन एतबे। जरूरत अछि आजुक सामाजिक परिवेशमे केहेन भाषा, केहेन साहित्य आ केहेन संस्कृतिक जरूरत अछि। अपना ऐठाम विवाह वा उपनयनक समय मड़वा बान्हल जाइए। ओ मड़वा कथीक सूचक छी। एक वैदिक परिवारक सूचक छी। आइ परिवारक रूप बदैल रहल अछि, जइसँ नव-नव रोगोक सृजन भइये रहल अछि। परिवेशक मांग अछि जे,

ओना, तँ पुरुषोक नीक गति नहि अछि, मुदा महिलाक तँ आरो नहि अछि, नारी जागरणक लेल नारी शिक्षा जरूरी अछि। एक तँ पढ़ाइ-लिखाइक जे सिस्टम बनल जा रहल अछि ओ अपने-आपमे महग बनल जा रहल अछि, तैपर जँ अपन बेटीकेँ नीक शिक्षा दिअ चाहब वा देब, तखन बिआहक समयमे की देखब? जेते पढ़ैमे खर्च केलौं, तेते बिआहमे सेहो खर्च करू। यएह तँ निर्लज समाज मिथिलाक छी। खाएर बेसी नइ कहब।

अन्तमे यएह जे अपन मैथिल देशक सभ हिस्सा क्षेत्रमे, माने पटना, दिल्ली, गुजरात, मुम्वई, हैदरावाद, बंगलोर, मद्रास, कोलकाता इत्यादि सभ शहरमे छैथ। जे जेतए छैथ ओ अपन मैथिल अस्मिताक लेल भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक क्षेत्रमे किछु-ने-किछु सेवा दैथ। जहिना बुझै छिऐ जे मैथिली भाषा मरि रहल अछि तहिना देखबै जे मैथिली सिर्फ मिथिले क्षेत्रटाक नहि सौंसे देशेक भाषा बनि गेल अछि। मूल प्रश्न अछि जे स्वतंत्र देशक भाषाक रूप की हुअए, साहित्यक की रूप हुअए आ सांस्कृतिक रूपमे की सुधार कएल जाए। भेल तँ एतबे ने जे आजुक समयानुकूल मिथिलोक समाज बनइ। ❑

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन- 2011 गुवाहाटी

सभसँ पहिने ऐ पर्व समारोहक सहयोगी आ मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिकेँ धन्यवाद दइ छिऐन जे मिथिला आ कामरूपक बीच युग-युगसँ प्रवाहित होइत जीवन धाराकेँ जीवित रखने छैथ। संगे आगूओ अहिना लहड़ाइत धाराकेँ जीवित रखता, से आशा करै छी।

कामरूप आ मिथिलाक बीच सम्बन्ध कहियासँ शुरू भेल, एकर निश्चित तिथि तँ नहि बुझल अछि, मुदा सहस्रो सालसँ जीवन धारा बनि प्रवाहित होइत आबि रहल अछि, ई कहैमे कनियोँ मनमे संकोच नहि अछि। जे कामरूप कहियो प्राग्ज्योतिष कहल जाइत छल भरिसक तहियेसँ। ओना, इतिहासक विद्यार्थी नहि रहने इतिहास पढ़लो नहि अछि। भऽ सकैत अछि जे जहिना मिथिलाक सम्पूर्ण इतिहास लिखिनिहारक अभाव रहल अछि तहिना भाषोक हुअए। मुदा दुनूक बीच प्रगाढ़ सम्बन्ध बनल चलि आबि रहल अछि, ऐमे केतौ दू-राइ नहि अछि। जखन बच्चे रही तहियो बुढ़-बुढ़ानुसक मुहेँ सुनैत रही जे फल्लाँ कामरूपक सीख छैथ। तेतबे नहि मिथिलावासीक लेल कामरूप कामाख्या, अदौसँ तीर्थ-स्थल बनल चलि आबि रहल अछि, आगूओ चलैत रहत। जहिना बंगालक गंगासागर, दक्षिणेश्वर, उड़ीसाक कोणार्क आ जगरनाथ मद्रासक श्वेतबान रामेश्वर, कन्याकुमारी, गुजरातक द्वारिका, राजस्थानक पुष्कर पंजाबक स्वर्ण मन्दिर, कश्मीरक वैश्णोदेवी-अमरनाथ, उत्तरांचलक बद्रीनाथ, हरिद्वार उत्तर प्रदेशक काशी, विन्ध्यांचल मथुरा-वृन्दावन

इत्यादि रहल अछि, तहिना। जइ समय गाड़ी-सवारीक अभाव छल तहू समय छल।

गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानक बीच बसल मिथिलो आ कामरूपोक रहने उपजा-बाड़ीसँ लऽ कऽ जिनगीक आनो-आनो सम्बन्ध सहज अछि। जहिना कामरूप तलहटी मैदानसँ लऽ कऽ पहाड़-पठार, वनक संग प्रवाहित होइत जलधारासँ सम्पन्न अछि तहिना बिहारो अछि। बंगालक खाड़ीसँ उठैत मानसुनसँ जहिना कामरूपक भूमि सिंचित होइत तहिना मिथिलांचलोक। ओना, मुँहपर पड़ने कामरूपमे अधिक बरखा आ जेना-जेना पछिम मुहेँ ससरैत तेना-तेना कम होइत जाइत, मुदा दुनूक बीच नजदीकी रहने बहुत बेसी अन्तर नहि पड़ैत। गंगा-ब्रह्मपुत्रक एक तलहटी रहने माटियो आ माइटिक सुगंधोकेँ एकरंगाह बनौने अछि। उत्तरी पहाड़सँ निकलैत (नदी धारा) जल धारो एक-रंगाहे रहल अछि। जैठाम जेहेन माटि-पानि तैठाम तेहन उपजा-बाड़ी। जैठाम जेहेन उपजा-बाड़ी तैठाम तेहने खानो-पान आ आचारो-विचार। जैठाम जेहेन खान-पान, आचार-विचार तैठाम तहिना कला-सांस्कृतिक सम्बन्ध। जे दुनूक बीच अदौसँ रहल अछि। ओना, खेती-बाड़ीमे एक-रूपतो अछि आ भिन्नतो। अधिक मध्यम बर्षा भेने, पनिसहू फसिलो आ फलो-फलहरीमे अन्तर होइत, से ऐछो। जइ कामरूपमे नारियल, सुपारी, चाहक बहुतायत अछि ओ मिथिलांचलमे कम अछि। ओना, मिथिलांचलमे सिरिफ आम हजारो किस्मक अछि। मुदा पटुआ आ धान जहिना कामरूपक मुख्य फसिल अछि तहिना मिथिलोक। मुदा जहिना नीलक नब अविष्कार भेने नीलक खेती मारल गेल तहिना पोलीथिनक आगमनसँ पटुआक खेती प्रभावित भेल अछि।

मिथिलाक उर्वर भूमि। जहिना माटि-पानि तहिना स्वच्छ हवो। जइसँ सभ कथूक वृद्धि। चाहे ओ खेती हुअए आकि जीवन पद्धति हुअए आकि कला-संस्कृति। मिथिलांचलक चिन्तन धारामे सिरिफ उच्च कोटिक

मनुक्खे नहि, उच्च कोटिक समाज आ सामाजिक-पद्धतिक सेहो दिशा-दर्शन रहल अछि। जन-गणक नगर जनकपुर। आ जनकपुरक राजा जनक। जनिक कन्या जगत जननी जानकी। एक-सँ-एक चिन्तक, तत्त्ववेत्ता, दार्शनिक मिथिला भूमि पैदा केने अछि। जेकर वानगी इतिहास-पुराण जीवित अछि।

जहिना सौंसे देश गुलामीक शिकंजामे हजारो बर्खसँ रहल तहिना देशक उत्तर-मध्य बसल मिथिलो अछि। ओना, मिथिला दू देशमे बटल अछि। साठि-पैंसैठ बरख पहिने भारत स्वतंत्रताक साँस लेलक जहन कि नेपालक मिथिला हालमे साँस लेलक। जहिना अभावी परिवारमे अभावक चलैत जीवनक सभ किछु प्रभावित होइत, तहिना भेल। जीवन-पद्धतिमे खोंट अबैत-अबैत खोंटाह होइत गेल अछि। जेकर असर अधलाह पड़ैत गेल। मुदा तैयो मिथिलाक वएह भूमि छी जे अदौसँ रहल।

मिथिलांचलक उर्वर भूमि रहने मनुक्खोक बाढ़ि सभ दिनसँ रहल, अखनो अछि आगूओ रहत। कतबो मिथिलावासी पड़ाइन (पलायन) केलैन, दुनियाँक कोन-कोनमे बसला अछि, तैयो मिथिलाक जनसंख्या पर्याप्त अछिए। जइसँ गरीबी रहल अछि। एक दृष्टिये देखलासँ जहिना पर्याप्त जनसंख्या अछि तहिना प्रचुर सम्पैतो अछि। मुदा दुनूक संयोगमे भिन्नता अछि। जइसँ दुनूक बीच भारी खाधि बनि गेल अछि। जिनकर गाम तिनकर सम्पैत नहि आ जिनकर सम्पैत तिनकर गाम नहि। जइसँ मुट्ठी भरि लोक पूर्ण सम्पैत हथियौने छैथ। जेकर ज्वलन्त उदाहरण पड़ाइन (पलायन) अछि।

गरीबीक चलैत मिथिलावासी आइए नहि पूर्वहिसँ नेपाल, बंगाल, आसाम धरि रोजी-रोटीक लेल जाइत रहल छैथ। पटुआ काटब, धान रोपब, धान काटब हुनका सबहक मुख्य कार्य छेलैन। सालक छह मास ओ सभ कमाइ छला। मुदा ओइसँ पैघ-पैघ उपलब्धि सेहो भेटल। अपना संग अपन भाषो, कलो-संस्कृति लेनौं अबै छला आ लैयो जाइ छला

जइसँ दुनूक बीचक सम्बन्धमे प्रगाढ़ता अबैत रहल। एकठाम रहने दुनूक बीच सभ तरहक सम्बन्ध बनैत रहल आ अखनो प्रवाहमान धारा सदृश्य बनि बहि रहल अछि। तँए ऐ पावन अवसरपर समन्वय समिति संग विद्योपतिकेँ कोटिशः नमस्कार!

पूर्वाचल आ मिथिला, दुनूक बीच व्यापारिक सम्बन्ध सेहो अदौसँ रहल अछि। गाए-महींसिक व्यापार चलैत रहल अछि। संग-संग कलाकारक संग कलाक आदान-प्रदान सेहो चलैत रहल अछि। अखनो मिथिलाक श्रमिकक बीच जेते पूर्वाचलक भाषा पसरल अछि ओते मध्य आ उच्च परिवारक बीच नहि अछि।

विद्यापति पर्व समारोहक ऐ पावन असवरपर विद्यापतिकेँ सिरिफ मिथिले-मैथिल कहब हुनका संग अन्याय करब हएत। हुनका आत्माकेँ ठेस पहुँचतैन। ओ युग-पुरुष छला। भाषा-साहित्यक अपन धारा अछि। जइ धाराक मध्य ओ अखनो ठाढ़ छैथ। वैदिक भाषा जखन जन-गणक बीच अपन साहित्यिक धारा पकड़लक, तहियेसँ समाजमे एक नब समाज उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओ बढ़ैत-बढ़ैत कालिदास धरि अबैत-अबैत सोझा-सोझी ठाढ़ भऽ गेल। मुदा जिनगीक लेल भाषा-अनिवार्य, तँए जन-गणक बीच पालि भाषा उगल। तहिना आगू बढ़ैत- प्राकृत, अपभ्रंश होइत अवहट्ठमे पहुँच गेल।

अवहट्ठक सीमानपर विद्यापति अपन कीर्तिलता लऽ कऽ ठाढ़ छैथ। जइमे जन-गणक आत्मा झलैक रहल छैन। ओना, ओ संस्कृतक प्रगाढ़ पण्डित छला, जे हुनक रचनामे झलैक रहल अछि, ओ उगना सन संगीक संग रहैत छला। जे उगना गंगाजल पहुँचबै छेलैन। एक भांग पीसैमे मस्त तँ दोसर पीब-पीब मस्त! एहनठाम हटलासँ, विद्यापति पत्नियोसँ झगड़ा कऽ उगना लेल निष्काम प्रेम धारा नहि बहबैथ, से केहेन होएत।

अन्तमे, जहिना अदौसँ एक-दोसर सटल रहलौं तहिना आगूओ सटि चलैत रही, यएह शुभ-कामना। एहेन-एहेन पर्व आरो नमहर भऽ भऽ मनौल जाइत रहए, यएह शुभेच्छा!

जय-मैथिली! जय मिथिला!!, जय कामरूप! जय भारत!! जय मानव!!! ❑

‘सगर राति दीप जरय’क 100म कथागोष्ठीक मादे

उदय-प्रलय शाश्वत सत् जहिना छै तहिना जिनगियो आ जिनगीक किरिया-कलाप सेहो छइ। मैथिली साहित्याकाशमे बीसम शताब्दीक आठम दशक ओहने ऊर्जावान साहित्यकारक टोली छल जेहेन बरसातक पछाइत ओस-पाला, गर्दा-धूरासँ स्वच्छ वायुमण्डलक संग अकास रहैए। एक संग हरिमोहन बाबू (हरिमोहन झा), तंतर बाबू (तंत्रनाथ झा), मधुपजी (काशीकान्त मिश्र ‘मधूप’), किरणजी (काञ्चीनाथ किरण), मणिपद्मजी (ब्रज किशोर वर्मा ‘मणिपद्म’), शेखरजी (शुधांशु शेखर चौधरी), योगाबाबू (योगानन्द झा), राघवाचार्यजी, (बोध नारायण झा), बहेड़जी (राधाकृष्ण झा ‘बहेड़’) आ राधाकृष्ण चौधरीजी सन मैथिली साहित्यकाशमे दुनियाँक सभ दिशा देखनिहार छला। दार्शनिक रहितो हरिमोहन बाबूकेँ मैथिली साहित्य हास्यसँ आगू नहि बढ़ए देलकैन! एकैसम सदीक मांग अछि जे हुनक समीक्षा मिथिलाक चिन्तनधारा, अध्यात्म दर्शनक कसौटीपर हुअए। तहिना राधाकृष्णजीक इतिहासक मूल तत्त्वक सेहो। चौधरीजीक इतिहास समाजमे पाठकक बीच एक नब सोच आ नब दृष्टि दैत अछि तँए ओइ दृष्टिसँ हुनका देखल जाए। भऽ सकैए किछु पोथी हाथ नहि पड़ल होइन, मुदा इतिहासो तँ इतिहासे छी। जे अखन तक राजा-रजबारासँ आगू नहि बढ़ल अछि, तैठाम इतिहासक पूर्णता देखब उचित नहि। दुर्भाग्य रहल अछि जे अखन धरिक इतिहास

सामाजिक ताना-बानाकेँ नीक जकाँ नहि ताकि सकल अछि। अखनो मिथिलाक खान-पान आ घर-दुआर अपन आदिम स्वरूपकेँ बँचौने अछि। मात्र देखैक नजैरक जरूरत अछि। जे मधुपजी पोरो सागकेँ देखि सकै छैथ ओ साग खेनिहारकेँ नहि देखि पबितैथ? रहस्यमय अछि। किरणजी तँ सहजे मैथिलीक किरणे छला। कठही पैडिलक साइकिलपर शतरंजी चौपेतले रहै छेलैन। शरदक चान जकाँ चमकैत सोभाव। मात्र चाहपर अभ्यागती! बीचमे एकटा प्रश्न उठैए, ओहन टोली आइ किए ने? साहित्यजगतमे जागरण छल, समाजक बीच जिज्ञासा छल जे कि साहित्य हमरो छी। किरणजीक स्पष्ट कहब छेलैन, जहिना बजै छी तहिना लिखू, जहिना समाजकेँ देखै छिऐ तेहने विषय बनाउ, वएह भेल साहित्य। जेहने विचार किरणजीक रहैन तेहने विचार राहुल सांकृत्यायनजीक सेहो रहैन। हुनको कहब छैन अपन बात आन आ आनक बात अपने नीक जकाँ बुझि जाइ, वएह भेल ओइ भाषाक व्याकरण। भाषाक धाराक अंग भेल शब्द। भाषाक धारा ओइसँ वृहत अछि। आन भाषा केना आन भाषामे प्रवेश करैए ओ अलग प्रक्रिया भेल। मणिपद्मजी, सचमुच साहित्यक मर्म बुझनिहार मणिपद्म भेला। ओना, अपनो जिनगीक अनुभव आ दरभंगा जिलाक पुबरिया हिस्साक अखनो कि गति अछि ओइ अनुकूल हुनक सृजन छैन। बेछप साहित्यकार। एकभग्गू कविए मात्र नहि छला, लोकगाथाक मर्म बुझनिहारो छला। आठम दशक उर्वर होइक कारण यएह सभ छला। जहिना आठम दशकक उर्वरता छल तहिना नअम दशक उसराह बनैत गेल, बनियेँ गेल। मुदा तैयो साहित्यक धार बहिते रहल अछि। एकटा बात आरो, आठम दशक ओहन रहल, जइमे गाम-गाममे हराएल-भुतिआएल किछु साहित्यकार सेहो भेटला। मुदा अखनो बहुत हराएल छैथ। किछु हेराएलो गेला।

सगर राति दीप जरय, कथा गोष्ठीक आयोजनक अवधारणाक

जन्म किरणजीक जयन्तीक अवसरपर लोहना (धर्मपुर)मे एकत्रित साहित्यकारक बीच भेल। मुदा साकार भेल प्रभास कुमार चौधरीजीक माध्यमसँ। एकटा बात बीचमे, किरणजी सन खोद-बेद केनिहारक अवसर दोसर प्रभासजीक स्थापना। बेछप जिनगी, बेछप सोच, बेछप सृजन, बेछप नजैर प्रभासजीक। असीम जिज्ञासाक सम्वेदना रग-रगमे रमल छेलैन। जेकर परिचय जीवन्त रचना अखनो दाइए रहल छैन।

साहित्यकारक बीच सहमत बनल जे जहिना पंजाबी सहित्यमे 'दीवा जले सारी रात' कथा गोष्ठी भरि रातिक होइए, तहिना मैथिलीओमे हुअए। नब उत्साह नब जिज्ञासाक संग प्रभास भाय डेग उठौलैन। मनमे छेलैन जे साहित्यिक धारा समाजक संग चलए। मुदा किछुए साल पछाइत मरि गेला।

पहिल कथा गोष्ठीक आयोजन मुजफ्फरपुरमे भेल। ओतए प्रभासजी नोकरी करै छला। रेणुजीक अध्यक्षतामे गोष्ठी भेल। रेणुजी सेहो समाजकेँ निष्पक्ष ढंगसँ देखै छला। तइ दिनसँ अखन धरिक कथा गोष्ठी मैथिली साहित्यक धरोहर छी, पूजी छी। एक तँ कथा गोष्ठी, दोसर साहित्यक मुख्य विधा, तँए पहिल सन्तानो कहल जा सकैए।

पहिल कथा गोष्ठी जनवरी 1990 इस्वीमे भेल। पहिल गोष्ठीमे कथापाठ केने रहैथ, रमेशजी- "थाक", श्रीनिवासजी (शिव शंकर श्रीनिवास)- "वसातमे बहैत लोक", विभूति आनन्दजी- "अन्यपुरुष", अशोकजी- "पिशाच", सियाराम सरसजी- "ओहि साँझक नाम", प्रभासजी- "खूनी", रविन्द्र चौधरीजी सेहो कथा पाठ केलैन। तैबीच डॉ. नन्द किशोर जे एल.एस. कौलेजक नीक शिक्षक, हिन्दीमे कथा पाठ केलैन। मुदा दुर्भाग्य ईहो जे ओ मैथिलीभाषी रहितो हिन्दीमे पाठ केलैन। समीक्षको छैथ। कथाक समीक्षक रूपमे कथाकारक संग रमानन्द झा 'रमण'जी, भीम भाय (भीमनाथ झा), मोहन भारद्वाजजी, जीवकान्त, कथा पाठ जीवकान्त केलैन आकि नहि से जनतबमे नहि अछि। इत्यादि

समीक्षकक संग किछु दर्शको रहबे करैथ।

तेसर कथा गोष्ठीसँ पोथीक लोकार्पण शुरू भेल, जे बढ़ैत-बढ़ैत दरभंगा गोष्ठी शीर्षपर पहुँच गेल। एक संग पौंतीस-चालिसटा पोथीक लोकार्पण! निर्मली कथा गोष्ठीसँ पूर्ब धरि शीर्षपर रहल। निर्मली गोष्ठीमे पैंतालिस-पचासटा पोथीक लोकार्पण भेल। कथा गोष्ठीसँ कथाधारामे एक गति आएल, नब-नब रचनाकारक प्रवेश गोष्ठीमे होइत रहल, गोष्ठी आगू बढ़ैत रहल। मुदा गोष्ठीक बीच एकरूपता नहि रहल, केतौ एहेन आयोजन भेल जे साँझसँ भोर भेलो पछाइत कथाकारक कथा रहि जाइ छैन तँ केतौ अधरतियेमे बेवस्थापक चाह-पान समेट लइ छैथ, खाएर जे भेल। साहित्य गोष्ठी साहित्यकारक मंच छी। जइ मंचपर सभकेँ अपन विचार रखैक हक छैन। जखन सभ कियो मिथिलाक विकास चाहै छी तखन मत-मतान्तर किए? कथा गोष्ठीक संग कथा-विचार मंचोक तँ जरूरत ऐछे। लिखैक मानदण्ड, समीक्षाक मानदण्ड के बनौत? समयानुकूल दृष्टिये तँ समसामयिके ने जिम्मा भेल। समसामयिक रचनाकारक रचनाकेँ स्तरानुसार सिलेबसमे स्थान आवश्यक अछि।

दुनियाँमे पैघ-पैघ शिक्षण संस्थान जनसहयोगसँ चलि रहल अछि, की अपना ऐठाम नहि चलि सकैए? एकटा विश्वविद्यालय अछि, रेडियो स्टेशन अछि, ओ केना नीक जकाँ बढ़ि सकए, सबहक जिम्मा भेल। एकटा विश्वविद्यालय अछि, जे सोलहन्नी सरकार दिस तकैए, तहूमे लूटिक बाढ़ि छइहे, तइसँ केते आशा कएल जा सकैए। मिथिलामे पाइबला शिक्षण प्रेमी नहि छैथ, सेहो बात नहि अछि। गजेन्द्रजीक (गजेन्द्र ठाकुर) सम्पादनमे नागेन्द्रजीक (नागेन्द्र झा, श्रुति प्रकाशन) सहयोगसँ केते पोथी प्रकाशित भेल अछि ओ अपने-आपमे एकटा उदाहरण अछि। ओना, बेकतीगत रूपमे गजेन्द्रजीकेँ केना बिसरल जाए जे टैगोर पुरस्कारमे एँड़ी-चोटी एक केने छैथ। कोंचिन जाइ काल पटना एयरपोर्टपर अपन गाड़ीसँ पहुँचा सभ किछु देखा-सुना दुर्गानन्द मण्डलक संग विदा केलैन। स्पष्ट

सोच छैन जे आर्थिक दृष्टिये कमजोर रचनाकार लोकैनक रचना प्रकाशित करब। से करबो केलैन आ करितो छैथ।

अन्तमे, बेवस्थापक ओम बाबू (ओम प्रकाश झा) निर्मली गोष्ठीमे अपन गजल संग्रह नेने लोकार्पण करबए पहुँचला। ओना, किछ-किछ पहिनौंसँ बुझल छल मुदा चेहरा देखि झुझुआ गेलौं। किछु करैक जिज्ञासा तँ मनमे छैन्हे। ऐगला बात आगू, अखन तँ अशे धरि। अन्तमे, अन्हरा-अन्हरी माए-बापकेँ कन्हेठ जहिना श्रवणकुमार चारू धाम देखबए विदा भेला तही आशाक संग अपन दू शब्दमे विराम लगबै छी। धन्यवाद! जय मैथिली।

शुभकामना

आइ अध्यक्ष वा अन्य पदाधिकारीक चुनाव तँ नहियेँ भेल। ई नीक बात, तँए अध्यक्षजीक सम्बोधन केना करी, तखन विद्वतजन...।

आइ सौमा कार्यक्रमकेँ पाबैन हम-सभ मना रहल छी और ऐ पाबैनकेँ कोनो कार्यक्रम–जे साहित्यिक कार्यक्रम होइ वा राजनीतिक कार्यक्रम होइ–भार लेनिहारमे जखन ई भावना आबि जाइ छैन जे कार्यक्रम अप्पन छी, जँ केतौ त्रुटियो भऽ रहल हेन तँ ओकरा अनठबैत, कार्यक्रमकेँ अधिक-सँ-अधिक सफल केना बनाबी, नीक-सँ-केना बनाबी..; ई औझुका कर्यक्रमक स्पष्ट प्रमाण अछि। जे सबहक जिज्ञासा एहेन रहलैन जे कार्यक्रम सफल हुअए...!

ऐठाम पैघ-पैघ बहुत लोक सभ छैथ, पैघ-पैघ माने साहित्यिक क्षेत्रमे, साहित्यिक काज केनिहारक क्षेत्रमे...। आइ भाषाक दृष्टिकोणसँ अहाँ कहबै जे कि मैथिलीकेँ की जान छै? तँ एक्केटा शब्द हम कहब जे अंगरेजी डिक्सनरी लिअ और अहाँ मैथिलीमे, डिक्सनरी नइए जँ कियो लिखनौं छैथ तँ प्रकाशित जकाँ नइ भेल छै, भऽ सकै छै जँ गोटे-आधे प्रकाशित भाइयो गेल होइ तँ, हम नइ देखलिऐ हेन। जे एकटा, जैठाम

एकटा शब्द अंगरेजीमे छै तैठाम मैथिलीमे अहाँकेँ दर्जनो शब्द ओइ शब्दक छइ! एतेक समृद्ध भाषा मैथिली अछि। जनभाषा छिऐ। और ई धरतीसँ ऐ भाषाक जन्म भऽ रहलै हेन, आ हेतइ, आगूओ हेतइ। भाषाक जन्म और भाषाक विकास अवरूद्ध नहि कहियो हेतै, ओ समयक अनुकूल परिवर्तित होइत चल जेतइ! और बढ़ैत जेतइ...!

तँए भाषा कमजोर नइए। हँ, साहित्यक क्षेत्रमे भलेँ कहबै जे रचना हमरा सबहक कम अछि। और रचनो जे अछि ओइमे सभ विधापर...। समाजकेँ...। आइ, हम सभ अतीत दिस कनी बेसी बढ़ि जाइ छी, जे रचनाकारमे हमरा कनीक दोष बुझाइए। ई बात जरूर जे ओ इतिहास छी, ओ पुराण छी, ओ परमपरा छी..! मुदा ओकरा ओइ दयरामे राखए पड़तै। ओकरा अगर आइ हम वर्तमान वा भविष्यकेँ नजैरमे राखि कऽ जँ मनुक्खकेँ देखबै तँ ओ कल्याणकारी नइ हेतइ। कल्याणकारी लेल दुनू दिस देखए पड़त। ओइसँ अहाँकेँ सीख लिअ पड़त- अतीतसँ, मुदा ओकरे पूजा-पाठमे उताइर देबै, ओकरे हम भविष्य बनाकऽ ओही दिशामे बढ़ि जेबै तखन साहित्य अवरूद्ध भऽ जेतइ।

औझुका जे कार्यक्रम देखलौं हेन जइमे ठीके शिवकुमार बाबू कहलैन हेन जे "किछु गोरे ग्रूप बना कऽ..!"

मुदा नहि.., आइ जहिना एकठाम सभकियो एक विचारसँ, एक समस्याकेँ मानि कऽ, जे मैथिलीक कल्याणक सबाल अछि ऐ बिन्दुपर अगर जँ हम एकजुट भऽ अहिना आगू बढ़ैत रहब तँ मैथिलीक विकास, जे चाहै छिऐ, विकास तँ भाइये रहलै हेन आ हेबै करतै, ओ तँ विकासक एक प्रक्रिया छिऐ, ओ तँ समयक मांग छिऐ, ओ रूकतै नहि, भलेँ ओ मनथर गतिसँ होइ वा द्रूत गतिसँ होइ, तँए चाहब जे अधिक-सँ-अधिक कार्यक्रम अहाँक साहित्यमे हुअए, अधिक-सँ-अधिक हमसभ एकठाम भऽ कऽ अपन विचारक जे 'अदान-प्रदान' अछि ओ करैत रही। किए? आइ, मानि लिअ जे अहूँ नीक चाहि रहलिऐ हेन जे मैथिलीक कल्याण

होइ, हमहूँ चाहि रहलिऐ हेन जे मैथिलीक कल्याण होइ, तखन मतभेद केतए? फेर मतभेद केतए भऽ जाइए? सभ दृष्ट्रिकोणमे...।

ऐठाम जे इतिहास रहलै हेन, इतिहासे नहि रहलै हेन, जेकरा 'वैदिक बात' कहै छिऐ वा 'शास्त्रीय बात' कहै छिऐ ओहीमे दू दिशा भऽ गेलिऐ! सभठाम..!

आब, जेना ऐठाम ब्रह्मेक विषयमे लिअ, कियो अद्वैत मानलैन, कियो द्वैत मानलैन, कियो द्वैताद्वैत मानलैन, कियो विशिष्टाद्वैत मानलैन...। ढेरी तरहक विचारक जरूरत और ढेर तरहक मतवाद जे छै जे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। तँए ई सभ अलग बिन्दु अछि। मुदा मैथिली, जे अपना सबहक भाषा छी, अपना सबहक साहित्य छी, ई केकर छिऐ, केकरा-ले छिऐ? ऐ चीजकेँ नजैरमे राखि हम सभ मैथिलीकेँ दशा-दिशा दिऐ। और मैथिलीक प्रगतिक माने मैथिलीक भाषा कि मैथिली साहित्यक प्रगति नइ होइ छै, मिथिला समाजक होइ छै, हमर-अहाँक होइ छइ। ई कल्याणकारी बात ऐके भीतरमे छिपल छै, ऐपर हम सभ नजैर राखी और अहिना कार्यक्रम अनवरत चलैत रहए।

और दिलीपोजीकेँ हम आग्रह करबैन जे सघन कार्यक्रमक दिशामे.., अहाँ जेनरल हकार दियौ कोनो कार्यक्रम होइ, हम जेनरल हकार दिऐ कोनो कार्यक्रममे, अहिना जे कियो छथि, कमल बाबू छैथ। सभ कियो कार्यक्रम कऽ रहलौं हेन। नारायण बाबू छैथ, ईहो बहुत सक्रीय लोक छैथ, आ बहुत कार्यक्रम कऽ रहला हेन। सभकियो एकदम समान दृष्टिसँ, जेनरल दृष्टिकेँ अपनाए कऽ जे सबहक कार्यक्रम छी, सबहक चीज छी, हम सभ एकठाम बैसी। कियो आबैथ, कियो नइ आबैथ ऐमे तँ बहुत तरहक बात होइ छइ। केते गोरेकेँ कए तरहक समस्या भऽ जाइ छैन, कए तरहक समस्या उपस्थित भऽ जाइ छैन। एकर माने ई नइ हेबाक चाही जे एह! फल्लाँ रूसि रहला तँए फल्लाँ नइ एला..। नइ गलत बात! ई बात नइ हेबाक चाही। हम सभ एकजुट भऽ

कऽ अहिना जहिना मैथिली भाषा और साहित्यक झण्डा उठा कऽ आइ सौमा कार्यक्रम कऽ रहलिऐ हेन तहिना उठा कऽ फेर हम सभ ऐगला सौ केर बाद जे कार्यक्रम छै, और अनेको जे कार्यक्रम छै, ओइ सभमे अहिना सक्रीय बनल रही और अहिना कार्यक्रम चलैत रहए... ।

औझुका कार्यक्रमकेँ जे सफल बनेबाक लेल विद्वतजन एकठाम भऽ सौमा पाबैन मना रहल छैथ ऐ लेल हम बहुत खुशी छी और चाहब जे अहिना हमरा सबहक अनवरत गाड़ी चलैत रहए। अही आशाक संग हम अपन विचारमे विराम दइ छी। ❑

वेब प्रोग्राम, 29 जुलाई 2020

बीस-पचीस दिन पहिने कमलेश बाबू फोन केलैन जे, जइ दिनमे कलकत्तामे रहैत रही माने अस्सी-पचासी इस्वीमे, ओही दिनक पुरान संगी बम्बैमे रहै छैथ वएह एकटा कार्यक्रम शुरू केलैन अछि, एक घन्टाक वकतव्य अछि तइमे समय देब अछि।

एक तँ कमलेश बाबू अपन दम भरि सभ दिन मिथिला-मैथिलीक पाछू लागल रहै छैथ से जँ एकघन्टा कहलैन तँ एकघन्टा किए कतेको घन्टा समय हुनका दऽ सकै छिऐन। तइ संग ओ ईहो कहलैन जे हम सम्पर्कमे छी, जखन जेना विचार हएत तेना जानकारी दैत जाएब। बड़बढ़ियाँ...।

पुछलयैन जे एक घटना वकत्वयक लेल तँ किछु विषय निर्धारित केने हेता?

संयोग बनल, राजकुमार बाबूसँ गप भेल, गपक क्रममे बुझि पड़ल जे, अपन मातृभूमिक जिनगी भरिक सेवा एक्केबेर करए चाहि रहला अछि, तेते जिज्ञासा देखलयैन। तँए विषय नीक जकाँ स्पष्ट नहि भेल। खाएर, एते तँ मनमे खुशी जगबे कएल जे काल्हि जइ मजबूरीसँ मैथिल मिथिला छोड़ि अपन सेवा बाहर देलखिन आ आइ जँ अपन मातृभूमिक, मिथिला भूमिक सेवाक जिज्ञासा जगलैन तँ ई बेहद खुशीक बात छी। अपन पूर्वज कहने छैथ जे जे भरि दिनक हेराएल जँ कियो साँझुओ पहर घरपर आबि जाइ छैथ तँ ओ हेराएब नहि भेल।

बन्धुगण, आब कार्यक्रमक बीच आउ...।

आदरणीय मिथिला, मैथिली प्रेमी विद्वतवन्धुगण। ई बेहद खुशीक बात अछि जे मिथिला न्यूज लाइव चैनल द्वारा आयोजित साहित्यिक परिचर्चामे सभ कियो एकठाम भेलौं अछि। ऐ लेल राज कुमार झा, कृष्ण कुमार पत्रकार तथा कमलेश बाबूकेँ धन्यवाद।

बीच बजैक अवसर भेटल। तँए अपन विचारकेँ सोझरबैत- 'मिथिला जीवन'केँ आधार बना अपन विचार राखब। मिथिलाक...।

ओना, एकरा मूल प्रश्न मानल जाए, मुदा मूलक जे शाखा-प्रशाखा अछि, ओइपर विचार करी तँ बेसी नीक हएत। किए तँ जहिना दुनियाँ अथाह अछि, तहिना ने मिथिलो अछि, तँए एहेन प्रश्न समुद्र जकाँ जे साठि हजार बेटाबला सगरो (राजा सगर) केँ उपछल नहि भेलैन तखन असगर बुते केते उपछल हएत। मुदा समुद्रक पानि उपछैसँ पहिने ईहो ने सोचबै जे समुद्रक पानि उपैछ कऽ फेकब केतए। जखन कि सौंसे समुद्रे अछि। खाएर जे अछि से रहह। किछु खास बिन्दुपर अपन विचार राखब। ओ बिन्दु अछि मिथिलाक भौगौलिक बनावट, आर्थिक स्थिति, सामाजिक रूप आ दार्शनिक विचार विचार।

सभसँ पहिने मिथिलाक भूगोल माटि आ माटिक गुण-अवगुणपर विचार करब। पछाइत पानिपर बसल मिथिलाक जीवनपर। भौगौलिक दृष्टिसँ अपना सभ माने मिथिलावासी, गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानक बीच छी। अपना सभहक उतरबरिया सीमा पहाड़सँ आच्छादित अछि जे पूबे-पछिमे करीब तीन हजार किलोमीटर अछि। ओना, देशक नामपर बीचमे नेपाल सेहो अछि। मुदा नेपाल ओहन देश अछि, जइले ने पासपोर्टक जरूरत अछि आ ने रुपैआक चलैनमे केतौ बाधा अछि। ओना, सीमाकातक माने दुनू देशक सीमा कातक लोकक बीच कथा-कुटुमैती सेहो सभ दिनसँ चलिते आबि रहल अछि आ अखनो चलिये रहल अछि। अखनो फिल्म

उद्योगसँ जुड़ल उदित नारायण 'गायक' रूपमे प्रमुख छैथ, घर नेपालक सीमामे छैन आ मात्रिक माने ममहर अपना सबहक माने बिहारक सुपौल जिलामे छैन। जन्मो सुपौलेमे भेल छैन। तहिना धीरेन्द्र 'प्रेमर्षि' छैथ जे कान्तिपुर एफ-एममे कार्यरत छैथ। गायको छैथ, गीतकारो छैथ। अपनो देशक लोक सबहक खेत-पथार नेपालमे अछि आ नेपालबलाक सेहो छैन। बिराटनगरक कोइरालाक (जे नेपालक प्रधान मंत्री भेला) तिनको छैन। मैथिली क्षेत्रक अरड़िया जिलावासी फणिश्वर नाथ 'रेणु' जिनकर 'मैला आँचल' हिन्दीक प्रसिद्ध उपन्यास छिऐन, राजकपूरक फिल्म 'तीसरी कसम' रेणुजीक कथापर आधारित फिल्म छी। ओना, मिथिलांचलक साहित्य-प्रेमीक जँ चर्च करब तँ एक घन्टाक समय हुनका लोकनिक नामकरणेमे बीत जाएत, तँए अखन एतबे। सिर्फ कथा-पिहानीक रूपमे जे ॠृषि-मुनिक चर्च सुनै छी, तेतबे नहि अछि। हुनका सबहक एहेन जीवनकेँ नीक-सँ-नीक बनबैक दिशा छैन। जखन मिथिला दर्शनक चर्च करब तखन कहब।

गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानक बीच बसल मिथिला भूमि साइयो रंगक माटिसँ सजल अछि। जे मूल्यवान-सँ-मूल्यवान सेहो अछि आ लकड़ीक कोयला जकाँ खाख सेहो अछि। माने ई भेल जे किछु जमीनक माटि एहेन उर्वरशील अछि जइमे बीआ पड़िते आगि जकाँ धुधुआ उठैए आ किछु एहनो बाउल, उस्सर-बौक अछि जे उपजमे ऊस-सज्जीक संग उपजक नामपर मात्र कुशटा उपजैए। भलेँ ओ कुशेटा किए ने दिअए मुदा कुशो, एहेन गुणशील अछिए जे बैसैक ओछाइनसँ लऽ कऽ पितृ-पितृरानिक होथि आकि ब्रह्मा, बिष्णु, महेशक पूजा-अनुष्ठान हुअए अपन भागीदारी रखिते अछि।

मिथिला भूमिक जे योग अछि, ओ जहिना उत्तरमे हिमालय पहाड़सँ अछि, जे सुन्दर-सुन्दर उपजाउ माटिसँ सेहो भरल अछि जे बाढ़िक माध्यमसँ, पाँक रूपमे, अपना ऐठाम पसैर खेतकेँ उर्वरशील सेहो

बनैबते अछि। तइ संग बंगालक खड़ीसँ उठल बादल मौनसुन सेहो बनबिते अछि। ओना, मौनसुन बनबैमे सूर्यक गति मुख्य अछि किए तँ जखन सूर्य उत्तराण होइ छैथ आ साढ़े तइस डिग्री अक्षांशक कर्क रेखापर अबै छैथ तखन अपना सभकेँ बैशाख-जेठक गरमी होइए आ जखन सूर्य दक्षिणायन होइ छैथ माने साढ़े तइस डिग्री अक्षांसपर मकर रेखा बाइस दिसम्बरकेँ पहुँचै छैथ तखन अपना सभकेँ जाड़क मास होइए, जे जाड़क मौसम भेल।

पूबमे अरड़िया जिलाक परमान नदीसँ लऽ कऽ मोतीहारीक (पूर्वी चम्पारण) गण्डक नदीक बीचमे पाचासोसँ ऊपर छोट-पैघ धार (नदी) अछि। जे मिथिलांचलक उत्तरसँ प्रवेश करैए आ गंगा तक बहैए। मोटा-मोटी धार के तीन रूपमे देखि सकै छी। पहिल जे बारहो मास बहैए, दोसर रंगक छहमसिया अछि आ तेसर जे मात्र बरसाती अछि। नीक बरसात भेल तँ नीक जकाँ बहल नहि जँ रौदी भेल तँ सुखलक सुखले रहि गेल। सालो भरि बहैबला धार सेहो दू तरहक अछि, एकटा अछि शान्तसँ बहैबला आ दोसर भेल उग्र-अशान्तसँ बहैबला उपद्रवी। कोशी, कमला जहिना उपद्रवी अछि तहिना बागमती शान्त अछि जे एक्के स्थानपर कतेको वर्षसँ बहि रहल अछि। सी.एम. कौलेज दरभंगा जे अछि ओ बागमतीक एक महारमे कौलेज अछि आ दोसर महारपर छात्रावास छइ। धारमे रस्सा लागल नाह अछि ओकरा पकैड़ ऐ-पार, ओइ-पार होइए। यएह कौलेज आ होस्टल जँ कमलाधारक महारपर रहैत आकि कोशी धारक, तँ ई रूप थोड़े रहैत जे अखन सी.एम. कौलेजक अछि।

मिथिलांचलक पानि-झाड़ दाही आ रौदीसँ जे क्षति सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि, ओकरा बँचबैक खियालसँ भोगेन्द्रजीक नेतृत्वमे कम्युनिस्ट पार्टीक ओन्दोलन शुरू भेल आ तेज गतिसँ बढ़ल, हजारक-हजार आन्दोलनी जहल भोगलैन, मारि खेलैन, अपन परिवार बिलटौलैन जे कोशीमे नहर बनह, जइसँ बान्हल पानिसँ समुचित सिंचाइयो हएत आ

नूनथर-शीशापानी आ बराहक्षेत्रमे डैम बना पनिबिजली सेहो बनत जइसँ मिथिलावासीकेँ उद्योग क्षेत्रमे बढ़ैक अनुकूल समयो भेटत। आइसँ सत्तैर-अस्सी बर्खक जन-आन्दोलनसँ जन-गणकेँ की भेटल ओ सबहक बिच्चेमे अछि। चलू जएह भेटल ओ बीतल दिनक बात भेल आइ जे हम सभ दू हजार बीसक जुलाईमे एकठाम छी, माने एकैसमी शताब्दीक शुरूक बीसम बर्खमे, जे अपनाकेँ सभ तरहेँ सम्पन्न माने बौद्धिक क्षेत्रमे, बुझै छी, तइ बीच मिथिलांचलक जीवन की अछि तइपर विचार तँ अपने सभ ने करब। अपन माने मिथिलांचलक जे आर्थिक स्थिति अछि, आब हम-सभ ओइपर विचार करी। ओना, भौगौलिक जानकारीमे बहुत रास बात बाँकी रहि गेल, मुदा बान्हल समयमे भइये केना सकैए।

आर्थिक रूपमे अपन मिथिला कृषि आधारित जीवन रहल अछि। आजुक परिवेशमे किछु बदलल सन जरूर देखि पड़ैए, मुदा पूर्वजक जे स्थिति रहल अछि ओ एते बिसवासपूर्ण रहल अछि जे कण्ठ-कण्ठमे व्याप्त अछि- 'उत्तम खेती।' जीवनक सभसँ उच्च श्रेणीक वृत्ति अपनाकेँ मानैत आबि रहल अछि।

जीवनक लेल जे मुख्य आवश्यकता अछि ओ लोकैन माने पूर्वज खेतियेसँ पूर्ति करैत आबि रहला अछि। खेत, खेती आ खेतिहरक बीच जे समस्या अछि, हम ओइपर विचार करी। पहिने खेत, माने जमीनक, स्थितिपर विचार करी। मोटा-मोटी अपना ऐठा एगारहमी शताब्दीसँ जमीन्दारी प्रथा चलि रहल अछि। प्रथाक वृहद रूपमे चर्च करब, समयक हिसाबसँ सम्भव नहि अछि तँए मोट-मोट विचार रखै छी। कोनो गाम अछि जइमे गामवासी रहै छैथ, मुदा जे रहै छैथ हुनका गामक जे सम्पैतिक मूल खेत छी, तइपर सबहक अधिकार नहि छैन। माने भेल घर रहने तँ गाम अपन छी मुदा गामक जे उपार्जित सम्पैत अछि ओ अपन नइ छी। चलू जखन सरकारकेँ पाँच कट्ठा जमीन प्रति परिवारकेँ दइक दम नहि छै तखन अपना सभ तँ सहजे अपने सभ भेलौं, ओहुना भरि

दिन तीमन-तरकारी जोड़ैमे बेदम रहिते छी। देशक आजादीक आन्दोलनमे माने अंग्रेजी शासनक विरोधमे जे आन्दोलन चलल ओ 1935-36 इस्वी तक अबैत-अबैत एक डेग आगू आरो उठौलक। लखनऊ अधिवेशनमे गाँधीजीक उम्मीदवार सितारम्मैया चुनाव हारि चुकल छला आ सुभाष बाबू जीत चुकल छला। माने भेल जे रूढ़वादी नेतृत्वक खिलाफमे प्रगतिवादी विचारक वर्चस्व बनल। जइसँ बकास्त जमीन आन्दोलनमे सेहो जोड़ल गेल आ जमीनक आन्दोलन शुरू भेल। पछाति आरो बढ़ैत बेलगान, सिकमी, बटाइ होइत हदबन्दी कानून तक पहुँचल। माने सिंचित भूमि बीस बीघा आ असिंचित तीस बीघासँ ऊपर एक परिवारमे नहि रहि सकैए। मुदा अखनो गामक जमीनक की रूप अछि ओ सभक सोझामे अछि, जे विचारणीय अछि। पछिला जीवनक विचारसँ आगू बढ़ैत आइ हम की देखि रहल छी, जहिना बेटा-बेटीक बिआहमे दान-दहेज जे कहियो माने पहिलुका मिथिलामे, पाप मानल जाइ छल आइ ओ धर्म बनि समाजमे हँसैत चलि रहल अछि। निर्लज जकाँ पिता बजबे करै छैथ जे एगारहे लाख भेटल। लड़का तँ करोड़क अछि। यएह छी मैथिलक बीच हार्दिक प्रेम, जे विचारकेँ घरक पैछला सीकपर रखि टटका दही मटकूरमे पौड़ै छैथ।

भाय बन्धु, विचार थोड़े दोसर दिस आगू बढ़ि गेल मुदा जे विचार करए बैसलौं तइमे जमीनक तँ किछु विचार उठल, मुदा आजादीक बाद जे भूदान आन्दोलन विनोवाजी शुरू केलैन आ देशेक जमीन्दार जे देशे दानमे दऽ देलैन, तइ दनिया जमीनक की हाल अछि, से तँ बमबईयोमे रहनिहार आ दिल्लियोमे रहनिहार जखन पाँच गज जमीन घर बनबै दुआरे कीनैले जाइ छी, तखन बुझबे करै छी। आर्थिक स्थितिपर आरो बहुत रास बात अछि। जेना बाढ़ि-रौदीक प्रकोप। दुनूक माने बाढ़ियो आ रौदियोक तीन-तीन रूप अछि। तीनूक क्षति सेहो अपन-अपन अछि। तीन रूप भेल, कम रौदी वा दाही, आंशिक, मध्यम रौदी वा दाही माने

आधा-छिधा आ सोलहन्नी। जहिना बाढ़ि-रौदीक दंश अछि तहिना धारसँ कटान आ गामक गामकेँ उजड़ब सेहो अछिए। नीक-सँ-नीक जमीन माने नीक उपजबला जमीन (उर्वरशील भूमि) बालुसँ भरि गेने मरणशील बनि गेल अछि। खाएर जे अछि से अछि, हाथ-पएरक प्राण निकैल गेल तँ निकैल जा मुदा कण्ठमे तँ प्राण बँचल अछि। एते तँ विचारो कइये सकै छी जे मिथिलांचलक जीवन केना आगू बढ़त।

मध्ययुगमे माने चौदहमी-पनरहमी शताब्दीमे तुलसी बाबा विनय पत्रिकामे अपन समाजक दिग्दर्शन करौने छैथ जे- 'खेती ने किसान, भिखारीकेँ ने भीख भेटै, वणिककेँ माने बेपारीकेँ बेपार नहि, चाकरकेँ ने चाकरी.. ।' जइसँ एक-दोसरकेँ कहैत जे, माए केतए जा की करबह।

आइसँ पाँच-छअ साए बर्ख पूर्वक समाजक चित्र छी। खाएर जे छी तइ दिनक छी, जखन मुसलमानी शासन छल तइ दिनक बात भेल। मुदा अखन तँ हम सभ स्वतंत्र देशक नागरिक छी। तँए हमरा सभकेँ स्वतंत्र ढंगसँ विचार करैक अधिकार भइये गेल अछि।

आजुक परिवेशमे गाम-गाममे एकटा नव समस्या सेहो विकराल रूपमे ठाढ़ भेल अछि। ओ अछि जे गाम-गाममे जे बान्ह-सड़क बनल अछि, ओइमे दुर्दशिताक अभाव रहने पानिक निकास अवरूद्ध भऽ गेल अछि, से केवल एक गाम वा एक जिलामे नहि, सौंसे मिथिलांचलमे एहेन स्थिति बनि गेल अछि। गाम-गाममे एहेन समस्या विकराल रूपमे ठाढ़ भऽ गेल अछि, जइसँ गामवासीकेँ जे समस्या उपस्थित भेलैन अछि ओ गाम-गामक लोक देखियो रहला अछि आ भोगबो तँ कइये रहला अछि। एक तँ ओहिना मिथिलांचल धार-धुरसँ आक्रान्त अछि, तैपर एक-तिहाइ जमीन, चौर-चाँचर अछि, जेकर उपजाक कोनो भरोस नहि।

आब, हम सभ सामाजिक स्थितिपर विमर्श करी। अखन तक जे मनुष्यक विकासक प्रक्रिया रहल अछि, ओ अगुआएल-पछुआएल

अछिए। मुदा तइ दिस नहि बढ़ि मात्र-दू बिन्दूपर हम सभ विचार करी। पहिल, गाममे बनल जाति-बेवस्था आ दोसर, धर्म-बेवस्था।

अनगिनित जाइतिक रूपकेँ मोटा-मोटी तीन श्रेणीमे विभक्त करैत आगू बढ़ै छी। पहिल, उच्च कोटिक जाति, जे सभ तरहेँ सम्पन्न छैथ। माने जहिना शिक्षाक क्षेत्रमे छैथ तहिना आर्थिक क्षेत्रमे सेहो छैथ। मुदा अहू बीचमे भेद नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो अछिए। जहिना कहलौं शिक्षा आ सम्पैतमे आगू छैथ तहिना दुनूसँ माने शिक्षो आ सम्पैतिसँ सेहो अधिकांश लोक पछुआएल सेहो छैथ। अखन एतबे।

दोसर श्रेणीक अनेको जातिक जे विशाल समूह छैथ, जे समाजमे अछुत तँ नहि मानल जाइ छैथ, मुदा जीवनक दृष्टिसँ माने जीवन स्तरक दृष्टिसँ पछुआएल नहि छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। आ तेसर श्रेणीक जे जाति छैथ हुनका अछुत-अछोप बुझले जाइ छैन। जे आनो मानै छैथ आ अपनो मानबे करै छैथ। गरीबी ऐ रूपे हुनका सबहक जीवनकेँ तोड़ि देने छैन जे आजादीक सत्तैर-बहत्तैर बर्खक बादो विद्यालयक दीया (प्रकाश) अखन तक नहि पहुँच पेलक अछि। आर्थिक दृष्टिये सेहो तहिना छैथ। जे सबहक सोझेमे छैथ।

भाय लोकैन, समय निर्धारित अछि कहैक बहुत बात अछि, समयक अतिक्रमणसँ सेहो बँचैक अछि। तँए, एक-दूटा बिन्दूपर नजैर बढ़बैत आगू बढ़ब।

1. मैनजनी पद्धति, माने समाज, जाइतिक समाज, चलैक पद्धति।

2. धार्मिक पद्धति, एक जातिसँ दोसर जाइतिक बीच आर्थिक, सामाजिक-धार्मिक सम्बन्ध।

1. मैनजनी पद्धतिकेँ दू दृष्टिये देखै छी, पहिल वैचारिक माने नैतिक दृष्टिये आ दोसर समाजमे चलैत बेवस्थाक दृष्टिये।

वैचारिक दृष्टिये नीक अछि। समाजमे जाधरि निश्चित बेवस्था बना नहि चलब, ताधरि अराजकताक स्थिति बनैक सम्भावना रहै छइ। अखन एतबे। दोसर जे मैनजनी बेवहारिक रूपमे जाति-जातिक बीच अछि, ओ शासन व्यवस्थाक आधारपर अछि, जइसँ बहुतो रोग-व्याधिकेँ अपना पेटसँ जनमेबो केने अछि।

3. दोसर अछि धामिक पद्धति। ओना, हिन्दुक नाओंपर किछु देवी-देवता सर्ममान्य छैथ, मुदा तइसँ हटि जाति-जाइतिक बीच सेहो अपन-अपन देवी-देवता छैन जिनका दोसर जाति थोड़-थाड़ मानबो करै छैथ, थोड़-थाड़ नहियोँ मानै छैथ आ थोड़-थाड़ विरोध सेहो करिते छैथ। जेकर फलाफल देखिते छिऐ जे देवी-देवताक चढ़ौआ परसादसँ छुत मानल जाइते अछि। अखन एतबे।

4. आब चलू समाजक बीच एक-जातिसँ दोसर जातिक बीच आर्थिक सम्बन्ध केहेन अछि। मुदा तइसँ पहिने एकटा बात आरो कहि दी जे सभ गामक बनावट, जातियोक हिसाबसँ आ रकबो माने जमीन-जयदादक हिसाबसँ सेहो एकरंग नहियेँ अछि, जइसँ एक ढाँचाक चलैन सभ समाजमे चलैत आबि रहल अछि। मोटा-मोटी यएह बुझू जे लेन-देनक जे प्रथा छल ओ अन्नक सवाइयो माने एक मनक सूदि एक धारा सवाइ छल, माने कुल धनक चौंथाइ छल, तँ कोनो गाममे दू धारा माने डेढ़िया सूदिक चलैन छल। तहिना रुपैआक सेहो, चौंसैठ पाइक रुपैआमे, कोनो गामोमे आ गामक जातियोमे, दू पाइसँ लऽ कऽ चारि आना माने चौथाइ तक सूदिक चलैन छल। तहिना आरो-आरो विसंगति एक-दोसर गामक बीच अछिए। से सभ अखन नहि। आब चलू दर्शनमे।

दर्शनक मूल अर्थ अछि देखब। देखैक लेल तँ बड़ीटा दुनियाँ अछि आ ओइमे बहुत चीज अछियो। तँए अखन ओइ दिस बेसी दृष्टिपात करब सम्भव नहि अछि। तँए, मुड़कुट्टीमे कहि दइ छी। मिथिलाक दर्शन ओ छी, जइमे वस्तुसँ लऽ कऽ भाव (विचार) तककेँ निचोड़ैत-निचोड़ैत

जहिना तिलकोरक पातकेँ, जेकर गिनती सागोमे ने होइए, फलो तीते होइ छै, भलेँ पकलापर सुग्गा लोल मारि-मारि किए ने खाए, ओहन भोज्य विन्यास बना उच्च कोटिक श्रेणीमे पहुँचा देल गेल अछि, ओ अहिना थोड़े भेल। एक कट्ठा खेतक बले अयाची मिश्र जीवन भरि ज्ञान-दान करैत रहला, ओ अगुआएल दृष्टि छल कि अन्होनी आकि कोनो बरदान। चलू आइ एतबे, समय भेटत भरि पेट विमर्श करब।

आब अपन साहित्य सेवा। ओना, सेवो कतेको रंगक अछि, जेना समाज सेवा, साहित्य सेवा आदि-आदि अनेको अछि। बीसम सदी बितला पछाति लिखब शुरू केलौं पहिल किस्तक पोथी 2009 इस्वीमे गजेन्द्रजी आ नागेन्द्र बाबूक आ नूतन झाजीक सहयोगसँ प्रकाशित भेल। पोथीक की गति अछि ओ रचनाकार सभ बुझै छैथ। परसू एकटा उपन्यास 'सुचिता' सम्पन्न भेल। अखन तक कथा 700, उपन्यास कविताक संग गीत, नाटक आ एकांकी सेहो अछि। नमस्कार..! ❑

भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा

भाय राजनन्दन लाल दासजीक जन्म दरभंगा जिलाक गोनौन गाममे पाँच जनवरी उन्नैस साए चौंतीस (1934) इस्वीक दिन स्व. मनीलाल दासक परिवारमे भेलैन। माता स्व. विद्या देवी छेली। ओना, एहनो तँ कहले जा सकैए जे पैछला भुमकम साल राजनन्दनजीक जन्म भेलैन।

गोनौन गामकेँ जनने बिना राजनन्दनजीकेँ जानब किछु खोर रहबे करत, तँए पहिने नव पीढ़ीक जे खोजी छैथ हुनक धियान दरभंगा जिलाक भौगोलिक बुनावटिपर दिअ चाहै छी। ओना, दूटा बात पहिनहि कहि दइ छी, पहिल- 1972 इस्वीक पूर्वक दरभंगा जिला कटिकऽ समस्तीपुर, मधुबनी आ दरभंगा जिला बनल अछि। दोसर, 1960 इस्वीसँ पूर्वक गाम आ साठि इस्वीक पछाइत गामक रूप-रेखा।

अपन दरभंगा जिलाक अन्तर्गत दर्जनो नदीक बहाव अछिए। जे मधुबनी, आइ अलग जिला अछि, जइमे दू दर्जनसँ ऊपर छोट-पैघ नदी अछि। जखन सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर जिला) सँ पश्चिम, चंपारण जिलाक पूर्वी चम्पारण जेकरा मोतीहारी सेहो कहै छिऐ, तैठाम तक पहाड़ी नदी, माने नेपालक पहाड़क नदी, घुमैत-फिड़ैत दरभंगा जिलामे आबिये गेल अछि। अपना सभ सेहो मानिते छी जे मोतीहारी तक अपन मैथिली भाषी क्षेत्र अछि।

1960 इस्वीसँ पूर्वक गाम आ 1960 इस्वीक पछातिक गाममे बहुत दूरी बनि गेल अछि। साठि इस्वीक पछाइत जहिया कोसी-कमलामे बान्ह-छहर बनल तहियासँ गामक मुँह-कान बिगड़ए लगल, जइसँ गामक स्वरूपेँ बदैल गेल। अपन सभक जे भूमि अछि जेकरा 'गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान' कहै छिऐ ओकर ढाल उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ अछि।

साठि इस्वीक पूर्वक जहिना आन-आन गाम सुन्दर छल तहिना गोनौन सेहो सुन्दर गाम छल। सुन्दर गामक माने भेल गाछी-बिरछी, नदी-नालासँ सम्पन्न गाम। बाढ़िक प्रकोप जँ हेबो करै छल तँ ओकर आयु मात्र अढ़ाइ दिन बान्हि देल गेल छल। माने भेल जे केहनो नमहर बाढ़ि किए ने हुअए ओ अढ़ाइ दिनक पछाइत घटए लगैए। माने भेल जे कमसँ कम नोकसान हएब।

जहिना गरीबी अपना ऐठाम सभ दिनसँ रहल तहिना जनसंख्याक वृद्धिक नीक गति सेहो सभ दिन रहबो कएल अछि आ अखनो अछि। गरीबीक कारणेँ अपना ऐठामक लोक, माने छपरा-सिवान तकक लोक, नेपालसँ आसाम, बंगाल तक काज करए तहियो जाइ छला आ अखनो जाइ छैथ।

गामसँ मैट्रिक पास केलाक पछाइत 1949 इस्वीमे राजनन्दन लाल दासजी सेहो कलकत्ता गेला। तहियाक कलकत्ता आइ कोलकाता बनि गेल अछि। कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ 1960 इस्वीमे राजनीति शास्त्रसँ एम.ए. केलैन। पछाइत प्राइवेट कम्पनीमे मार्केटिंगक रूपमे सत्ताइस वर्ष धरि नोकरी केलैन।

कौलेजे जीवनसँ राजनन्दन लाल दासजी सामाजिक-साहित्यिक संस्था सभसँ जुड़ि अनवरत सक्रिय रहला। ओना, शुरूमे माने हाइ स्कूलक जीवनमे हुनकापर समाजवादी पार्टीक नेता- जयप्रकाश बाबू, सूरजबाबू इत्यादिक प्रभाव पड़ल छेलैन जइसँ समाजवादी पार्टीक

समर्थक बनि काजो करै छला। 1952 इस्वीक चुनावमे जय प्रकाश बाबूक हारक प्रभाव राजनन्दन लाल दासजीक मनपर बहुत अधिक पड़लैन।

कलकत्ताक (कोलकाता) प्रवास जीवनमे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीसँ प्रभावित भऽ लाल कार्डधारी सदस्य 1967 इस्वी तक रहला।

एम.ए. केलाक पछाइत जीविकोपार्जन लेल भाय राजनन्दनजी सेल्स मैनेजमेन्ट एण्ड मार्केटिंग रिसर्चक ट्रेनिंग लेलैन। पछाइत अनेको कम्पनीमे काज केलाह जइसँ अपन देशक संग नेपालोक भ्रमण नीक जकाँ केलैन।

कोलकाता ओहन महानगर अछिए जैठाम दुनियाँक सभ देशक लोको आ सभ भाषो अछिए। साहित्य आ संस्कृतिक केन्द्र सेहो कोलकाता छीहे। विश्वभारती सन संस्थान तपस्वी मनीषी रवीन्द्रबाबूक स्थापित कएल अछिए। हिन्दीक महान समीक्षक आ उपन्यासकार डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी सन सृजक बंगालेमे रहि सृजन केलैन।

मिथिलाक सेहो एक-सँ-एक महान् विभूति मनीषी बंगालेक धरतीपर साधना केलैन अछि। जेकरे फलाफल मैथिली भाषा साहित्य सेहो छीहे। विश्वमे सभसँ पहिने, माने उन्नैस साए उन्नैस (1919) इस्वीमे मैथिली भाषा साहित्यक स्नात्कोत्तरक (एम.ए.) अध्यापन कलकत्ते विश्वविद्यालयमे शुरू भेल।

विद्याव्यसनी राजनन्दन लालजीकेँ एतए बहुतो मातृभाषानुरागी लोकनिक साहचर्य प्राप्त भेलैन। बाबू साहेब चौधरी आ सत्यनारायण दासक तँ दहिने हाथ रहला। जेकर फलस्वरूप छात्रावस्थाहिमे कविवर सीताराम झाजीक (1891-1965) सुप्रसिद्ध पाँति- 'पढ़ि-लिखि जे ने बजैछ हो निज मातृभाषा मैथिली, मन होइछ झिटुकी सँ तेकर हम कान दुनू ऐँठि ली।' सँ अतिशय प्रभावित भऽ हिनको माने राजनन्दनजीकेँ,

हृदयमे मातृभाषानुरागक पुष्प धीरे-धीरे प्रस्फुटित होइत गेलैन। शुरूहेसँ माने नोकरी-जीवनक शुरूसँ, जखन केतौ बाहर जाइ छला तखन अपन काज निपटा, अपन देश-कोसक लोककेँ भाँज लगबै छला। जइसँ मणिपुरसँ लऽ कऽ कश्मीर तक अपन गौंआँ-घरूआ आ अपन बोलियो-वाणी भेटिये जाइ छेलैन। ओना, बोली-वाणी जे भेटैत होनु मुदा एकटा मैथिलक जीवन तँ भेटिये जाइ छेलैन। जइसँ मिथिला आ मैथिली भाषा-साहित्यक प्रति अनुराग बढ़िते गेलैन।

पण्डित देवनारायण झा आ कामरेड पीताम्बर पाठकक संग सम्पर्क भेलाक फलस्वरूप 1958 इस्वीमे मिथिला सांस्कृतिक सम्मेलनमे राजनन्दन लाल दासजी अपन पूर्ण सक्रियता देखौलैन।

1942 इस्वीक 'भारत छोड़ो आन्दोलन'मे जखन राजनन्दन भाय पाचम कक्षाक छात्र रहैथ, पंडौल मिड्ल स्कूलमे पढ़ैत रहैथ तहिये एक बाल स्वतंत्रता सेनानीक रूपमे काज शुरू केलैन। छात्रावस्थाहिसँ विभिन्न राजनीतिक दलसँ राजनन्दन लाल दास अतिशय प्रभावित छला। कोलकाता प्रवासक दौरान वामपंथी राजनीतिसँ प्रभावित भऽ भारतीय कम्युन्स्ट पार्टीक राजनीतिमे कूदि पड़ला आ ओकर विविध गतिविधिमे अपन सक्रिय सहभागिता देब प्रारम्भ केलैन। तइ संग ईहो भारी गुण आबि गेल छेलैन जे अपन शान्तिपूर्ण पारिवारिक जीवन सेहो जीबै छला। यातना आ संघर्षसँ भरल पूर्व पुरुखाक जीवन यात्रा हिनका लेल संजीवनी बनल रहलैन।

मिथिला मैथिली विकासार्थ राजनन्दन लाल दास सदैत कार्यरत रहि सभसँ पहिने 'मिथिला दर्शन' मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे अपन अपरिमित सहयोग देब प्रारम्भ केलैन। ऐ पत्रिकाक स्वामीत्व आ सम्पादनक दायित्व छेलैन स्वर्गीय प्रबोध नाराण सिंह (1924-2005) केँ। पछाइत जा कऽ मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड कम्पनीक स्थापना भेल। जइमे चेयरमेन भेला स्व. प्रवोध नारायण सिंह, मैनेजिंग डायरेक्टर

भेला उदित नारायण झा आ कम्पनी सेक्रेटरी भेला राजनन्दन लाल दास। आपसी विवादसँ पत्रिका किछु दिनक पछाइत बन्न भऽ गेल।

संघक विवादक आहतसँ 1966 इस्वीमे एकटा नव संस्थाक स्थापना केलैन 'ऑल इण्डिया मैथिल संघ', जेकर अध्यक्ष महावीर झा आ सचिव भेला राजनन्दन लाल दास। ओना, हिनका हृदयमे, माने राजनन्दन लाल दासक हृदयमे, अपन भाषा-साहित्यक अनुरागक धारा प्रवल रूपमे प्रवाहित होइते रहैन। अग्निजीवी पत्रिका 'आखर'क प्रवेशांक 1967 इस्वीक दीपावलीक अवसरपर प्रकाशित केलैन। किछु अंक प्रकाशित भेला पछाइत, आपसी विवादसँ ईहो पत्रिका बन्द भऽ गेल।

पत्रिका बन्द भेला पछाइत राजनन्दनजीक भाषानुरागी मन छटपटा गेलैन। ओही समयमे एकटा सामाजिक ओ साहित्यिक संस्था 'कर्णगोष्ठी' 1963 इस्वीमे स्थापना भेल। जेकर स्थापनाकालहिसँ राजनन्दन लाल दास सक्रिय विरोध केलैन। हुनकर मन मानि रहल छेलैन जे ऐसँ जातिवादी मानसिकताकेँ बढ़ावा भेटत। गोष्ठीक पहिल स्मारिका प्रकाशित भेल 1974 इस्वीमे। जइमे ई माने राजनन्दन लाल दास, कर्ण-कायस्थक वैवाहिक समस्यापर एकटा जोरदार लेख लिखलैन, जे प्रकाशित भऽ ओहीमे पत्रिकामे संग्रहित अछि। वैचारिक मतभेद चलैत रहल। किछुए बर्खक पछाइत ओ कर्णगोष्ठीसँ सम्बद्ध भेलापर 1981 इस्वीमे 'कर्णामृत' पत्रिकाक शुभारम्भ भेल, जेकर प्रधान सम्पादक अर्जुनलाल करण आ सहयोगी सम्पादक भेला राजनन्दन लाल दास।

मार्केटिंग कार्यसँ जुड़ल राजनन्दन लाल दास नेपालसँ लऽ कऽ भारतक कोण-कोणक भ्रमण करिते छला। जइसँ 'कर्णामृत' पत्रिकाक प्रचार-प्रसार हेबामे नीक संयोग बनल। पत्रिकाक आजन्म ग्राहक तीन साएसँ ऊपर अछि, जइसँ आर्थिक स्थिति सेहो बढ़ियाँ बनाइये लेलैन। मिथिला-मैथिलीक दुर्भाग्य रहबे कएल अछि जे अर्थक अभावमे केते नीक रचनो आ केते नीक पत्रिको असमये कालकवलित भइये गेल

अछि।

पत्रिकाक संग-संग साहित्यिक जनजागरणकेँ राजनन्दन लाल दासजी ध्यानमे राखि अनेको साहित्यिक पोथी सेहो प्रकाशित केलैन। जइमे उपन्यास, कथा, कविता, नाटक, लोकगाथा, संस्मरण, समालोचना इत्यादि विभिन्न विधाक पोथी सभ प्रकाशित भेल अछि। जइमे 'अर्द्धनारीश्वर' (1981), 'साहित्यरत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास : व्यक्तित्व ओ कृतित्व' (1983), 'नागभूमि' (1985), 'तेसर कनियाँ' (1986), 'मैथिलीक दधीचि बाबू भोला लाल दास' (1991), 'अनंग कुसमा' (1999), 'नाट्यरूप फुटपाथ' (2001), 'उत्तर जनपद' (2003), 'आदिम गुलाम' एवं 'कनकी' (2003), 'मणिकण' (2003), 'हुनकासँ भेँट भेल छल' (2004), 'प्रपाणिका' (2005), 'भारतीक बिलाड़ि' (2005), 'मैथिली लोक गाथाक इतिहास' (2005), 'जिजीविषा' (2005), 'अग्नि शिखा' (2005), 'चित्रा-विचित्रा' (2005), 'खोहक अन्हार' (2005) आ मणिपद्म (ब्रज किशोर वर्मा) जीक बीछल कथा (2005) इत्यादि महत्वपूर्ण पोथी सभ अछि। जीवनक अन्तिम सीमा धरि राजनन्दन लाल दास भाषा-साहित्य लेल अपनाकेँ समर्पित केने रहला।

राजनन्दन भाइक स्मरणशक्ति गजब छेलैन। बजैक क्रममे एहेन कार्यक सूत्रवाक्य बाजि दइ छला जेकर जबरदस्त प्रभाव सुननिहारपर पड़ैत छल। बजैक शैली एहेन जे मुहावरा, कहावत आ गमैया बोली अपने-आप प्रकट होइत रहै छेलैन। जइसँ सुननिहारकेँ आकर्षण बढ़िये जाइ छेलैन। केहनो परिस्थिति किए ने राजनन्दनजीक सोझामे अबैन मुदा कखनो ओ विवेकहीन नहि होइ छला। समाज आ साहित्यक प्रति तेना समर्पित छला जे कखनो मनसँ समर्पित भावो आ विचारो हटबे ने करैन।

राजनन्दन लाल दास मिथिलासँ बाहर जीवन बितौलैन मुदा कोलकाता प्रवास रहितो जइ रूपेँ मैथिलीक सेवा केलैन ओ कहियो

बिसरल नहि जा सकैए। भाषा-साहित्यसँ अगाध मोह, जीवन-जगतक गम्भीर अनुभव भरल छेलैन। कोलकातेक प्रवासक जीवनमे भाषा-शैली आ दृष्टिनिर्माणक समुचित विकास भेलैन। राजनन्दन लाल दास खाली योजनाप्रिय नहि छला, ओइ योजनाकेँ धरतीपर आनि क्रियान्वित केना कएल जाए, तहू लेल सदैत चिन्तित रहै छला। अपन सीमित साधनक बीच केना कोनो सांगठनिक दायित्वकेँ निमाहल जाए, तेकर विशेष अनुभव छेलैन।

हिनके माने राजनन्दन लाल दासेजीक सक्रिय सहभागिताक फलस्वरूप 'मैथिली संग्राम समिति'क संगठन 1967 इस्वीमे भेल। जेकर अध्यक्ष उदितनारायण झा आ मंत्री भेला राजनन्दन लाल दास। मैथिली संग्राम समिति मैथिलीक मान्यताक लेल विविध मांगक हेतु केन्द्र आ बिहार सरकारक मंत्रीकेँ सेहो घेराव कऽ कतेको बेर स्मारपत्र देलकैन।

1981 इस्वीसँ माने जहियासँ 'कर्णामृत' पत्रिकाक आरम्भ भेल, तहियासँ जीवनक अन्तिम समय तक राजनन्दन लाल दास अपन मानवीय दायित्वक निर्वहन केलैन।

पत्रिकाक संग-संग मेघावी आ निर्धन छात्रक लेल 'योगेन्द्र स्मृति छात्रवृत्ति कोष', प्रतिभाशाली रचनात्मक मैथिली लेखनक निमित्त 'श्रीमती सीतावती स्मृति मैथिली सम्वर्द्धन कोष' एवं उत्कृष्ट कलाक प्रोत्साहनार्थ 'श्रीमती रासोदेवी स्मृति कला सम्वर्द्धन कोष' इत्यादि बनबैमे भरपूर सहयोग केलैन।

1985 इस्वीसँ 'कर्णामृत पत्रिका' मे शारदीय अंक राजनन्दन भाय बढ़ौलैन। जइ माध्यमसँ प्रमुख रचनाकार सभक विशेषांक 'शारदीय अंक' करिकऽ सेहो निकालब शुरू केलैन। जइक अन्तर्गत (1.) राधाकृष्ण चौधरी स्मृति अंक (1986), (2.) मणिपद्म श्रद्धाजलि अंक (1986), (3.) किरण स्मृति अंक (1989), (4.) मिथिला विभूति अंक (1992),

(5.) जगदीपनारायण चौधरी दीपक स्मृति अंक (1993), (6.) श्रीकान्त मण्डल स्मृति अंक (1994), (7.) आरसी प्रसाद सिंह स्मृति अंक (1997), (8.) प्रभास कुमार चौधरी स्मृति अंक (1998), (9.) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' स्मृति अंक (1999), (10.) मणिपद्म स्मृति अंक (2000), (11.) महाकवि लाल दास स्मृति अंक (2001) इत्यादि अनेको विशेषांक अनवरत निकालैत रहला।

श्रद्धाक संग भाय राजनन्दन लाल दासजीक समर्पण, साहस, निर्भिकपन आ पीतमरूपनकैं आदर करैत आशा करै छी जे अही उतारक सम्पादक 'कर्णामृत' पत्रिकाकैं भेटत। ❑

‘विदेह ई-पत्रिका’क सम्पादक-
श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक प्रश्नक जवाब

गजेन्द्र ठाकुर- *विदेह सम्मान लेल अपनेकेँ बहुत-बहुत बधाई...*

ज.प्र.मं.- हेराएल-भोतियाएल रचनाकारक खोज-खबैर लेबा लेल विदेह परिवारकेँ धन्यवाद।

गजेन्द्र ठाकुर- *अपनेक नजैरमे साहित्यक उदेस की अछि?*

ज.प्र.मं.- अधिकांश विद्वानक विचारे साहित्य समाजक दर्पण थिक। जइ दर्पणसँ देखै छी ओ तँ खाली (सिरिफ) कोनो वस्तुक ऊपरी भाग देखबैत अछि। मुदा शरीरक भीतर जे मन, बुइध, विवेक, आत्मा अछि ओ तँ नहि देखबैत अछि। मनुक्ख निर्मित साहित्य होइत अछि तँए दुनूकेँ मिला देखबैत अछि। साहित्य जीवन दर्शन छी जे अतीतसँ भविष्य धरिकेँ जोड़ैत अछि। तँए साहित्यक उदेस महान अछि जे मनुक्ख-मनुक्खक बीच, बेकती-समाजक बीच प्रेमसँ जीबैक दिशा-निर्देश करैत अछि। वएह दिशा-निर्देश साहित्यक उदेस छी।

गजेन्द्र ठाकुर- *अहाँक साहित्यमे इतिहास/संस्कृति (खास कऽ मिथिलाक) केना वर्णित होइत अछि?*

ज.प्र.मं.- अपन मिथिलांचल सभ दिनसँ कृषि प्रधान रहल अछि। ओना, इतिहासक पन्नामे कृषि युगसँ पहिनौं शिकारी युग आ जंगली अवस्थाक चर्च अछि। से सिरिफ इतिहासेमे नहि, सचमुच जिनगियो रहल अछि। राजा रहितो जनक हर जोतलैन, जे कृषिक महत्वकेँ दरसबैत अछि। शुरूहेसँ मिथिलांचलमे बाहरी संस्कृतिक आक्रमण होइत रहल अछि। जइसँ ऐठामक अपन संस्कृति टुटैत-झुकैत रहल अछि। रूप-विद्रप होइत रहल छइ। मुदा तैयो रिआइतो-खिआइतो जीवित रहल अछि। हम ओइ किसानी संस्कृतिकेँ अपन संस्कृति मानि चलै छी। जे कल्याणकारीक संग-संग प्रेम, भाय-चाराकेँ मजगूत बनबैमे सेहो सहायक अछि।

गजेन्द्र ठाकुर- *दिनानुदिनक अनुभवक अहाँक साहित्यमे कोन तरहेँ विवेचन होइत अछि?*

ज.प्र.मं.- दुनियाँक प्रत्येक बेकती अपन बीतैत जिनगीक संग-संग परिवारो, समाजो आ देशो-दुनियाँक अनुभव करैत आबि रहल अछि। जहिना दुनियाँ गतिशील अछि तहिना जिनगियो अछि। मुदा सबहक समान आयु नहि रहने किछु देखियो पड़ैत अछि आ किछु नहियोँ। दुनियाँकेँ देखैक आ अनुभव करैक सेहो भिन्न-भिन्न नजैर अछि। जेहेन देखनिहार तेहेन दृश्य देखैत अछि। समाजक सभ अपन दिनानुदिनक क्रिया-कलापसँ

जिनगीक सच्चाइ धरि पहुँचए चाहैत अछि, जइसँ सुख-समृद्धिक तृप्ति भऽ सकइ। आइ सच्चाइकेँ जेते इमानदारीसँ चित्र उताइर सकला ओ सृजनकर्ता ओते कालजयी होइ छैथ। यएह प्रयास सभ करै छैथ, हमहूँ कऽ रहल छी।

गजेन्द्र ठाकुर- *साहित्यक शक्तिक विषयमे अपनेक की कहब अछि?*

ज.प्र.मं.- कहलो जाइ छै संगठने शक्ति छी। जहिना बेकतीक संगठन परिवार होइत, तहिना परिवारक संगठन समाज छी। समाजेक दर्पण साहित्य छी। जे जेहेन समाज ओकर ओहन शक्तिशाली साहित्य।

गजेन्द्र ठाकुर- *अहाँक साहित्यमे पाप-पुण्यक विश्लेषन केना होइत अछि?*

ज.प्र.मं.- पाप-पुण्य धर्मसँ जुड़ल अछि। मुदा आइ धरिक जे सामाजिक इतिहास रहल अछि ओ विकृत होइत-होइत एते विकृत भऽ गेल जे एकर स्वरूप चौपट्ट भऽ गेल। मूलत: जेना व्यासजी कहने छैथ जे परोपकार धर्म आ परपीड़ा पाप छी। एकरा सिरिफ वैचारिक नहि जिनगी मानि चलै छी।

गजेन्द्र ठाकुर- *कल्पना आ यथार्थक समन्वय अहाँ अपन साहित्यमे केना करै छी?*

ज.प्र.मं.- ओना, साहित्यमे अनेको धारा चलि रहल अछि मुदा मूलत: एकरा तीन धारामे राखि आगू बढ़ै छी। पहिल

यथार्थ, दोसर कल्पना आ तेसर दुनूक बीच समन्वयवादी। वैदिक युगक विचारधारा सामन्ती युगमे आबि तहस-नहस भऽ गेल। साहित्य समाजसँ कटि राज-दरबारक बीच चकभौर लगबए लगल। जइसँ साहित्य जन-गणसँ हटि भोग-विलासक वस्तु मात्र रहि गेल। पहिनौं रहल आ अखनो अछि जे साहित्य दुनूक (जन-गण आ राज दरबार) बीचक धारा बनि समन्वयवादी विचारधारामे बहए। ऐ धरतीपर सभकेँ जीबाक अधिकार छै, तइसँ दूर साहित्य हटि गेल अछि।

अपन सदैत प्रयास रहल अछि जे शोषित-पीड़ित, वंचितकेँ बाँहि पकैड़ ठाढ़ करी।

गजेन्द्र ठाकुर- *अहाँक साहित्यमे पात्र जीवन्त भऽ उठैत अछि, तेकर की रहस्य?*

ज.प्र.मं.- कोनो समस्या आकि घटनाक प्रति ई सदैत कोशिश रहैत अछि जे निष्पक्ष भऽ देखबो करी आ निराकरणो करी। भऽ सकैत अछि जे ऐसँ पात्रमे जीवन्तता आबि गेल होय।

गजेन्द्र ठाकुर- *साहित्य लेखन, विशेष कऽ मैथिली साहित्य लेखन अहाँ लेल कोन तरहेँ विशिष्ट आ एकर* प्राथमिकताकेँ अहाँ कोन तरहेँ देखै छी?

ज.प्र.मं.- साहित्य समाजक ओहन दर्पण छी जइमे भूत वर्तमान आ भविष्यक दर्शन होइत अछि। दुर्भाग्य रहल जे

मैथिली साहित्य समटा कऽ एकभग्गू भऽ गेल अछि। किछु समाजक चर्च आवश्यकतासँ अधिक भेल अछि। जइसँ साहित्य हास-परिहासक बीच ओझरा गेल अछि। जखन कि समाजक अधिकांश हिस्सा कटि कात भऽ गेल अछि। अपन रचनामे सदैत कोशिश रहैत अछि जे ओइ छुटल समाजकेँ पकैड़ सृजन करी।

गजेन्द्र ठाकुर- *की अहाँ कोनो तथ्यक झँपेलहा भाग उभाड़ैत छी, अगर हँ तँ केना आ नै तँ किए?*

ज.प्र.मं.- जहाँ-धरि झँपाएल तथ्यक प्रश्न अछि। झँपाएल केते रंगक होइत अछि। जेना शब्द-सँ-विचार झाँपब कोनो वस्त्र वा आनसँ झाँपब, खाधि खुनि माटिसँ झाँपब इत्यादि। मिथिलांचलक समाज (तथ्य) ओहन झँपाएल अछि जेकरा दिस कियो देखनिहारे नहि भेला। कोनो चीज देखैसँ पहिने मनमे उठैत अछि। मन आँखिक माध्यमसँ देखैत अछि। मुदा ऐठाम तँ मने हरा गेल अछि! ओहन तथ्य दिस जखन देखै छी तँ वएह झँपेलहा बुझि पड़ैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर- *अहाँ कहियासँ लेखन प्रारम्भ केलौं, केकरा लेल लिखलौं, आइ-काल्हि केकरा लेल लिखि रहल छी?*

ज.प्र.मं.- मोटा-मोटी दू हजार इस्वी चढ़लाक बादे लिखब शुरू केलौं। ओना, हिन्दी साहित्यक विद्यार्थी छी तँ हमरा

लेल हिन्दीमे लिखब नीक होइत। मुदा मैथिलीक सम्बन्ध परिवार-सँ-समाज धरि तहियो छल अखनो अछि। संगे एकटा बात आरो अछि जे जे विचार मैथिलीमे गहराइसँ व्यक्त कऽ सकै छी ओ हिन्दीमे नहि भऽ पबैत अछि। जहाँ-धरि केकराक प्रश्न अछि? ओ स्पष्ट रूपे कहि रहल छी जे समाजक ओ दबल-कुचलल वंचित हमर मुख्य आधार अछि, जेकरा लेल लिखबो केलौं आ आगूओ जे किछु लिखब ओकरे लेल लिखब।

गजेन्द्र ठाकुर- *की अहाँकेँ ई लगैत रहल अछि जे मुख्य धारासँ अहाँ कतियाएल गेल छी? अहाँक रचनामे* समाजकेँ बाहरसँ देखबाक प्रवृतिक की कारण?

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, अपने मुख्य धारासँ कतियाएलक प्रश्न उठौने छी, तँ स्पष्ट रूपे कहि दिअ चाहै छी जे जहिना कोनो धारमे बर्खाक पानि आबि-आबि धारामे मिलैत जाइत अछि, जइसँ धारमे उफानो अबैत अछि आ धारक धारा सेहो तेज होइत अछि। मुदा हम अपनाकेँ ओइसँ अलग बुझै छी। कम शक्ति रहने धारा भलेँ कमजोर हुअए मुदा दृढ़ बिसवास अछि जे दू-तीन-चारि बढ़ैत-बढ़ैत मुख्य धारा बनि जाएत। तँए अपनाकेँ कतियाएल नहि, नब धाराक गति देनिहार बुझै छी। ई विचारधाराक प्रश्न अछि कतिऐबाक नहि।

गजेन्द्र ठाकुर- *अपन साहित्य आ रचनामे की स्वयंकेँ पूर्णरूपसँ*

इमानदार राखब आवश्यक छै?

ज.प्र.मं.- जहाँ-धरि रचनामे इमानदारीक प्रश्न अछि। ओ सिरिफ रचने नहि जिनगीक सभ क्षेत्रमे एकर महत्व छै आ रहतै। न्यायमूर्ति सदृश रचनाकारकेँ हेबाक चाहिऐन। ओना, प्रश्न भयंकर अछि। मुहसँ सभ अपनाकेँ इमानदारे कहै छैथ मुदा कर्मक्षेत्र आ वौद्धिक क्षेत्रमे केते इमानदार छैथ, से बेबहारेमे स्पष्ट झलकै छैन। तँए बेसी कहब उचित नहि।

गजेन्द्र ठाकुर- *मैथिली साहित्य आइक दिनमे की ई सभ (साहित्यकार)क सामुहिक दोष स्वीकृतिक रूप नै* बुझना जाइत अछि?

ज.प्र.मं.- अपना ऐठाम (मिथिलांचलमे) नैतिकता सिरिफ भाषण रहि गेल अछि। बेबहारिक रूपमे केतौ किछु ने छइ। तेकर कारण अछि जे नैतिकताक मन गढ़न्त व्याख्या, आइए नहि, बहुत पहिनेसँ होइत आबि रहल अछि। तँए सामुहिक दोष की कहल जाए। जाधैर मनुक्ख अपन निर्माण अपने नहि करता ताधैर सुगा रटन्तसँ की हएत। ओना, दोषोमे एकरूपता नहि अछि। रंग-बिरंगक दोष पसरल अछि। एके गोटे एकठाम इमानदार छैथ दोसरठाम बेइमान।

ऐ प्रश्नक समाधान साधारण नहि अछि। ओना, जँ खुल्लम-खुल्ला वाद-विवाद हुअए तँ किछु हद तक कमि सकैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर- *की अहाँकेँ लगैत अछि जे अहाँक पोथीकेँ हिन्दी, बंग्ला, नेपाली, अंग्रजी आदि भाषामे अनुवाद* कएल जाएत? तइ स्थितिमे ओतए एकर कोन रूपेँ स्वागत हेतै? की अहाँक साहित्य ओइ भाषा आ संस्कृति सभ लेल ओतबे महत्वपूर्ण रहतै जेते ओ मैथिली भाषा आ संस्कृति लेल छै? अहाँक लेखन भाषा-संस्कृति निर्पेक्ष किए नहि भऽ सकल?

ज.प्र.मं.- आन भाषाक अनुवादक प्रश्न अछि। कोनो भाषाक साहित्य सीमित जगहक लेल नहि विश्वक लेल होइत अछि। जहाँ-धरि भाषाक प्रश्न अछि ओ क्षेत्रीय होइत अछि। दुनियाँमे सत्ताइस साएसँ बेसी बोली भाषा मिला कऽ अछि। कोनो क्षेत्र वा कोनो भाषाक साहित्यकार खास क्षेत्रमे जन्म लइ छैथ। ओइठामक माटि-पानिक सुगन्ध जइ रूपे ओ अनुभव करै छैथ तइ रूपे दूर-दराजक नहि बुझि पाबि सकै छैथ। तँए एक भाषा-सँ-दोसर भाषामे अनुवाद होइत अछि।

कोनो साहित्य तखने समृद्ध होइत अछि जखन अपन क्षेत्रसँ आगू बढ़ि दुनियाँक साहित्यकेँ अपनामे समाहित करैत अछि। एक भाषाक साहित्यक अनुवाद दोसरमे मात्र अनुवादे नहि ओइठामक सामाजिक, आर्थिक, वौद्धिक विश्लेषण सेहो प्रदान करैत अछि। तँए कोनो भाषाक साहित्य सिरिफ ओइ क्षेत्रक नहि दुनियाँक सम्पैत बनैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर- *अहाँक भाषा तँ मैथिली अछि मुदा अहाँक लेखनपर बाहरी भाषा, संस्कृति, विचारधाराक प्रभाव* पड़ल अछि केतौ-केतौ ई स्पष्ट अछि मुदा बेसी ठाम नहि, एकर की कारण?

ज.प्र.मं.- ओहुना देखै छिऐ जे बच्चेसँ मिथिलांचलोमे स्कूल-कौलेजमे जे पढ़ाइ होइ छै ओइमे हिन्दी-अंगरेजी भाषा सेहो छइ। हिन्दी तँ अपन राष्ट्र-भाषा छी, तँए सोभाविक अछि। मुदा अंगरेजी की छी। जखन अंगरेजी साहित्य पढ़ै छी तखन अंगरेजीए साहित्यकारक ने कथा, उपन्यास कविता नाटक सेहो पढ़ै छी। जइसँ बच्चेसँ मन-मस्तिष्कमे अंगरेजी भाषा, संस्कृति घर बनबए लगैत अछि। आगू चलि जखन किछु लिखए चाहै छी तँ सिनेमाक रील जकाँ ओ मस्तिष्कमे नाचए लगैत अछि। साहित्य सृजनक अवस्था किछु भिन्न अछि। जइ समय सृजनकर्ताक मस्तिष्क ओइ भावभूमिमे विचरण करए लगैत अछि तैठाम भाषा गौण पड़ि जाइत अछि। लाखो परहेज केलोपरान्त उमैड़-घुमैड़ कोनो-ने-कोनो दोग-सान्हि होइत सन्हिआइए जाइत अछि।

जहाँ-धरि विचारधाराक प्रश्न अछि। उन्नैसमी शताब्दीमे मार्क्सवादी विचारधारा दुनियाँक कोण-कोणमे पसैर गेल। केतौ-केतौ शासनो-सत्ता बदलल। मुदा अपन जे भारतीय चिन्तनधारा रहल अछि ओहो मानव चिन्तनधारा छी। मार्क्सवादी चिन्तनधारा आ भारतीय

चिन्तनधाराक पद्धतिमे किछ-किछ भिन्नता रहितो लक्ष्यमे नजदीकी सम्बन्ध अछि। दुनू मानव-कल्याणक दिशा-निर्देश करैत अछि। जइसँ एक-दोसरमे ताल-मेल सोभाविक अछि।

गजेन्द्र ठाकुर- *अहाँक रचनाक प्रचार ऐ पुरस्कारक बाद भयंकर रूपसँ भेल अछि, अहाँकेँ ऐसँ केहेन अनुभव* भऽ रहल अछि?

ज.प्र.मं.- प्रचार कम हुअए आकि बेसी, मूल प्रश्न अछि जे हमर रचनासँ केते गोटेकेँ जीवन-दिशा भेटलैन। जे कियो अपना जिनगीमे उताइर लाभ उठबै छैथ वएह उपलब्धि भेल। जेते अधिकमे हेतैन तेते अपना सृजनकेँ सार्थक बुझि सन्तुष्ट जरूर हएब।

गजेन्द्र ठाकुर- *अहाँक कोन रचना (कोनो खास कथा) हम पहिने पढ़ी माने अहाँक अपन कोन रचना सभसँ* बेसी प्रिय अछि?

ज.प्र.मं.- ऐ प्रश्नक जवाब दू ढंगसँ दऽ रहल छी- पहिल जेना-जेना रचना कएल अछि ओ अहाँक सोझा अछि। हम कहब जे ओही क्रमे ओकरा देखियौ। दोसर- ओहन गार्जियन जकाँ रचनाकार छी जेकर एकटा बेटा आइ.ए.एस. होय आ दोसर नाङर-लुल्ह, ओ जहिना दुनूकेँ समान नजैरसँ देखै छैथ तहिना हमहूँ अपना रचनाकेँ देखै छी तँए कोन नीक आ कोन अधला से कहब कठिन अछि। ❑

(साक्षात्कार: 2011)

‘विदेह ई-पत्रिका’क सहायक सम्पादक-श्री मनोज कुमार कर्ण ‘मुन्नाजी’क प्रश्नक जवाब

मुन्नाजी- *जगदीशबाबू, शिक्षाक पूर्ण डिग्रीधारी भऽ अहाँकेँ एतेक देरीसँ मैथिली लेखनक प्रवृतिक की कारण?*

ज.प्र.मं.- मुन्नाजी, अपनेक प्रश्नक उत्तर दइसँ पहिने किछु अपन बात कहि दइ छी। केजरीवाल हायर सेकेण्ड्री स्कूल झंझारपुरमे स्पेशल नाइन्थसँ लऽ कऽ स्पेशल एलेबुन धरि एक साए नम्बरक एक विषय मैथिली पढ़ने छी। मुदा कौलेजमे नहि पढ़लौं। हिन्दी पढ़लौं। साहित्यसँ सिनेह सभ दिन रहल। लिखै दिस दू हजार ईस्वीक बादे बढ़लौं। ऐठाम सिरिफ एतबे कहब जे जमीनी संघर्षक उपरान्त वैचारिक संघर्ष जोर पकड़ैत अछि तँए लिखब अनिवार्य भऽ गेल। जइसँ जीवनमे आरो मजबूती आएल। सभकेँ माने हर मनुक्खकेँ अपने लगसँ जिनगी शुरू करक चाहिऐन। कर्मक क्षेत्र अपन गाम रहल जैठामक भाषा मैथिली छी तँए हिन्दीक विद्यार्थी रहितौं मैथिलीमे लिखै छी। देरीसँ लिखैक

कारण ईहो भेल जे 1967ई.मे जखन बी.ए.क विद्यार्थी रही, वामपंथी राजनीतिमे जुड़लौं। काजसँ जेते समय बँचए ओ सेवामे लगबए लगलौं। बी.ए. धरि जनता कौलेज झंझारपुरमे आ आगू सी.एम. कौलेज दरभंगामे पढ़लौं। ओना, लिखैक आरो कारण अछि जे उम्रक संग शरीरक शक्तियो कमए लगल।

मुन्नाजी- *एतेक डिग्रीक* (*दू विषयसँ एम.ए.क*) *पछाइत तँ अहाँ समयमे नोकरी भेटब बेसी असोकर्ज नहि छेलइ। नोकरी नहि कऽ खेती-बारीक निर्णय अहाँक कोन मानसिकताक द्योतक अछि?*

ज.प्र.मं.- आजुक दृष्टिये जरूर बुझि पड़ैत हएत जे ओइ समय नोकरी सस्ता छेलै मुदा से बात नहि। ऐ परिपेक्ष्यमे किछु कहि दिअ चाहै छी। झारखंड लगा बिहार राज्य छल। अखन जेते जिला, सवडिवीजन आ ब्लौक, खण्डित बिहारमे देखै छिऐ ओते पूर्ण (सौंसे) बिहारमे नहि छल। संग-संग जेते काजक विविधता अखन अछि, सेहो नहि छल। अखन छत्तीस-सैंतीसटा जिला खण्डित बिहारमे अछि जखन कि ओइ समय सिरिफ सत्तरहटा जिला छल। जइ मधुबनीमे पाँचटा सवडिवीजन अछि ओ अपने सवडिवीजन छल। तहिना शिक्षो विभागमे छेलइ। गनल-गूथल कौलेज आ हाइ-स्कूल रहए। आइक मधुबनी (प्रोपर) मे चारिटा कौलेज- झंझारपुर, सरसो, पण्डौल आ बाबूबरहीमे खुजल। बाबूबरहीक कौलेज (जे.एन.) मधुबनी चलि गेल। ओइसँ पूर्ब आर.के. कौलेज आ भरिसक एकटा

आरो छल। बाँकी सभ बादक छी। जखन जनता कौलेज झंझारपुर खुजल, ओइ समय अधासँ अधिक शिक्षक (प्रोफेसर) आने-आन जिलाक छला। तँए कि ऐ क्षेत्रमे पढ़ल-लिखल लोक नहि छला से बात नहि। बैंकक शाखा जेते आइ देखै छिऐ ओते नहि छल। भरिसक मधुबनीमे एकटा रहए बाँकी नहियेँ जकाँ छल। तहिना ब्लौकोक छल। एक तँ संख्या कम दोसर एकटा बी.डी.ओ. रहैत छला। जखन कि बी.डी.ओ; सी.ओ. आ पी.ओ. तीनिटा अखन छैथ। कल-कारखाना नाओंपर एकटा चीनी मील (लोहट) ओ गोटि-पङरा चाउरक मील छल। ओना, आरो बहुत बात अछि मुदा मोटा-मोटी कहलौं। आब अहीं कहु जे नोकरी केतए छल। ओइ अनुपातमे अखन बेसी अछि। खेती करैक कारण- जखन हम तीनिए बर्खक रही पिता मरि गेला। हमरासँ तीन बरख पैघ भाय छला।

ओना, परिवारमे दूटा पिसिऔत भाय सेहो रहैत छला। हुनका रहैक कारण छल, हुनकर घर फुलपरास विधानसभा क्षेत्रक घोघरडीहा ब्लौकक अमही पंचायतक हरिनाही गाम छैन। जखन कोसी पश्चिम मुहेँ जोर केलक तँ गाम उपैट गेल। सभ कियो बेरमा चलि एला। जे घटना 1935-40क बीचक छी। फेर जखन कोसी पूब मुहेँ ससरल तखन 1960ई.मे पुन: ओ दुनू भाँइ चलि गेला। हुनका सबहक गेने गिरहस्तीक संग-संग पढ़ाबो करी। तहियेसँ खेतीसँ जुड़ाव भऽ गेल; जे जीविकाक साधन रहल।

मुन्नाजी- *प्रारम्भमे अहाँ अपनाकेँ साम्यवादी कहि सामन्तवादक विरूद्ध हो-हल्ला मारि-झगड़ामे सक्रिय रहलौं बादमे ऐसँ विमोह किएक? ऐसँ की फायदा वा नोकसान उठाएल?*

ज.प्र.मं.- जहिना छेलौं तहिना छी। मुदा परिस्थितिकेँ ऑकि देखए पड़त। सामन्तवादमे मनुक्खक बुनाबट जइ रूपक रहै छै ओ सामन्तवादपर चोट पड़लासँ बदलै छइ। खिस्सा-पिहानी आ नाटकक स्टेज सामाजिक विकास आ सामाजिक जीवन नहि होइ छइ। नाटकक स्टेज होइ छै- तीन घन्टामे रामक जन्म, जनकपुरक धनुषयज्ञ, वनमे सीताक हरण आ रावणक मृत्युक उपरान्त विसर्जन। तहिना खिस्सा पिहानीमे सेहो होइ छइ। मुदा समाजक मंच बहुत जटिल होइ छइ। जहिक लेल समयो लगै छै आ संघर्षो होइ छइ। तहूसँ जबरदस्त वैचारिक संघर्ष सेहो होइ छइ। संक्षेपमे- आर्थिक विकासक क्रममे खेतीक लेल जखन नबका माने उन्नति किस्मक बीआ आएल तँ सामन्ती सोचक लोक विरोध केलैन। हुनकर आरोप छेलैन (1) वस्तुमे सुआद नहि होइ छै, (2) पाबैन-तिहारक दृष्टिये अशुद्ध होइत अछि, (3) स्वास्थ्यक दृष्टिसँ खाद देल अहितकर होइत अछि जइसँ बीमारी बढ़त। तहिना दरभंगा अस्पताल खुललापर सेहो विरोध भेल। गाम-घरमे एलोपैथक विरोध भेल। आरोप छेलै- गाइयक खूनक इन्जेक्शन आ सुगरक मांसक बनल दवाइ। साधारण इनारक जगह पानिक कल भेने सेहो विरोध भेल। आरोप लगैत छल जे कलक वासर चमड़ाक होइ छै, तइसँ पूजा केना हएत आ अशुद्ध पानि लोक पीत केना? केते कहब। ऐ परिस्थितिकेँ संक्रमण काल कहल जाइ

छइ। सामन्तवाद टुटलाक बाद पूँजीवादी आ समाजवादी दिशा अबै छइ।

हमरा गामक नब्बे प्रतिशत जमीन बहरबैयाक छेलैन। ओना, चारिटा जमीनदार छला बाँकी दूटा मास छला। जनवादी लड़ाइ शुरू होइते दूटा मालिक (जमीनदार) अपन जमीन बेचि लेलैन। एक गोटेक संग जबरदस्त लड़ाइ भेल। जमीन्दारक संग सूदखोर महाजन सेहो छला। हुनको संग लड़ाइ भेल। अखन ने कियो बाहर जमीन्दार छैथ आ ने महाजन। गाममे किनको अधिक जमीन नहि भेलैन। ऊपर दस बीघा आ बाँकी निच्चाँ छैथ। ऐ दौरमे करीब तीस बरख लड़ाइ गाममे चलल। सत्तैर-एकहत्तैरक उठल तूफान शान्त होइत होइत 5.5.2005ई.कैं अन्तिम मुकदमाक अन्त भेल।

विकासोक प्रक्रिया छइ। आइक भारी मशीन (कमप्यूटर) देखि नब पीढ़ीक लोककैं सहजे बिसवास नहि हेतैन। मुदा हाथक काज हाथसँ चलैबला औजारक संग लघु मशीनमे बदलल। लघुमशीन परिमार्जित होइत भारी आ तेज मशीन बनि ठाढ़ अछि।

मुन्नाजी- *एकगोटे कहलनि जे अहाँक साम्यवादीक विद्रोह छवि तखन दबि गेल जखन की अहाँ सामन्ती द्वारा देल प्रलोभनकैं स्वीकारि लेलौं की सत्य अछि?*

ज.प्र.मं.- चारिम प्रश्नक उत्तर भेट गेल हएत मुन्नाजी। जँ से नहि तँ अनठेकानी गोला फेकब हएत।

मुन्नाजी- *उग्रवादीसँ रचनावादी प्रवृति केना जागल कोनो एहेन विशेष घटना जे अहाँक रचनात्मक सोचकैं प्रेरित केने*

हुअए?

ज.प्र.मं.- पाँचम प्रश्नक उत्तर सेहो आबि गेल अछि। दुनियाँक नक्शामे जेकरा शीतयुद्ध (cold war) कहल गेल अछि वएह वैचारिक संघर्ष छी। जेकरा लेल साहित्य प्रमुख अस्त्र छी।

मुन्नाजी- मैथिली रचनाकारक प्रवृति अछि जे एक-दु रचना कऽ अपनाकेँ मैथिलीधारामे जोड़वामे जुटि जाइछ मुदा अहाँ एकर उलट चिन्तनशील आ रचनाशील रहि नुकएल सन रहलौं?

ज.प्र.मं.- छठम प्रश्नक सम्बन्धमे स्पष्ट समझ अछि जे जहिना उत्तरबरिया पहाड़सँ निकलल छोट-छीन धारा सभ दछिन मुहेँ टघरैत नदी-नालामे मिलैत आगू बढ़ैत गंगामे पहुँच समुद्रमे समाहित भऽ जाइत अछि तहिना जँ साहित्यक (रचनाक) दशा-दिशा नीक रहत तँ साहित्यक धारा बनबे करत। ई बिसवास अछि। जेना आन-आन गोटे शुरूहेँसँ रचना दिस बढ़ला से नहि भेल। कारण ऊपर आबि गेल अछि।

मुन्नाजी- वियोगीजी अहाँ कितावक आमुखमे अहाँकेँ 20गोट कथा, 5 गोट उपन्यासक पाण्डुलिपि लऽ भेँट करबाक क्रममे अहाँक दृष्टि फरिच्छक आ दू साल बाद पुन: भेँटमे हेबाक बात कहलनिहेँ ऐपर अहाँक की विचार?

ज.प्र.मं.- मैथिली साहित्य जगतक वियोगीजी पहिल साहित्यकार छैथ जिनकासँ पहिल भेँट छी। ओना, एक-दू बेर फोनपर गप भेला बाद उमेश पटना गेल रहैथ तँ भेँट केलकैन। किछु रचना सभ लऽ कऽ सेहो गेल रहैथ। दू-

चारि पन्ना पढ़ि कऽ सुनेबो केलकैन। मुदा डेढ़-दू घन्टाक बातचीतमे जाने-पहचानक बात बेसी भेलैन।

हुनकासँ हमर पहिल भेँट मधुबनीमे छी जखन ओ मधुबनी एला। ओही क्रममे रहुआ कथा-गोष्ठीक जानकारियो देलैन आ चलैओले कहलैन। हुनक सम्पादनमे देशज पत्रिका 2003ई.मे निर्मलीक कितावक दोकानमे भेटल। जइमे यात्रीजी आ किरणजीक संग गप-सप्प सेहो निकलल अछि। विचारक दृष्टिसँ यात्रीजी सँ विद्यार्थीए जीवनसँ प्रभावित छेलौं। पत्रिका पाबि आरो प्रभावित भेलौं आ वियोगीजीक संग आकर्षण सेहो बढ़ल। तहिना किरणजीक जिनगीसँ सेहो बहुत प्रभावित कौलेजे जीवनसँ छेलौं। लगसँ हुनका देखने रहिऐन। जखन हम सी.एम. कौलेजमे पढ़ैत रही तखन ओ प्रोफेसर छला। गप-सप्पक क्रममे ओ बजला जे जहिना बजै छी तहिना लिखब मैथिली छी। हुनकर ई विचार तहिये नहि अखनो रग-रगमे समाएल अछि।

मुन्नाजी- *उपरोक्त आमुखमे ओ कहने छथि जे अहाँ हुनकर (वियोगीजीक) एहेन अन्धभक्त छी जे हुनकर किताबकेँ ताकि-ताकि कऽ पढ़ैत रही एकटा किताबकेँ तकबाक क्रममे पटना धरि गेलौं मैथिली साहित्यक पाठक शुन्यता (कीनि कऽ पढ़ैबला)मे जँ ई सत्य छै तँ एकर की कारण?*

ज.प्र.मं.- अहू प्रश्नक उत्तर आबि गेल अछि। ई बात हुनकामे जरूर छैन जे उपकैर-उपकैर केतेक किताब देलैन। भक्त आ भगवान साम्प्रदायिक भाषा छी। कियो अपन

कर्मसँ बढ़ैत-घटैत अछि मुदा आगूसँ अधला सोचब आ करबकेँ अधला बुझै छी।

मुन्नाजी- *किछुए समयान्तरलमे विविध विधापर अहाँक 8 गोट पोथीक प्रकाशनसँ केहेन अनुभूति भऽ रहल अछि ऐगला लक्ष्य की अछि?*

ज.प्र.मं.- पोथी प्रकाशित भेलापर जहिना आन गोटेकेँ अनुभूति होइत छैन तहिना अपनो भेल। लक्ष्यक जहाँ-धरि प्रश्न अछि तँ प्रसादजीक पाँति मन पड़ैत अछि-

"जीवन का उद्देश्य नहीं है शान्त भवन में टिक जाना

और पहुँचना उन राहो पर जिनके आगे राह नहीं।"

मुन्नाजी- *एतेक पोथी प्रकाशनक पछाइतो अहाँक ठोस मूल्यांकन वा पुरस्कारक हेतु चयन नहि भेलासँ अप्पन परिश्रम निरर्थक सन तँ नहि लगैए?*

ज.प्र.मं.- कोनो रचनाक मूल्यांकन समय करैत अछि। समयानुकूल रचना छी वा नहि ई समय आँकि कएल जा सकैत अछि। रहल पुरस्कारक बात? प्रेमचन्द सन उपन्यास सम्राट आ कलमक जादूगरकेँ कोन पुरस्कार भेटलैन। मुदा ओ अपना श्रमकेँ निरर्थक कहाँ बुझलैन। अन्तिम साँस धरि सेवा करैत रहला।

अपन पचहत्तरिम जन्म दिनक अवसरपर नामबर भाय (डॉ. नामबर सिंह) बाजल छला- "जेते काज अखन धरि केलौं ओते पाँच बर्खमे करब।" हुनकर केते सेवा छैन सर्वविदित अछि। जखन पचहत्तैर बर्खक बुढ़क

एहेन वक्तव्य छैन तखन तँ हम अपनाकेँ जवान बुझै छी।

मुन्नाजी- *मैथिलीमे प्रारम्भेसँ बनल जाति-पातिक फाँटकेँ अहाँ कोन दृष्टिये देखै छी। आ स्वयं अहाँ ओइ बीच अपनाकेँ कतए पबै छी।*

ज.प्र.मं.- शुरूहेसँ वर्ण नहि वर्गमे बिसवास अछि। जइ आधारपर काज करैत एलौं आ करितो छी। समाजमे जे जाति-धर्मक (सम्प्रदायक) खेल चलैत अछि ओ राजनीति केनिहारक चालि छी।

मुन्नाजी- *पिछड़ावर्गसँ आगाँ (रचनात्मक रूपेँ) अबैत लोकक अहाँ ऊपर उठेबा लेल कोनो सहयोगी बनब पसिन्न करब? हुनका सबहक लेल कोनो संदेश?*

ज.प्र.मं.- जैठाम बेवस्था बदलैक प्रश्न अछि ओ ने एक दिनमे हएत आ ने एक गोटे बुते हएत। सबहक कल्याण हएत आ सभकेँ करए पड़त। तँए सभकेँ कहै छिअनि जे जागू, उठि कऽ ठाढ़ होउ। आगू बढ़ू। मिथिला सबहक मातृभूमि आ मैथिली सबहक भाषा छी तँए अपन बुझि सेवामे लागि जाउ। ❑

‘मिथिलांगन पत्रिका’क सम्पादक-
श्री मुकेश दत्तजीक
प्रश्नक जवाब

मुकेश दत्त- *अपन प्रारम्भिक जिनगीक बारेमे संक्षेपमे बताबियौ।*

ज.प्र.मं.- बेरमा गामक मध्य, मध्यवर्गीय जातिक मध्यवर्गीय परिवारमे जन्म भेल। ऐठाम स्पष्ट कऽ दिअ चाहै छी जे हिन्दू परिवार मोटा-मोटी तीन रूपमे विभाजित अछि, ऐगला, पैछला, बीचला। यएह बीचला भेल मध्यवर्गीय जाति। दोसर आर्थिक रूपेँ मध्यवर्गीय परिवार ओ भेल जिनका गुजर करै-जोकर अपन जमीन छैन। ओना, पैघ किसान कहियौ आकि जेठ-रैयति जमीन्दार, एक श्रेणी ओहो छथिए। तहिना भूमिहीन, बिनु बासभूमिबला एक श्रेणी। तीनूक मध्यक परिवारमे जन्म भेल अछि।

भैयारीमे पिताजी असगरे छला, तँए समटल परिवार छल समटल ई जे माता-पिताक देख-रेखमे परिवार चलै छल। हमरासँ तीन बर्ख जेठ एक भाइक संग दू भाँइक भैयारी छल। तीन बर्खक रही, तीस बर्खक अवस्थामे पिताजी मरि गेला। माइयक देख-रेखमे परिवार चलै छल। बटाइ लगा एक हरक जोत

परिवारमे छल। जने-हरबाहक बले खेती होइ छल। ओना, अपना ऐठाम दूटा पिसियौत भाए सेहो रहै छला। कोसी कातक गाम रहने, हुनकर गामे नष्ट भऽ गेल छेलैन। ओ दुनू भाँइ थोड़-बहुत खेतियो देखैथ आ महींसो चरबै छला जे 1960 इस्वीमे अपन गाम जगने 'हरिनाही' पुन: चलि गेला।

गाममे लोअर प्राइमरी स्कूल छल, जे भीतघर छल, 1934 इस्वीक भुमकममे खसि पड़ल। जेकरा गामक लोक अशुभ मानि स्कूलक जगहे बदैल देलैन। दोसर ठाम स्कूल बनल, तइ स्कूलमे पहिने जेठ भाए नाओं लिखौलैन, पछाइत पाँच बर्खक अवस्थासँ हुनके (भाइक) संगे हमहूँ स्कूल जाए लगलौं।

तहिया दुनू पहर स्कूल चलै छल। एकटा शिक्षक छला, जिनकर आवा-जाही बेसी काल परिवारमे होइ छेलैन।

मुकेश दत्त- *मैथिली साहित्य दिश झुकाव कोना भेल?*

ज.प्र.मं.- बच्चेसँ लोक भाषा-साहित्यसँ जहिना जुड़ि जाइ छैथ तहिना अपनो जुड़ि गेलौं। कविता-कथासँ विशेष प्रभावित भेलौं। ओना, हाइ स्कूलसँ आर्ट-साइंस-कॉमर्सक फुटकान होइ छल जइमे पनरह-सँ-बीस प्रतिशत साइंस, पाँच-सँ-दस प्रतिशत कॉमर्स आ बाँकी सभ आर्टे पढ़ै छला। अपनो विषयक बोध नहियेँ छल मुदा मनमे एकटा ललक उठि गेल छल जे मैट्रिक पास करब। गामक लोअर प्राइमरी स्कूलसँ कछुबी अपर-प्राइमरी स्कूलमे नाओं लिखेलौं, पछाइत मिड्ल स्कूल

कछुबीए-मे नाओं लिखेलौं। मिड्ल पास केलाक पछाइत केजरीबाल हाइ स्कूल झंझारपुरमे नाओं लिखेलौं। हायर सेकेण्डरीसँ निकैल पछाइत जनता कौलेजमे नाओं लिखेलौं। विचारोमे बदलाव आएल। विचारमे बदलाव ई आएल जे एम.ए. पास करब। ओना, अखन तक गाममे आठ गोटा बी.ए. पास, जेनरल कौलेजसँ, कऽ चुकल छला मुदा एम.ए. पास कियो ने केने छला। ओना, संस्कृत माध्यमसँ एक-पर-एक विद्वान गाममे छला, जे दीपक संस्कृत महाविद्यालय, नवानीक महाविद्यालय, लगमा महा विद्यालयक संग केतेको महाविद्यालयमे बेरमा गामक विद्वान सभ सेवा दऽ चुकल छैथ। अखनो किछु गोटा छथिए।

जनता कौलेजमे हिन्दी ऑनर्सक पढ़ाइ नइ होइ छल, अपने हिन्दीक विद्यार्थी छेलौं। पछाइत सी.एम. कौलेजमे नाओं लिखेलौं। जैठामसँ एम.ए. पास केलौं। कौलेजे अवस्थामे वामपंथी राजनीति (कम्युनिस्ट पार्टी) सँ 1967 इस्वीमे जुड़ि गेलौं। एम.ए. पास करैत-करैत एहेन मनक विचार बनि गेल जे नोकरी नइ करब। तँए नोकरी लेल जीवनमे कहियो परियासो नहियेँ केलौं।

मुकेश दत्त- *पहिल रचनाक प्रेरणा कोना आओल?*

ज.प्र.मं.- बच्चेसँ कविता-कथा पढ़ैत रहलौं, केते कविता रटियो नेनहि रही। कहियो-काल कविता-कथा लिखैक मन अपनो भऽ जाए आ किछु लिखियो ली, मुदा तइ सभक ठेकान नहि रहल। कहब जे किनकोसँ प्रभावित

भऽ वा संरक्षणमे लिखब शुरू केलौं से बात नहि अछि। कथा-उपन्यास लिखला पछाइत भाय मन्त्रेश्वर झा, डॉ. तारानन्द वियोगी, डॉ. शिवशंकर श्रीनिवाससँ देखौलिऐन जे अपन-अपन विचारो आ सुझावो देलैन। हर्षक बात ईहो जे अखनो तक मंत्रेश्वर भायकेँ अपन रचना पढ़बै छिऐन आ विचार लइते छी। वएह 'भाषाक वाजीगर' कहि अपन मन्तव्य सेहो देलैन।

ओना, राजनीतिक दौड़मे, अपन करैक विचार किछु अपना ढंगक अछिए। भोगेन्द्रजी 1967 इस्वीमे पहिल बेर संसदमे गेला। नवयुवक रहबे करैथ, प्रभावशाली वक्ता सेहो छेलाहे। हुनके प्रभावसँ समाजक बीच जे अनेको तरहक विषमता पसरल अछि, ओहीमे सँ प्रमुख विषमताकेँ पकैड़ जमीन्दारक खिलाफमे बटाइदारी, सूदखोर महाजनक खिलाफमे ऋृण मुक्तिक आन्दोलन समाजमे (गाममे) ठाढ़ भेल।

गामक लोकक स्थिति एहेन दयनीय भऽ गेल छेलैन जे विवाह-दानक कोन बात जे अपनो कर्जे खा-खा जीबै छला। चारिटा बाहरक जमीन्दार गाममे छला जे गामक बाहरअना, माने तीन-चौथाइ वा पचहत्तैर प्रतिशत जमीनक मालिक छला। बाढ़ि-रौदीक इलाका अपना सभक छीहे। देशोक स्थिति ओहने छल जे स्वतंत्र भेलो पछाइत आने-आने देशसँ अन्न मंगबए पड़ै छेलइ। 1974-75 इस्वीक पछाइत अन्नक उत्पादनमे दिनो-दिन बढ़ोत्तरी भेल 1990 इस्वी तक अबैत-अबैत गामक वातावरण शान्त भेल। माने जमीन्दारो गामसँ चलि गेला आ पहिलुका पद्धतिक जे महाजनी छल सेहो

समाप्त भऽ गेल। माने डी.एम. साहैब (मधुबनी) माने नित्यानन्द सिंह अपने आबि ऋण-मुक्तिक प्रमाणपत्र बाँटि देलखिन। जइसँ वातावरणमे बदलाव आएल। पाँच दर्जन करीब मुकदमा गाममे पसरल छल, मुदा एते तँ सभक मनमे जगिये गेल छेलैन जे अनेरे मुकदमा गाममे लटकल अछि। मुदा कोटो-कचहरी तँ लस्सा छीहे। छोड़बैमे समय लगबै करैए। दू हजार इस्वी तक अबैत-अबैत मात्र एकटा मुकदमा बँचल। चारि साए छत्तीस, जे जमीन्दारक जमीनक दखल-दिहानीक बेर उठल छल, पैंतीस साल तक ओ मुकदमा चलल। ओना, वातावरण ओहन बनियेँ गेल जे छल जे मुकदमा अन्त हेबे करत। कोर्टो-कचहरीक हाल वएह छेलै जे सालक-साल अफसरे नहि रहै छला। खाएर जे भेल से भेल, अप्रिल दू हजार पाँचमे ओहो मुकदमा फास्ट ट्रेक कोर्टसँ समाप्त भेल। अट्ठाइस गोरे ओइ मुकदमामे मुद्दालह रही।

दू हजार इस्वी तक अबैत-अबैत विचारमे बदलाव सेहो आएल। ओना, आन्दोलनक बीच, सूदखोरी आ बटाइदारी आन्दोलनक बीच, गामक खेती केना आगू बढ़त तइ दिशामे समाज झुकि गेल छला, जइसँ उपजामे काफी बढ़ोत्तरी भेल। विचारधारामे समाजक बदलाव हुअए, तइले ते साहित्येक जरूरत अछि। तँए लिखब शुरू केलौं।

जीवनक शुरूक जे कथा छल, माने जीवनक पहिल कथा- 'भैंटक लाबा', तैठामसँ शुरू भऽ 'गामक जिनगी' कथा संग्रह छी, जे 2009 इस्वीमे गजेन्द्रजी (श्री

गजेन्द्र ठाकुर)क सहयोगसँ प्रकाशित भेल। भाय प्रेमशंकर सिंह (डॉ. प्रेमशकर सिंह) जे तिलका माँझी विश्वविद्यालयसँ प्रोफेसरक रूपमे सेवा निवृत भऽ चुकल छला, हाथमे गामक जिनगी कथा संग्रह पड़िते ओ बेहद खुशी भेला। समीक्षा लिखबाक विचार सेहो देलैन। मुदा बिमारीक चलैत हाथमे कम्पन्न आबि गेल छेलैन जइसँ लिखब कठिन भऽ गेलैन, नहि लिखि पेलाह।

मुकेश दत्त- *कोन-कोन विधामे लेखन केने छी? अहाँकेँ कोन विधामे लिखब नीक लागैत अछि? संक्षेपमे बताओल जाए।*

ज.प्र.मं.- जइ विधामे काजे शुरू नहि केलौं, तइ विधाक नीक-बेजाए की कहब। किए तँ कोनो विधामे प्रवेश केलाक पछाइत ने रमन्त अबै छै, से तँ भेबे ने कएल तँए तेकरा छोड़ि कहै छी। कथा-उपन्यास दुनू लिखब संगे शुरू केलौं। एहनो होइ छल एक दिन कथा लिखी दोसर दिन उपन्यास। जे क्रम अखनो अछि। किछु दिनसँ कथा लिखै छेलौं, जे कबिलपुर 'सगर राति दीप जरय'क मंचपर तीनटा संग्रहक रूपमे लोकार्पण भेल, आ आगूक जे कार्यक्रम अछि तइले तीनटा उपन्यास रखने छी। ऐ बेरक पानि (वर्षा-बाढ़ि) तेना मनकेँ डोला देलक जे बाढ़िये-बर्खासँ सम्बन्धित अखन कथा लिखि रहल छी।

उपन्यास, कथा लिखब जे जीवनक शुरूमे पकड़लक से

अखनो ओहिना पकड़ने अछि, तँए कोन नीक कोन बेजाए, केना कहल जाए। नाटक, एकांकी सेहो लिखलौं। आजुक जे मोबाइल युग आबि गेल अछि तइमे अपना ऐठामक नाट्य साहित्य रहत कि पाठ्य साहित्य बनत से तँ प्रश्न अछिए। तँए ऐ पर कोनो विचार नहि कहब। कविता सेहो पाँच साएसँ ऊपर लिखने छी, जे करीब बारहटा संग्रहमे प्रकाशित अछि। कविता लिखब ने छोड़लौं हेन आ ने लिखै छी। लिखै छी ओतबे जेते कोनो कार्यक्रममे पाठ करै छी। कविता लिखला पछाइत अपने मन झुझुआ लगैए। झुझुआ ई लगैए जे जे विचार रखए चाहै छी ओ राखि नहि पबै छी। दुनू कात धार अछि, माने ई जे सीमित समयमे पाठ हुअए आ दोसर छन्द-अलंकारक इलाका अपना सबहक सेहो छीहे। बिना छन्द-अलंकारक कविता केहेन हएत। तँए अपने झुझुआएल मन झुलि रहल अछि।

मुकेश दत्त- *मैथिली साहित्यमे अहाँ अपनाकेँ किनकासँ प्रेरित मानैत छी वा साहित्यमे अहाँक प्रेरणाक स्रोत के रहलाह?*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, अपन सीमामे अहूँक प्रश्न सहिये अछि, किए तँ आँखिक सोझोमे देखबो करै छी, आ सुननहुँ तँ छीहे। तँए अपन जगहपर अपन विचारानुकूल प्रश्न अछि, मुदा अपन बात कहैसँ पहिने बीचमे एकटा प्रश्न अछि ओ अछि 'प्रेरणाक स्रोत के रहला?' तँए अखन ऐ दिस नहि बढ़ि एतबे कहब जे अपन जे जीवन रहल,

वएह ने अपन विचारो आ काजो निर्धारित केलक, जइसँ जीवन ठाढ़ भेल। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे बेकतीगत रूपमे नहि सामूहिक रूपमे हजारो एहेन प्रेरक छथिए जिनकासँ प्रेरित छीहे। तइमे अनेको प्रेरक साहित्यकार सेहो छथिए। कहब जे किनको खास प्रभाव हेबे करतैन। ई तँ मानसिक प्रश्न छी, किनकर भाषा, किनकर भाव आ किनकर रचनाक की प्रभाव पड़ल...। जहिना तुलसी बाबा आशा हारि बजला जे 'को बड़ छोट कहत अपराधू..।' तहिना अपनो आशा हारि कहै छी, एक-सँ-एक पूजनीय महापुरुषक धरती मिथिला रहल। कामधेनु सन जेकर भूमिमे उर्वर शक्ति छै, ओ ने कहियो बाँझ भेल अछि आ ने हएत। देशक जँ कोनो समस्या अछि तँ मिथिलाक समस्या प्रमुख अछिए। जैठाम हजारो बर्खसँ अबैत पारिवारिक, सामाजिक सम्बन्ध एकाएक राँइ-बाँइ भऽ टुटि रहल अछि। तैठाम अपन अस्मिता बँचबैक प्रश्न तँ अछिए।

मुकेश दत्त- *अहाँक रचना ग्रामीण परिवेशकेँ समेटने वास्तविक जिनगीक परिदृश्यसँ भरल रहैत अछि, एकर कारण?*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, परिवेश मनुक्ख स्वयं अपन अपना ले सृजन करै छैथ। अखन परिवेशक चर्च नहि करब। अखन एतबे कहब जे अपन चौहत्तैर-पचहत्तैर बर्खक जीवन गामेमे बितल अछि, जइसँ गाम देखैक अवसर भेटबे कएल अछि। पैघ-सँ-पैघ बाढ़ि, रौदी आ भुमकम देखनहि छी, ओकर की परिणाम होइए से तँ

अपन आँखिक देखल अछिए। सभ जनिते छी जे अपन आँखिक देखल सत्य सभसँ अकाट्य होइते अछि। तीनूक, माने बाढ़ि, रौदी, भुमकमक चर्च करब उत्तरकेँ नमहर बनाएब हएत। से नहि मुदा भुमकमक दूटा घटनाक चर्च करै छी। पहिल, 1934 इस्वीक भुमकमक चर्च करै छी।

झंझारपुर बाजारमे जयदेव चौधरीक परिवार छेलैन। बनियाँ जाति, कारोबारी लोक छेलाहे। बीच बाजारमे घर छेलैन। दोकान छेलैन। भुमकममे घर-अँगना, माने दोकानक घरसँ रहैक घर तक, खसि पड़लैन। एगारह गोरेक परिवारमे नअ गोरे मकानमे दबिकऽ मरि गेलैन। एकटा बौकी बहिन आ जयदेव चौधरी अपने मात्र दू बेकती बँचला। मन विचलित भऽ टुटि गेलैन। एक तँ झंझारपुर बाजार तहस-नहस भऽ गेल छल, तैपर अपन परिवार तँ आरो नष्ट भऽ गेलैन। झंझारपुरसँ पड़ा जयदेव चौधरी, हमरा नानी ऐठाम पहुँच गेला। हमर नानीक माने ई जे दू बहिन हमर नानी। छोट बहिनक सासुर बेरमे छेलैन। परिवारो सुभ्यस्त छेलैन। अपना सन्तान नहि भेलैन, तँए धर्म-कर्ममे बेसी रूचि छेलैन्हे। कोन गाममे किनकर केहेन बेवहार छैन ओ तँ गामेक लोकटा नहि आनो-आन गामक लोक जनिते छैथ। जयदेव चौधरी बेरमा आबि बसि गेला। बिआहो भेलैन, परिवारो बनलैन मुदा सन्तान नहि भेने परिवारक अन्त भऽ गेलैन। दोसर घटना 1987 इस्वीक भुमकमक। ..अपना घरसँ करीब दू बीघा हटि व्राह्मण परिवार छैथ। ओइ परिवारमे केदारनाथ झा अपन

संगी। संगी, माने एक क्लास आगू पढ़ै छला मुदा पढ़ै छला एक्के स्कूलमे। एकठाम घर रहने सामाजिक सम्बन्धक आरो बहुत कारण छेलाए-हे। मैट्रिक पास केलाक पछाइत ओ शिक्षकक ट्रेनिंग केलैन, मिडिल स्कूलमे शिक्षक भेला।

अढ़ाइ-तीन बजे भोरमे भुमकम भेल छल। केदारबाबूक घर भितघर छेलैन। सुतलेमे घर खसलैन। सभ प्राणी, माने तीन गोटा, मरि गेला। मात्र पाँच बर्खक एकटा बेटा बँचलैन। ई बात लोक बुझलक भिनसरमे, माने छह बजेक पछाइत, तैबीच सभ अपने-अपने परिवार, घर-अँगना देखै छला। गल-गुल भेल जे फल्लाँक घर खसि पड़लैन। लोकक ताक-हेर भेल तखन भाँजपर आएल जे घरेमे सभ दबाएल छैथ। भीत ढाहब शुरू भेल, तखन एक गोटाक टाँग देखलैन। टाँग देखला पछाइत बचा-बचा कऽ भीतकेँ ढाहि तीनू लहासकेँ निकालल गेल।

ओना, भुमकम होइसँ पहिने चारि-पाँच बेर आवाज भेल। अपन नीन टुटि गेल। उठिकऽ खिड़की लग गेलौं जे कोनो भारी गाड़ी ने रोडपर जा रहल अछि। मुदा से नहि देखलौं। लगले घरसँ निकैल आँगन जा सभकेँ जगेलौं जे भुमकम होइए। सभ प्राणी निकैल आँगन-घरक सीमा टपि बाड़ी चलि गेलौं।

आवाज सुनि अपनो केदारबाबू ऐठाम गेलौं, देखि कऽ बकार बन्न भऽ गेल। पढ़ल-लिखल नीक परिवारक पाँच बर्खक एकटा बच्चा मइटुग्गर-बपटुग्गर भऽ ऐ

धरतीपर रहि गेल। केहेन भविष्य ओइ बच्चाक बनत। खाएर जे भेल से भेल, आब चलू अपन जिनगीक परिदृश्यपर। जखन हाइ स्कूलमे रही तहियेसँ, माने 1960 इस्वीमे हाइ स्कूलमे नाओं लिखौने रही, परिवारक किछु-ने-किछु भार कन्हापर आबिये गेल। किसानी जीवनसँ जुड़ल परिवार छेलए-हे तँए देखा-देखी किछु अनुभव भइये गेल छल।

एम.ए.क क्लास समाप्त भऽ गेल छल। मुदा परीक्षा तीन बैच पाछू छल। माने अपनासँ पूर्वक दू बैचक परीक्षा नहि भेल छल। 1967 इस्वीक पछाइत, ओना, सौंसे देशेमे मुदा बिहारक राजनीतिमे जबरदस्त लहरि आबिये गेल छल। बिहारमे पहिल बेर गैर-कॉग्रेसी सरकार बनल। नव लोकक प्रवेश सत्तामे भेल। नव कार्यक्रमक संग सरकारक गठन 'महामाया बाबू'क नेतृत्वमे भेल। ओना, अठारहे मासक पछाइत सरकार टुटि गेल, दोहराकऽ चुनाव भेल। मुदा दोहरियो बेर गैर-कॉग्रेसीए सरकार कर्पूरी ठाकुरजीक नेतृत्वमे बनल। से अखन नहि, अखन एतबे जे अपन मन सोल्होअना मानि गेल छल जे जीविकाक लेल खेती आ समाजक सेवा करब। वामपंथी राजनीतिसँ प्रभावित भेने राजनीतक मैदान सेहो पतरीए बुझि पड़ल तँए अवसरो छेलए-हे। जहिना बटाइदारी, सूदखोरीक विषयमे आन्दोलन ठाढ़ भेल तहिना कृषिक पैदावारक सभ अंगकेँ पकैड़ समाजकेँ आन्दोलित सेहो कएल गेल।

अपनो उपजमे, माने खेतक उपजमे, बढ़ोत्तरी भेल आ

समाजोक भेलैन। नव-नव किस्मक काजो शुरू भेल आ पुरान रूपमे सेहो नवपन जगौल गेल। पूसा एक्कैस धानक बीआ आ सोनरा चौंसैठ गहुमक बीआ आएल। अद्भूत रूपमे उपज बढ़ल। पछाइत साकेत, सीता धानक बीआ सेहो आएल। गामक दर्जनो किसान कृषि कार्यक्रममे गामसँ ब्लौक, जिला होइत पूसा-ढोली महाविद्यालय तकक कार्यक्रममे भाग सेहो लिअ लगला। जइ गाममे कच्ची कट्ठा मन धान होइ छल माने तीस किलोक लगभग, तइ गाममे माने साढ़े छह हाथक लग्गीक गाममे 130 (एक साए तीस) किलो कट्ठा उपज भेल।

कृषि जीवनक हर विधापर समाजोक आ अपनो नजैर दौड़ेलौं। अपनो तेते अधिक काजसँ जुटि गेलौं जे ताश-शतरंज खेलैक समये ने भेटल। काजक रूप तेहेन बनि गेल जे 'रामदेव योग'क जरूरते ने पड़ल।

मुकेश दत्त- *लेखक आ पाठकक मनोदशाक सामंजस्यकेँ एकटा साहित्यकार केर रूपमे कोना देखैत छी?*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, दुनूक माने लेखकोक आ पाठकोक, पहिने मनक स्तरकेँ देखि लिअ पड़त। शरीरक जे आन-आन इन्द्री- आँखि, कान, नाक इत्यादि अछि तेना मन नहि अछि, ओ मनन क्रियाक रूप जकाँ अछि, से अखन नहि अखन एतबे जे केतौ लेखक आ पाठकक एक स्तर रहने रचना उपयोगी बनैए आ दब-उनार रहने माने केतौ रचनाकार उन्नैस आ पाठक बीस

रहलासँ रचना अधखिज्जूक रूप बनैए आ केतौ रचनाकार बीस आ पाठक उन्नैस रहने काँचो-कोचिल खट-मधुर भइये जाइए। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे अपन रचनाक जे सिलसिलेवार चलल ओकरा अपन शक्तिक अनुकूल समाजसँ जोड़ि चलैक परियास केलौं, तइमे केते अनुकूल छी आ केते प्रतिकूल छी, ई तँ अपन-अपन नजैरिक विचार छी।

अपन जे शुरूक रचना अछि आ अखुनका जे रचना अछि तइमे अन्तर आबिये गेल अछि। सिलसिलेवार पढ़निहारकेँ जँ नीको लगतैन तँ ओहन पढ़निहारकेँ खटमधुर आ खटाइन लगबे करतैन जे पहिने पछातिक रचना आ पछाइत पहिलुका रचना देखता। तहिना जँ कियो बीचक रचना पहिने पढ़ि लैथ आ पछाइत अखुनका पढ़ैथ आ तेकर पछाइत पहिलुका पढ़ैत, तँ हुनका आरो तीत-कसाइन सेहो लगबे करतैन। से अखन नहि, अखन एतबे जे समाजक बहुसंख्य लोक जे छैथ ओइ सामाजिक ढाँचाकेँ पकैड़ अपन रचना करै छी, तँए एकधाराक अन्तर्गत रहनौं समाजक जे पूर्वसँ अबैत धारा अछि तइमे जे दूरी बनल अछि, से समरस केना बनत, ई प्रश्न तँ समाजमे बनले अछि। जँ गौर करबै तँ बुझि पड़त जे रत्ती-बत्ती, फत्ती भेल समाजक मति अछि। से अखन नहि, अखन एतबे जे वर्त्तमानक परिवेशकेँ अँकैत समाजक दिशानुमुख रचना होइ तँ बेसी उपयोगी हेबे करत। ओना, जखन पाइनिक बीच, माने पोखैर-नदीमे सभ माछ अपन-अपन रहैक स्तरो आ जीबैक गरो लगा जीविये लइए

तखन तँ मनुक्ख मनुक्ख छीहे।

मुकेश दत्त- *एकटा नाटककारक रूपमे अहाँ पाठक आ दर्शकसँ की अपेक्षा रखैत छी?*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, नाटकक चर्च भऽ गेल अछि। ओना, पैछला पीढ़ीक जे दर्शनीय दृश्य छेलैन, आ अखुनका जे भऽ गेल अछि ओ बहुत अधिक दूरी बना लेलक अछि। जेकर फलाफल समाजपर पड़िये रहल अछि जे गामक लोककेँ गाममे अपन बाप-दादाक परिचय अपन गाममे दिअ पड़ि रहलैन अछि।

मुकेश दत्त- *वर्त्तमान समयमे मैथिली साहित्यक दशा-दिशापर किछ प्रकाश दियौ।*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, जँ एकधारामे साहित्य-रचना चलैत रहैत तँ दशा-दिशा भँजियाएब असान होइत मुदा से तँ अछि नहि। अनेको धारामे रचना प्रवाहित अछि। अपन जे वैदिक साहित्य अछि ओ सभक जीवनक कल्याणक विचार करैत भेल अछि तँए अपना सभक जड़ि निस्सन अछिए। कहलो गेल अछि- 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया..।' मुदा जेना-जेना समय आगू बढ़ैत गेल आ मनुक्खक विकास होइत गेल तेना-तेना कुटिनीतता विचारमे अबैत गेल। जे सोभाविको तँ अछिए जे हजारो बर्खक अपन समाजकेँ गुलामीक जिनगी बितबए पड़ल छैन। मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे देश स्वतंत्र भेला पछातिक

रचनाधर्मिता आ पूर्वक जे रचनाधर्मिता अछि ओ कोन दिशामे बहि रहल अछि। ई बात सभक मुहसँ निकलैए जे संयुक्त परिवारक अन्त भऽ रहल अछि। अपनो परिवारमे लोकर्कें चिन्ह-अनचिन्ह भेल जा रहल अछि। एहना परिस्थितिमे की कहल जाए। केतए-सँ कहल जाए।

अनेको रंगक पथ-प्रदर्शकक विचार समाजक विचारमंचपर अछिए। अपन वेद की कहैए, अपन गीता की कहैए, वुद्धदेव की कहलैन, महावीर की कहलैन, विवेकानन्द की कहलैन, रामक माध्यमसँ रामायणिक रचैता तुलसी बाबा की कहै छैथ, तँ सूरबाबा कृष्णक माध्यमसँ की कहै छैथ। तैसंग कबीर बाबा अपन निर्गुण रामक माध्यमसँ की कहै छैथ। सभ विचार तँ समाजमे अछिए।

शास्त्रक बीच शुरूहेसँ विचारक विवाद रहले अछि। कियो अद्वैत मानै छैथ तँ कियो द्वैत। द्वैतोमे द्वैताद्वैत, विशिष्ठा द्वैत इत्यादिक बीचक विवाद अछिए। तहिना वुद्धदेव आ महावीरक बीच छैन, कियो 'बहुजन हिताय' तँ कियो 'सभ-जन हिताय'क विचार दइ छैथ। वुद्धदेवोक विचारधाराक बीच हीनयान-महायान बनि ठाढ़ अछिए।

सम्पादकजी, हम अपना जनैत मिथिलाक रूप कहलौं अछि। ओना, जीवनक अनेको अंग ऐसँ अलग अछि, मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे निष्पक्ष रचना हुअए कि कल्याणकारी रचना हुअए, बस यएह ने भेल समाजक दशा आ दिशा देखबैक दर्पण।

मुकेश दत्त- *साहित्य जगतमे चलि आबि रहल कतेको परिपाटी समाजक नवांकुर आ उत्कृष्ट रचनाकारकेँ दबा देलक। अहाँ एकरा कोना देखैत छी?*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, संकीर्ण मानसिकताक खेल छी, तँए अपनाकेँ अलग बुझै छी। अपन स्वतंत्र जीवन अछि स्वतंत्र रूपमे निष्पक्ष विचार करैक अपन धारणा अछि।

अपन पहिल रचना 'गामक जिनगी' छी, जे कथा संग्रह छी। आठ इस्वीमे 'सगर राति दीप जरय'क कार्यक्रम रहुआ (मधुबनी जिला) मे पारसनाथ मन्दिरपर भेल। जइमे साहित्यकारक नीक जुटान भेल छेलैन। ओही कार्यक्रममे 'भैंटक लाबा' कथा पाठ केलौं। घन्टा भरिक समय 'भैंट' शब्देक समीक्षामे लागल। खाएर जे भेल, 2009 इस्वीमे 'गामक जिनगी' कथा संग्रह प्रकाशित भेल। ओही संग्रहक पहिल कथा 'भैंटक लाबा' छी जे प्रकाशित होइसँ पहिनहि साहित्यिक मंचपर आबि गेल। रमणजी हलैसकऽ कथा लेलैन आ 'घर-बाहर' पत्रिकामे प्रकाशित केलाह।

चौबीस भाषाक टर्ममे मैथिलीकेँ 'टैगोर लिटरेचर एवार्ड'क समय 2011 इस्वीमे भेटल। ओही 'गामक जिनगी संग्रह'पर टैगोर लिटरेचर एवार्ड भेटल। साहित्य अकादेमीसँ नाम अनुशंसित भेल छल। कोरिया सरकारक संगक पुरस्कार छी। अपन जीवनक घटित घटनासँ केना आँखि मुड़न कहब जे साहित्य अकादेमीमे दोष अछि। तहिना अनेको साहित्यिक मंच

जे 'यात्री सम्मान', 'बाबू सहाएब चौधरी सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'वैदेह सम्मान'क संग अनेको आरो सम्मान देलैन। जेना 'कौशिकी सम्मान', पूर्वांचलक आसामक सम्मान इत्यादि अछिए।

सम्पादकजी, नावांकुर रचनाकारकेँ कहबैन जे अपना सभक समाजमे अदौसँ विचार आबि रहल अछि जे लोभ आदमीकेँ सुगतिसँ हटा दुर्गतिक बाट धड़ा दइए, तँए लोभसँ परहेज करैत अपन स्वतंत्र जीवनक गठन करू, जइसँ निरविचारी बनि समाजोक सेवा आ साहित्योक सेवा करब। ओना, भुमण्डलीकरणक जे हवा बहि रहल अछि तइमे भारी धक्का समाजक जीवनक हर पलहूपर लगबे कएल अछि, मुदा मनुक्खो तँ मनुक्ख छी, मनक राजा छीहे, तँए समयक संग ताल-मेल बैसाइये लेता।

मुकेश दत्त- *मैथिली साहित्यक एहि दशा लेल मैथिल (साहित्यकार आ समाज दुनू) कतेक आ कोना जिम्मेदार छथि?*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, साहित्यकार आ समाज, दुनूक प्रश्न अछि। तँए दुनूकेँ फुटा-फुटा देखए पड़त। नमहर उत्तर नहि देब। कममे यएह कहब जे जे साहित्यकार सत्तासँ जुड़ल रहला अछि हुनकर विचारधाराक संग बेवहार एहेन रहलैन जे नव आ पछुआएल परिवारक साहित्यकारक संग जेहेन बेवहार हेबा चाही से नहि केलैन जइसँ साहित्यकारक बीच नमहर दूरी बनियेँ गेल अछि। रहल समाज। समाजो तँ समाज छीहे। अनेको

रंगक रूप ओकर छइहे। मुदा कुल मिलाकऽ देखल जाय तँ समाज गाए जकाँ निमूधन छीहे, तँए जेहेन रूपमे ओकर सेवा करब तेहेन दूध हेबे करत।

मुकेश दत्त- *रचनाकारक प्रथम प्रयास होइत अछि पाठकक हृदय धरि पहुँचब। अहाँ अपनाकेँ अपन रचनाक माध्यमेँ एहि प्रयोगमे कतय धरि सफल मानैत छी?*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, अपन कएलकेँ मानैक प्रश्ने नहि अछि। रहल करैक प्रक्रिया? अखन तकक अपन जीवन गामक धरतीसँ जुड़ल रहल अछि, तँए अविसबासक प्रश्ने नहि अछि जे गामोमे हमरा सन लोक जीब सकै छैथ। गामे समाज निर्माण करैए आ समाजे गामक निर्माण सेहो करिते अछि। एक गाममे अनेको रंगक गाम सेहो अछिए। मुदा से सभ अखन नहि, अखन एतबे जे समाजक जइ जीवनक विषय-वस्तु निरमबै छी, तइ जीवनक वास्तविक धरती पकड़ैक परियास करै छी, देखल, भोगल समस्या सभ अछिए तँए समस्याक छुबि रचना करै छी, ओ पाठकक हृदय तक केते प्रवेश करै छैन, ई तँ पाठकक विचार भेलैन, तँए ऐसँ बेसी आरो की कहि सकै छी।

मुकेश दत्त- *अपने अपन वृत्तिसँ फराक साहित्यिक कर्म करैत, अपन रचनाधर्मिताक पालन करैत मैथिली साहित्यकेँ अपन कतेको रचनासँ सम्पूष्ट कएल। आगाँ भविष्यक की योजना अछि?*

ज.प्र.मं.- अपन वृत्तिसँ फराक साहित्यिक कर्म करैत..; सम्पादकजी, साहित्यिक कर्म आ जीवनक कर्म, दुनूमे

अन्तर करैत प्रश्न केलौं अछि। जीवन वृत्तिक अन्तर्गते ने अपन जीवनक भरण-पोषण आ सामाजिक जीवनक भरण-पोषण हएत। एक भेल आर्थिक वृत्ति आ दोसर भेल बौद्धिक। शरीर आ मनमे अन्तर अछिए। अपन जीवनक नियमित वृत्ति रहल अछि, माने कर्म रहल अछि। जे जहिना निश्चित समय अर्थोपार्जण-ले तहिना निश्चित समय सृजनोमे लगैबिते छी, जइसँ दुनू काज (वृत्ति) अपना गतिये चलिये रहल अछि। ऐसँ बेसी कइये की सकै छी।

भविष्यक योजनासँ सम्बन्धित जे प्रश्न अछि, तेकरा हम तीनू काल, माने भूतकाल, वर्त्तमान काल आ भविष्यकालकेँ तीन कालखण्डमे देखै छी, बेसी की कहब, वर्त्तमानमे जीबै छी तँए वर्त्तमानक जे क्रिया अछि ओ जेहेन भविष्य निरमाबए। अपन कोनो कल्पना कहियौ कि सपना, भविष्यक लेल मनमे नहि अछि।

मुकेश दत्त- *एहन कोनो साहित्यिक विधा जाहिमे अहाँकेँ काम करब बाँचल होइ आ निकट भविष्यमे ओ रचना आबयबला होइ?*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, पैछला प्रश्नक उत्तरमे कहिये देने छी जे वर्त्तमानमे जीबै छी, अखन कथा-उपन्यासक काज चलि रहल अछि, तँए अपन कोनो विधा मनमे नहि अछि। रहल साहित्यिक विधा, ओ अनन्त अछि, जहिना तुलसी बाबा कहलैन अछि जे 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' तहिना साहित्योक अछिए। तँए अथाह

समुद्रमे अपना थाहियै केते सकै छी। तखन तँ एतबे ने जे मन शरीरक आ शरीर मनक संग जगल चलैत रहए।

मुकेश दत्त- *अन्तमे, नवयुवक रचनाकार लोकनिक हेतु किछ सन्देश देबय चाहब?*

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, नवयुवककेँ हम की सन्देश देबैन। ओ तँ खुद सन्देशकर्त्ता छैथ। ओ अपन शक्तिकेँ जगा अपनासँ परिचित करथु। जइसँ जुआनी पानिमे नहि भँसिया जाइन। विशेष की कहब। ❑

परिसम्वाद:

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक संग

-सौम्या झा

ज.प्र.मं.- अ पनेक जिज्ञासा लेल धन्यवाद सौम्याजी, अपन परिचयसँ परिचित कराबी।

सौम्या झा- अहाँ अपन गाम जन्मस्थान, शिक्षा दीक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमिक बारेमे विस्तारसँ पाठकगणकेँ कही.

ज.प्र.मं.- अपन गामे अप्पन जन्मस्थान छी, ओ छी बेरमा गाम, जे छोट-छीन रहितो 1952 इस्वीक पंचायत छी। 1934 इस्वीक भुमकममे भीतघर स्कूल खसि पड़ल, जइ स्थानकेँ अशुभ मानि स्कूल दोसर ठाम बनल, तइ स्कूलसँ शिक्षा प्रारम्भ भेल, जे लोअर प्राइमरी स्कूल छल, अखन 8वाँ तकक अछि। पछाइत कछुबी मिड्लसँ निकैल केजरीवाल हाइ स्कूल, झंझारपुरसँ हायर सेकेण्डरीसँ निकैल जनता कॉलेजमे नाओं लिखेलौं, पछाइत ऑनर्स आ एम.ए. सी.एम. कॉलेज, दरभंगासँ केलौं।

परिवार बेरमा गाममे बाहरसँ आबि बसल अछि, जखन सुगौली समझौता नइ भेल छल तहियो अपन परिवार अपने देशक अंग छल आ अखन तँ सहजे

अछिए। जनकपुरसँ तीन कोस पूब पूर्वजक घर छेलैन, ओइठामसँ पूर्वज आएल छैथ। एकर रोचक कथा अछि। जँ आगू अवसरि भेटत तखन आगू कहब।

दू भाँइक बीच छोट भाए छी। पैघा भाय तीन बरख जेठ आ अपने तीन बरख छोट छी। जखन तीन बर्खक छेलौं तखन पिताजी मरि गेला। माइक उम्र करीब पचीस-तीस बर्खक छेलैन। भैयारीमे पिताजी असगरे तँए माइयक देख-रेखमे 1993 धरि रहलौं।

सौम्या झा- अहाँकेँ साहित्यिक यात्रा कहिया शुरू भेल, पूरा साहित्यिक यात्राक बारे मे विस्तारसँ सुनाऊं।

ज.प्र.मं.- दू हजार इस्वीक पछाइत अप्पन साहित्यिक यात्रा शुरू भेल जखन पचास बर्खसँ ऊपरक भऽ गेलौं। जहिना राजा दशरथ कान परक पाकल केश देखि रामकेँ राजगद्दी देबाक विचार केलैन तहिना अप्पन देहकेँ ढील होइत देख साहित्यिक यात्रा प्रारम्भ केलौं। प्रति तीन मासपर ‘सगर राति दीप जरय’ साहित्यिक कार्यक्रम होइए, तइमे अप्पन कमसँ कम दू ने ते तीन पोथीक लोकार्पण होइए। साएसँ ऊपर अप्पन प्रकाशित रचना (पोथी) अछि, जे कथा उपन्यास, कविता, नाटक, एकांकी इत्यादि विधामे अछि।

सौम्या झा- साहित्यिक यात्राक दौड़ान सभसँ बड़का चुनौती की छल?

ज.प्र.मं.- साहित्यिक यात्रामे तँ यएह चुनौती अछि जे फणीश्वर

नाथ 'रेणु' सन साहित्यकारकेँ पैठ नइ भेलैन। माने 1960 इस्वीसँ पूर्व 'रेणुजी' मैथिलीमे सेहो लिखै छला। दुर्भाग्य हमरा सबहक अछिए जे मैथिली जगतमे एकटा पद्मपुरस्कारसँ सम्मानित साहित्यकारकेँ गमेलौं। चुनौती की अछि, से सभक सोझेमे अछि। सम्बन्ध बनल रहत तँ आगू आरो गप-सप्प हेतइ।

सौम्या झा- पंगु लेल अहाँकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेल, पहिले बधाई, 'पंगु'क विचार कोना आयल। किनका विषयमे छै.

ज.प्र.मं.- 'पंगु' उपन्यासक विचार कोनो बाहरी आयातीत नइ अछि। अप्पन बीस उपन्यासमे 'पंगु' सेहो एकटा उपन्यास छी। ओना, ऐतिहासिक दृष्टिसँ देखला पछाइत बुझि पड़ैए जे यात्राजीक, वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' जे हिन्दी जगतमे 'नागार्जुन'सँ सेहो जानल जाइ छैथ, हुनक बलचनमाक ऐगला कड़ी बुझि पड़त।

सौम्या झा- आगू हम सब कोन पोथीक बाट ताकी? आगूक योजना?

ज.प्र.मं.- 31 दिसम्बर 22क शनि दिन जे कथा गोष्ठी होबएबला अछि, माने सगर राति दीप जरयक ऐगला कार्यक्रम, रहुआ संग्राममे डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल'जीक संयोजकत्वमे, तहूठाम अप्पन तीनटा पोथी लोकार्पण हएत। दूटा कथा संग्रह आ एकटा उपन्यास। 'को बर छोट कहत अपराधू' जहिना कथा यात्रा 'टैगोर

लिटरेचर एवार्ड' देलक तहिना उपन्यास 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' देलक। तँए अप्पन कोनो लक्ष्य नहि अछि। ओ अनवरतता छी, जखन जेहेन तखन तेहेन।

सौम्या झा- नब पीढ़ी आई कालि मैथिलीमे खूब लिख रहल छथिन, हुनका लेल सुझाव आर किछु टिप्स।

ज.प्र.मं.- अतीतकेँ बिसरू नहि मुदा वर्तमानक जीवन बनाउ।

सौम्या झा- मैथिलीमे साहित्यिक रचना केनिहार सबके सन्देश अहाँ दिससँ, कोन विषय विशेषपर अखनो रचना आवश्यक?

ज.प्र.मं.- साहित्यकारकेँ हम की कहबैन, ई तँ ओ अपने जनै छैथ जे सत्ताक संग साहित्यक की गति-विधि हेबा चाही। ❑

मैथिली साहित्य : वर्तमान परिदृश्य

परिसंवाद :

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक संग

- संजीव सिन्हा

संजीव सिन्हा- भारतीय साहित्य मे मैथिली साहित्यक कतेक प्रतिष्ठा अछि?

ज.प्र.मं.- जहिना आन-आन साहित्यक प्रतिष्ठा अछि तहिना मैथिली साहित्यक प्रतिष्ठा सेहो अछिए। कोनो साहित्यक समृद्धिता आ प्रतिष्ठा ओइ साहित्यक समाजपर निर्भर करैए। किएक तँ साहित्य समाजक दर्पण छी। जइ समाजक जेहेन जीवन रहत तेहने ओइ साहित्यक प्रतिष्ठा सेहो रहबे करत। कोनो समाजक जीवन ओइठामक भौगोलिक बनावटि, ओइठामक परिवेश आदिपर सेहो निर्भर करिते अछि। ऐ दृष्टिसँ मैथिली साहित्यो आ समाजो, जहिना प्राचीन अछि तहिना सम्पन्न सेहो अछि। मिथिलाक समाज सभ दिनसँ नैतिक महत्वकेँ बुझैत आबि रहला अछि, तहिना अपन नीतिवान जीवन सेहो बनौनहि छैथ। ओना, पूर्ण रूपेँ माने सोल्होअना मैथिल समाज एक्केरंग ने रहला अछि आ ने अखनो छैथ।

आजादीसँ पूर्वो माने 1947 इस्वीसँ पहिनहु देश अनेको

राज्यमे विभाजित छल आ अखनो अछिए। स्वतंत्रतासँ पूर्व आरो बेसी छल। छोट-छोट राजा-रजबार हजारोक संख्यामे छल। जिनका सभक अपन-अपन शासन-सत्तासँ कला-संस्कृति धरि अपन-अपन सेहो छेलैन आ किछु दोसरसँ मिलली-जुलल सेहो छेलैन्हे। जइ अनुकूल साहित्य सेहो छेलैन्हे।

आजुक जे साहित्यक अछि, तइमे आन-आन साहित्यक अपेक्षा मैथिली साहित्यकेँ सेहो प्रतिष्ठा अछिए। एम.ए., पी-एच.डी., सिविल सेवा आदि मान्यता प्राप्त बाइसो भाषामे सेहो मैथिलीक प्रतिष्ठा अछिए। हँ, एते कमी अवश्य अछि जे 'पद्म पुरस्कार', आन भाषा-साहित्य जकाँ मैथिलीमे नियमित नहि अछि।

निष्कर्ष रूपेँ यएह कहि सकै छी जे जहिना आन-आन भाषा-साहित्यक प्रतिष्ठा अछि तहिना मैथिली साहित्यक सेहो अछि। तइमे मिसियो भरि हमरा सभकेँ सन्देह नहि करक चाही।

संजीव सिन्हा- एखन मैथिली साहित्यक केहन परिदृश्य अछि?

ज.प्र.मं.- परिदृश्य तँ सभक सोझेमे अछि। अपन अपन रोहु माछ हुअ कि मालदह आम, अखनो ओहिना अछि जहिना हजार बरख पूर्व, बाबा-दादाक अमलदारीमे छल। की मिथिला वैज्ञानिक पैदा नहि केलक अछि जे दुनियाँक बाजारमे अपन सभसँ नीक फलो आ सभसँ नीक माछोकेँ बना रखैत। जँ से रखैत तँ दुनियाँक बाजारमे अहूँक रहैत। की अहाँक वस्तुमे शोधन-

परिवर्द्धन भेल। खाएर जे किछु भेल, बीतलपर एक मुट्ठी छाउर दऽ झाँपि दियौ। अखनुक मूल खगता की अछि, तैपर विचार करू। अपना सभ अखनो भोजनेकेँ मूल खगता मानै छिऐ, जैठामक जन-गण सरकारीकरण भऽ गेला। माने भोजनक रूपमे समाजीकरण भऽ गेल। जैठाम भोजनक भार सरकारी खजानामे चलि गेल, तैठाम बेकतीगत रूपमे तँ भोजनक खगता (आवश्यकता) मेटाइये गेल। आजुक परिवेशमे समाजक बीच दहेज आ पढ़ाइ-लिखाइक जे रूप अछि आ बनियोँ रहल अछि, ओइसँ समाजक बीच टुटान सोभाविक अछि, मुदा ओ तँ आर्थिक सीमामे अछि। वैचारिको सीमामे जँ सभकियो मिलि-जुलि प्रेमसँ रहए चाहब, तहूमे अनेको छेद एहेन अछि जेकरा जेते भरब, ओ ओते गहींर भेल जाएत। समाजमे, जाति-जातिक भेद अखनो अछिए। एकरा भीतरमे माने जाइतिक भीतरमे कुल-मूलक आधार अछि, जे अनेको छेदमे समूहकेँ विभाजित केने अछि, जेकर फलाफल एक-दोसरकेँ अछुतो-सँ-अछुत बुझै छैथ। अछुत माने भेल अपनासँ नीच बुझब। जखने नीच-ऊँचक विचार रहत तखने एक-दोसरमे वैमनस्य सोभाविक अछि। तैठाम अपन की दायित्व बनैए, से तँ अपने ने विचारब।

जहाँ तक साहित्यिक समृद्धताक बात अछि, माने जँ अपन समृद्धता दिस देखब तँ आन-आन भाषामे जेना साहित्य सृजन भेल अछि, तइमे अपन मैथिली सेहो पछुआएल नहि अछि। भाषाक दृष्टिसँ पुरान सेहो

अछिए। ओना अठ-अठ साए कथा आ बीस-बीस उपन्यास लिखनिहार रचनाकार अहुँक मैथिलीमे छैथ, तँए अपनामे करवनो हीन विचार नइ लाउ, जे हमसभ कोनो भाषा-साहित्यमे पाछू छी। जँ रचनाकारक दृष्टिये मैथिलीकेँ देखब तँ सबा साए बर्खक बीच जेतेक भेला ओ सोझामे झलैकिये जाएत।

संजीव सिन्हा- मैथिली साहित्य मे कोन-कोन वाद, विमर्श, आंदोलन चलल अछि? संप्रति कोन साहित्यिक प्रवृत्तिक प्रधानता अछि?

ज.प्र.मं.- आन्दोलनक रूपेँ मैथिली भाषा-साहित्यकेँ बनारस, बंगाल आ बिहारकेँ लेल जा सकैए। संक्षेपमे बनारसक यएह कहि सकै छी जे हस्तलिखित पत्रिका आ काञ्चीनाथ झा 'किरण'जीक कठिन श्रमसँ बनारस विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेश भेल। बंगालक विषयमे जेते कहब तेते कम हएत। बंगालक धरतीपर अपन मैथिलीक एक-सँ-एक अनेको योद्धा-सपूत भेला अछि। जँ नामक चर्च करए लागब तँ बहुत नमहर सूची भऽ जाएत। साहित्यिक सेवा कियो कम केलैन, कियो बेसी केलैन, मुदा सामूहिक रूपेँ जँ देखब तँ कम कि बेसी, केलैन तँ सभ। अखन एतबे करब जे बंगालक धरतीपर जहिना साहित्यिक कार्यक्रम समाजसँ, सामाजिक गतिविधिसँ सामाजिकताक संग सटिकऽ सघन रूपमे चलैत रहल अछि। जे अखनो अछि। ऐठाम एतबे कहब जे कलकत्ता विश्वविद्यालय मैथिली भाषाकेँ सभसँ पहिने मान्यता देलक।

बिहारमे माने बिहारक बीच मिथिलामे सेहो सघन रूपमे भलेँ नहि, मुदा नइ चलैए, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, सेहो चलिते अछि।

जहाँतक साहित्यिक प्रवृत्तिक प्रश्न अछि, ओ अखनो अतीतोन्मुखी अछिए। जरूरत अछि सम-सामयिक बनबाक, तइमे कमी अछि। ओ कमी के दूर करत? हमहीं-अहाँ ने करबै। तहूमे आब अपना सभ एकैसमी सदीक वैज्ञानिक युगमे पहुँच गेल छी। आब जँ बाँसक फट्ठापर बाउल दऽ आगि निकालब, ओते दुइर करैक समय अछि। जखन कि आब आँगुरक इशारापर आगि उपलब्ध अछि। जनिते छी जे एक जीवन, माने कार्यरत अवस्था साठि बर्खक समय, जेते काज करत ओते काज आजुक मशीन दिनक कोन बात जे किछु घन्टामे करैए।

संजीव सिन्हा- मैथिली साहित्य समक्ष की समस्या-चुनौती अछि?

ज.प्र.मं.- सम्पादकजी, समस्यो आ चुनौतियोकेँ पहिने विभाजित कऽ लिअ। आ तैसंग पाछूसँ अबैत समस्यो आ चुनौतियोकेँ दू रूपमे विभाजित कऽ लिअ। पहिल, पाछूसँ अबैत समस्या आ चुनौती। दोसर, समसामयिक समस्या आ चुनौती। समस्या केकरा कहबै आ चुनौती केकरा कहबै, से तँ सभ जनिते छी तँए चर्च करैक जरूरत नहि।

जहिना भाषाक संग समस्या बनल रहल अछि तहिना साहित्योक संग रहल अछि। भाषाक रूपमे अनेको भाषाक बीच मैथिली सेहो अछि। भाषाक वाहन लिपि

सेहो होइए। अपना ऐठाम अनेको तरहक लिपि आबि रहल अछि। ऐठाम प्रश्न उठैत अछि जे जैठामक बच्चा स्कूल नहि पहुँच पेब रहल अछि तैठाम लिपिक झमेल ओकरा बुते फरिछौल हएत। खाएर जे से।

तहिना साहित्योक संग अछि। ओ अछि जे साहित्य समाजक दर्पणो होइए आ दर्शनो तँ होइते अछि। समाजक दिशा-बोध साहित्य करबैए। आब प्रश्न अछि जे गामक बीच समाज के भेला? अखन तकक जे समाज रहल अछि आ ओकर जे साहित्य रहल छै, ओ वैचारिक रूपमे भलेँ जेतेक हितैषी हुअए मुदा बेवहारिक रूपमे ओ समाजसँ हटल जरूर रहल अछि। बेसी कहब सेहो उचित नहि, मुदा नहियोँ कहब तँ उचित नहि हएत। खाएर जे से, यएह दिन-दुनियाँ अपन सभक अछि, तइमे सभ ने विचारब।

चुनौतीक सम्बन्धमे की कहब, ओ तँ सभक संग अबिते रहत। अखन जे अछि, से देखते छिऐ।

संजीव सिन्हा- मिथिलाक अन्य भाषा- अंगिका, बज्जिकाक लेखक सँ मैथिली लेखकक संवाद केहन अछि?

ज.प्र.मं.- बिहारक बीचमे अनेको भाषा-बोलीक चलैन आइये नहि, बहुत पहिनहिसँ चलि आबि रहल अछि, तही बीच साहित्यो चलि रहल अछि, समाजो चलि रहल अछि आ संवादो तँ चलिये रहल अछि। संक्षेपमे एतबे कहब जे अपन मैथिली नेपालक द्वितीय भाषाक रूपमे मान्यता पौने अछि, अपन बिहारमे एकोटा विश्वविद्यालय नहि अछि, जइमे मैथिलीक मान्यता नइ

हुअए आकि मैथिलीक पढ़ाइ नइ होइत हुअए। देखते छी जे मिथिला विश्वविद्यालयसँ लऽ कऽ राँची विश्वविद्यालय आ भागलपुर विश्वविद्यालयसँ पटना विश्वविद्यालय धरि मैथिलीक पढ़ाइयो होइए आ मान्यता सेहो अछिए। अपना मानकेँ केते सम्मान करै छिऐ, से तँ अपने सभक हिस्साक ने काज भेल। ऐसँ आगू अखन नहि, अखन एतबे जे सांस्कृतिक मंचपर शारदाजी, माने श्रीमती शारदा सिन्हाजी जहिना एक्के मुँहक स्वरे बिहारक सभ भाषामे समन्वित रूपेँ अपन कला प्रदर्शित करै छैथ, तहिना पलामूक पाथरक ट्रकक ड्राइवर आ कारोबार करैबला बेपारी लोकैन अपन-अपन बोली भाषामे कारोबार नइ करै छैथ सेहो केना नइ कहल जाएत। अखन बस एतबे।

संजीव सिन्हा- मैथिली साहित्य मे नव लेखक लेल कोन तरहक अवसर आ संभावना अछि?

ज.प्र.मं.- नव लेखक लेल बुझू कि नव लेखन लेल बुझू, अवसर केतौसँ अबै नइ छै, रहिते छै। ओ निर्भर करैए अपन दृष्टिमे। बेकती समाजेक इकाइ नहि, दुनियाँक इकाइ सेहो छी, ओ केना एकाइ-दहाइ होइत लाख-करोड़सँ शंख हएत ई तँ अपने सभक ने जिम्मा भेल। जे अवसर सेहो भेबे कएल।

साहित्य समाजसँ जुड़ल चीज छी। जहिना समाज अछि तहिना साहित्य अछि। समाज रहत, साहित्य रहबे करत। तँए सम्भावना अछिए आ रहबे करत। बस, अखन एतबे। ❑

Notes